वर्ष : 34 | अंक : 311 | मुंबई, शनिवार, 17 जनवरी 2026 | RNI: MAHHIN/49994/91 | मूल्य : 3 रुपए | epaper.dobajedopahar.com | संपादक : अरुण लाल | संरक्षक : एन. के. पुरोहित

DBD
दो बजे दोपहर

महायुति **1844**
एमवीए **206**
अन्य **819**

## 'महायुति' की प्रचंड जीत: 29 में 23 निगमों में बीजेपी-नेतृत्व वाले गठबंधन की बढ़त

## मीरा-भाईंदर में मेहता का प्रताप

मीरा-भाईंदर महानगरपालिका चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने अप्रत्याशित और ऐतिहासिक जीत दर्ज करते हुए पूर्ण बहुमत हासिल कर लिया है। गुरुवार को हुए मतदान में 48.64 प्रतिशत मतदान दर्ज किया गया। 95 सदस्यीय सदन में भाजपा ने 78 सीटों पर कब्जा जमाकर यह स्पष्ट कर दिया कि शहर की जनता ने एकतरफा जनादेश दिया है। कांग्रेस 13 सीटों पर सिमट गई, शिवसेना को मात्र 3 सीटें मिलीं, जबकि 1 सीट निर्दलीय के खाते में गई।

## महायुति ने जलगांव की 75 सीटों में से 69 सीटें जीतीं

जलगांव नगर निगम चुनाव 2026 में भाजपा और शिवसेना (शिंदे गुट) के नेतृत्व वाली महायुति ने 75 में से 69 सीटों पर कब्जा कर प्रचंड बहुमत हासिल किया है, जिसमें भाजपा को सर्वाधिक 46 और शिंदे समूह को 22 सीटें मिली हैं। चुनावी नतीजों के अनुसार, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (अजीत पवार गुट) को इस बार चार सीटों का नुकसान उठाना पड़ा और वह केवल 1 सीट पर सिमट गई, जबकि विपक्ष में शिवसेना (उद्धव ठाकरे समूह) ने 5 सीटें जीतीं और एक निर्दलीय उम्मीदवार भी निर्वाचित हुआ है। हालांकि भाजपा और शिंदे गुट को भी एक-एक सीट का मामूली नुकसान हुआ है, लेकिन इस शानदार प्रदर्शन के साथ महायुति ने जलगांव नगर निगम की सत्ता पर अपनी पकड़ को और भी अधिक मजबूत कर लिया है।

## कोल्हापुर में महायुति ने बाजी मारी

कोल्हापुर महानगरपालिका का अंतिम रिजल्ट आ गया है। यहां महायुति ने बाजी मार ली है। महायुति को कुल 45 सीटें मिली हैं। बीजेपी को 26, शिवसेना (शिंदे) को 15, एनसीपी (अजित पवार)-4 सीटें मिली हैं। वहीं महाविकास अघाड़ी को कुल 35 सीटें मिली हैं। कांग्रेस को 34, शिवसेना (यूबीटी) को1 एक सीट पर जीत हासिल हुई है। वहीं जनसुराज्य शक्ति पार्टी एक सीट जीतने में कामयाब रही।

महाराष्ट्र की राजनीति में कुछ नेता चुनाव जीतते हैं, और कुछ नेता राजनीति की दिशा ही बदल देते हैं। देवेंद्र फडणवीस दूसरी श्रेणी में आते हैं। सत्ता में हों या विपक्ष में, उन्होंने बार-बार साबित किया है कि राजनीति केवल नंबरों का खेल नहीं, बल्कि सही समय पर सही चाल चलने की कला है। 2013 में प्रदेश अध्यक्ष बनने से लेकर 2026 के बीएमसी चुनावों तक, फडणवीस ने हर उस किले को भेदा जिसे अजेय माना जाता था। दशकों से शिवसेना के वर्चस्व वाली बीएमसी में बीजेपी को नंबर-वन पार्टी बनाना सिर्फ चुनावी जीत नहीं, बल्कि महाराष्ट्र की राजनीति में सत्ता संतुलन बदल देने वाला मोड़ है। 2017 की 82 सीटों से शुरू हुई यह कहानी 2026 में पूर्ण विजय में बदली और इसके केंद्र में वही नेता रहा, जिसने हारती बाज़ी को जीत में बदलना अपनी पहचान बना ली। याद कीजिये अप्रैल-मई 2024 का लोकसभा चुनाव। भाजपा सिर्फ 9 सीटों पर सिमट गई थी। फडणवीस ने इसकी नैतिक जिम्मेदारी ली, लेकिन वे रुके नहीं। उन्होंने RSS के साथ समन्वय बढ़ाया और सीट बंटवारे पर फोकस किया। केवल 6 महीने बाद विधानसभा चुनाव में भाजपा ने 149 सीटों पर चुनाव लड़कर 132 सीटों पर जीत हासिल की। फडणवीस के नेतृत्व में महायुति गठबंधन ने विपक्ष का सूपड़ा साफ कर दिया। बीजेपी नंबर 1 पर रही और उसके सहयोगी नंबर 2 और 3 पर रहे। दो बार मुख्यमंत्री का पद संभालने वाले और 5 साल का कार्यकाल पूरा करने वाले महाराष्ट्र के सीएम देवेन्द्र फडणवीस ने साबित कर दिया है कि संगठन कौशल और अडिग इच्छाशक्ति से राजनीति में कुछ भी नामुमकिन नहीं है।

## जानिए किस पार्टी को कितनी सीटें मिलीं

| | |
|---|---|
| **मुंबई MMR रीजन** | |
| मुंबई बीएमसी | महायुति: 116 ठाकरे गुट: 71 |
| ठाणे | महायुति: 62 ठाकरे गुट: 09 |
| नवी मुंबई | भाजपा: 73 शिंदे गुट: 29 |
| पनवेल | भाजपा: 60 ठाकरे गुट: 09 |
| केडीएमसी | महायुति: 92 ठाकरे गुट: 12 |
| वसई विरार | बविआ : 71, भाजपा : 44 |
| मीरा भाइंदर | भाजपा : 67, शिंदे गुट : 02, |
| भिवंडी | भाजपा 34, कांग्रेस 30 |
| उल्हासनगर | भाजपा: 36 शिंदे गुट: 34 |
| **नासिक रीजन** | |
| नासिक | भाजपा 76, शिंदे गुट 32 |
| अहिल्याबाई | बीजेपी+राष्ट्रवादी 52, शिंदे गुट 10 |
| धुले | भाजपा राष्ट्रवादी 08 |
| मालेगांव | इस्लाम पक्ष 35, शिंदे गुट 18 |
| जलगांव | भाजपा 69, ठाकरे गुट 05 |
| **पुणे रीजन** | |
| पुणे | भाजपा 90, राष्ट्रवादी 20 |
| पिंपरी चिंचवड़ | भाजपा 83, राष्ट्रवादी 37 |
| सांगली | भाजपा 39, कांग्रेस 21, |
| सोलापुर | भाजपा 86, शिंदे गुट 06, |
| कोल्हापुर | महायुति 44, कांग्रेस 35, |
| इचलकरंजी | महायुति 46, शिव साहू 17 |
| **मराठवाड़ा** | |
| छत्रपति संभाजी नगर | भाजपा 55, एमआईएम : 22 |
| लातूर | कांग्रेस 47, भाजपा 22, |
| जालना | भाजपा 27, शिंदे गुट 06 |
| परभणी | ठाकरे गुट 36, भाजपा 12 |
| नांदेड़ | भाजपा 45, कांग्रेस 06 |
| **विदर्भ** | |
| नागपुर | भाजपा 104, कांग्रेस 37 |
| अमरावती | भाजपा 19, शिंदे गुट 15 |
| अकोला | भाजपा 39, कांग्रेस 24 |
| चंद्रपुर | कांग्रेस 30, भाजपा 24 |



"'धन्यवाद महाराष्ट्र! राज्य के मेहनती लोगों ने NDA के जन-समर्थक सुशासन के एजेंडे को आशीर्वाद दिया है। अलग-अलग नगर निगम चुनावों के नतीजे बताते हैं कि महाराष्ट्र के लोगों के साथ NDA का रिश्ता और मजबूत हुआ है। हमारा ट्रैक रिकॉर्ड और विकास का विजन लोगों को पसंद आया है। पूरे महाराष्ट्र के लोगों का मैं आभारी हूं। यह वोट प्रगति को गति देने और राज्य की शानदार संस्कृति का जश्न मनाने के लिए है।

**- नरेंद्र मोदी**
**पीएम**



" मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि महाराष्ट्र में जीत दिखाता है कि यहां की जनता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर विश्वास करती है और यह उसी का प्रणाम है। बीएमसी में मेयर को लेकर देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि महायुति का ही मेयर बनेगा और कोई मराठी व्यक्ति बनेगा।

**- देवेंद्र फडणवीस**
**सीएम**

# अभूतपूर्व विजय

- **45 साल में पहली बार... मुंबई पर बीजेपी की बादशाहत**
- **पुणे, नागपुर, नासिक में भाजपा+ ने जीत हासिल की**
- **लातूर में कांग्रेस अपनी लाज बचाने में सफल रही**

महाराष्ट्र में बीएमसी समेत 29 महानगरपालिकाओं में अधिकांश में भाजपा और उनके सहयोगियों ने बड़ी बढ़त हासिल की है। मुंबई, पुणे, नागपुर, नासिक में भाजपा+ ने जीत हासिल की है। भाजपा ने मुंबई पर अपना कब्जा जमा लिया है और काफी लंबे अरसे बाद भाजपा पहली बार बीएमसी में सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है। वहीं लातूर में कांग्रेस अपनी लाज बचाने में सफल रही। कांग्रेस ने लातूर में 70 में से 43 सीटों पर जीत दर्ज की है। 15 जनवरी को 2869 वार्ड पर वोटिंग हुई थी। आज उनके नजीते घोषित किए जा रहे हैं।

## पवार परिवार के गढ़ में पावर ब्रेक

### पुणे-पिंपरी में एनसीपी की हार

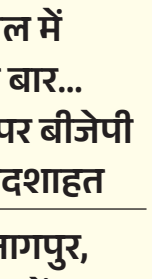

**पुणे।** महाराष्ट्र के पुणे और पिंपरी-चिंचवाड़ में भाजपा ने एनसीपी और एनसीपी (शरद पवार गुट) को करारी शिकस्त दी। अजित पवार ने अपने चाचा एनसीपी प्रमुख शरद पवार के गुट के साथ मिलकर गठबंधन बनाया था, लेकिन उनका 'फैमिली रीयूनियन' जुगाड़ काम नहीं आया और अपने गढ़ में ही फेल हो गए। पुणे में बीजेपी 29 वार्डों में जीत चुकी है. 43 अन्य वार्डों में भी पार्टी के उम्मीदवार बड़ी बढ़त बनाए हुए हैं. एनसीपी के दोनों गुटों को यहां करारी शिकस्त का सामना करना पड़ा है. पिंपरी-चिंचवड महानगरपालिका चुनाव के नतीजों में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने एकतरफा और शानदार जीत दर्ज करते हुए शहर की राजनीति में अपना वर्चस्व साबित कर दिया है। कुल 128 सीटों में से भाजपा के 84 उम्मीदवारों ने विजय हासिल की है, जिससे पार्टी को स्पष्ट बहुमत मिल गया है।



### अजित पवार ने स्वीकारी हार

अजित पवार ने चुनाव प्रचार के दौरान भाजपा पर हमला करते हुए कहा कि पिछले नौ वर्षों में दोनों नगर निगमों में विकास ठप और भ्रष्टाचार फैला। उन्होंने एनसीपी (SP) के साथ हाथ मिलाकर भाजपा की चुनौती का सामना करने की कोशिश की, लेकिन नतीजे उनके पक्ष में नहीं गए। पुणे शहर एनसीपी के कार्यकारी अध्यक्ष प्रदीप देशमुख ने कहा कि अजित पवार ने अभियान में पूरी मेहनत की और उन्होंने मुफ्त मेट्रो और बस सेवाओं, 500 वर्ग फीट तक के घरों पर प्रॉपर्टी टैक्स में छूट और बेहतर जल आपूर्ति जैसे वादे किए। हालांकि, हार स्वीकार करते हुए उन्होंने जनता के फैसले का सम्मान किया।

## किस दल को कौन सी सीटें...

**कुल सीटें 2869**

| दल | सीटें |
|---|---|
| भाजपा | 1372 |
| शिवसेना | 394 |
| कांग्रेस | 315 |
| शिवसेना यूबीटी | 149 |
| एनसीपी अजित | 158 |
| एआईएम आईएम | 97 |
| वीबीए | 15 |
| एनसीपी (एसपी) | 29 |
| मनसे | 14 |
| अन्य | 225 |

## ठाणे मनपा में शंभर पार

- शिंदे गुट के 70 से अधिक उम्मीदवार निर्वाचित हुए
- भाजपा की ताकत बढ़ी, 29 नगरसेवक हुए निर्वाचित

**ठाणे।** ठाणे नगर निगम चुनाव में शिवसेना (शिंदे गुट) और भाजपा गठबंधन का 'शंभर पार' (100 पार) का नारा पूरी तरह सच साबित हुआ है। 131 सीटों वाली ठाणे महानगरपालिका में महायुति ने कुल 100 सीटों पर विजय पताका फहराकर शहर की राजनीति में अपना निर्विवाद वर्चस्व सिद्ध किया है। ठाणे नगर निगम में सत्ता हासिल करने के लिए 67 सीटों की आवश्यकता थी, जिसे शिवसेना (शिंदे गुट) ने अकेले ही पार कर लिया है। पार्टी के 70 से अधिक उम्मीदवार निर्वाचित हुए हैं, जिससे यह साफ हो गया है कि गठबंधन की जीत के बावजूद निगम की मुख्य कमान और महापौर का पद शिंदे गुट के पास ही रहेगा। भाजपा के पार्षदों की संख्या पिछले चुनाव के 23 से बढ़कर 29 हो गई है।



# 'ठाकरे ब्रांड' का आखिरी किला भी ढहा

## मुंबई महानगरपालिका में बनेगा भाजपा का मेयर

डीबीडी संवाददाता । मुंबई

**मुंबई महानगरपालिका के चुनावी नतीजों ने महाराष्ट्र की राजनीति में एक नए अध्याय की शुरुआत कर दी है। पिछले तीन दशकों से मुंबई की सत्ता पर काबिज 'मातोश्री' (ठाकरे परिवार) का अटूट वर्चस्व आखिरकार समाप्त हो गया है। भाजपा-शिंदे गठबंधन (महायुति) ने इस 'आखिरी किले' को ध्वस्त करते हुए ऐतिहासिक जीत दर्ज की है। यह परिणाम न केवल सत्ता का हस्तांतरण है, बल्कि मुंबई की राजनीति में दशकों पुराने शक्ति संतुलन के पूरी तरह बदल जाने का संकेत भी है।**



### जीत के पीछे के कारक: विकास और रणनीतिक सेंधमारी

भाजपा की इस जीत के पीछे 'भ्रष्टाचार मुक्त बीएमसी' का नारा और 'ट्रिपल इंजन सरकार' द्वारा किए गए बड़े प्रोजेक्ट्स जैसे कोस्टल रोड और मुंबई मेट्रो का प्रमुख योगदान रहा। रणनीतिक रूप से, शिंदे गुट ने भाजपा की मदद से ठाकरे परिवार के गढ़ माने जाने वाले वर्ली, गिरगांव, दादर और परेल जैसे क्षेत्रों में जबरदस्त सेंधमारी की। गुजराती और उत्तर भारतीय मतदाताओं के साथ-साथ मध्यम वर्गीय मराठी वोटरों ने विकास के एजेंडे को चुनकर भाजपा-शिंदे गठबंधन पर भरोसा जताया।

### 'ठाकरे ब्रांड' पर ब्रेक

मुंबई महानगरपालिका (बीएमसी) के 2026 के चुनावी नतीजों ने ठाकरे परिवार के तीन दशकों के वर्चस्व को समाप्त कर उद्धव ठाकरे के राजनीतिक भविष्य पर संकट के बादल मँडरा दिए हैं, जहाँ अपनी सत्ता बचाने के लिए कांग्रेस से नाता तोड़कर चचेरे भाई राज ठाकरे से हाथ मिलाना भी उनके काम नहीं आया और भाजपा-शिंदे गठबंधन ने ऐतिहासिक जीत दर्ज की। शिवसेना के चुनावी सफर का विश्लेषण करें तो 1997 में 103 सीटों वाली पार्टी का ग्राफ अब अपने सबसे निचले स्तर पर पहुँच गया है, जहाँ 2002 में 97, 2007 में 84, 2012 में 75 और 2017 में 84 सीटों के मुकाबले 2026 में पार्टी केवल 57 सीटों (अनुमानित) पर सिमट गई है; यह गिरावट स्पष्ट करती है कि 'ठाकरे ब्रांड' और मराठी वोटों पर उनकी पकड़ कमजोर हुई है, जिससे आगामी विधानसभा चुनावों में उद्धव गुट के लिए अपनी राजनीतिक जमीन वापस पाना एक बड़ी चुनौती होगी।

### भाजपा-शिंदे गठबंधन को प्रचंड बहुमत

227 सीटों वाली बीएमसी में बहुमत के लिए 114 सीटों की आवश्यकता थी, जिसे भाजपा और एकनाथ शिंदे की शिवसेना ने मिलकर आसानी से पार कर लिया। महायुति ने कुल 127 सीटों पर विजय प्राप्त की है, जिसमें अकेले भाजपा ने 97 सीटें जीतकर अपनी बादशाहत साबित की, जबकि शिंदे गुट को 30 सीटें मिलीं। इसके विपरीत, उद्धव ठाकरे की शिवसेना (यूबीटी) और राज ठाकरे की मनसे मिलकर भी केवल 73 सीटों तक ही पहुँच पाए, जो उनकी राजनीतिक जमीन खिसकने का प्रमाण है। महाविकास आघाड़ी से अलग होकर वंचित बहुजन आघाड़ी के साथ चुनाव लड़ने वाली कांग्रेस की स्थिति और भी खराब रही। कांग्रेस और प्रकाश आंबेडकर की जोड़ी महज 15 सीटों पर सिमट गई।

## पनवेल नगर निगम में महायुति की प्रचंड जीत

**विपक्ष का सूपड़ा साफ, 18 सीटों पर सिमटी**

**पनवेल।** पनवेल नगर निगम के आम चुनाव 2026 के नतीजों ने एक बार फिर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेतृत्व वाली महायुति के वर्चस्व पर मुहर लगा दी है। शुक्रवार को घोषित परिणामों में महायुति ने स्पष्ट बहुमत हासिल करते हुए निगम की सत्ता पर अपना एकछत्र कब्जा बरकरार रखा। इस चुनाव में शेकाप, कांग्रेस, राकांपा (शरद पवार), शिवसेना (ठाकरे), समाजवादी पार्टी और मनसे जैसे दलों वाले 'महाविकास आघाड़ी' गठबंधन को करारी शिकस्त का सामना करना पड़ा। चुनावी समीकरणों पर नजर डालें तो निगम की कुल 78 सीटों में से 7 सीटें (6 महायुति और 1 निर्दलीय) पहले ही निर्विरोध चुनी जा चुकी थीं। शेष 71 सीटों के लिए हुए मतदान में भाजपा महायुति के 53 उम्मीदवारों ने ऐतिहासिक जीत दर्ज की, जिससे गठबंधन की कुल सदस्य संख्या 59 तक पहुँच गई है।

# मीरा-भाईंदर शहर में खिला कमल

## भाजपा को ऐतिहासिक बहुमत, शिवसेना का सूपड़ा साफ

डीबीडी संवाददाता । भाईंदर

मीरा-भाईंदर मनपा चुनाव के घोषित परिणामों में भाजपा की आंधी में शिवसेना (शिंदे) के जिलाध्यक्ष राजू भोईर, पूर्व महापौर कैटलीन परेरा, कांग्रेस के पूर्व जिलाध्यक्ष प्रमोद सामंत सहित कई दिग्गज धराशायी हो गए। अप्रत्याशित जीत के साथ शहर में कमल खिला। शिवसेना (उबाठा), मनसे और राकांपा के दोनों गुटों का खाता नहीं खुल सका। इसके बावजूद कुछ प्रभागों में शिवसेना (उबाठा) के कारण शिंदे सेना को नुकसान उठाना पड़ा। परिवहन मंत्री प्रताप सरनाईक और विधायक नरेंद्र मेहता के बीच वर्चस्व की इस लड़ाई में जीत नरेंद्र मेहता की रही। 'अबकी बार 50 पार' का दावा करने वाली शिवसेना का सूपड़ा साफ हो गया। 2017 के चुनाव में सिर्फ 10 सीटें जीतने वाली कांग्रेस को इस चुनाव में 3 सीटों का लाभ हुआ। भाजपा से बगावत करने वालों की भी लुटिया डूब गई। शिवसेना (शिंदे) 17 सीटों से सिमटकर मात्र 3 सीटों पर रह गई। वर्तमान विधायक नरेंद्र मेहता के नेतृत्व में 2012 में 29 और 2017 में 61 सीटें जीतकर सत्ता हासिल करने वाली भाजपा ने इस बार 78 सीटें जीतकर इतिहास रच दिया। मीरा-भाईंदर मनपा में लगातार दूसरी बार स्पष्ट बहुमत से सत्ता हासिल करने वाली भाजपा पहली पार्टी बन गई।

### बगावत हुई फुस्स

इस चुनाव में कुल 22 पूर्व नगरसेवकों को करारी हार का सामना करना पड़ा। भाजपा के 9 बागी पूर्व नगरसेवकों में से केवल 1 बागी उम्मीदवार ही विजयी हो सका।

### इन सीटों पर रही कांटे की टक्कर

प्रभाग क्रमांक 10(क) में दोबारा मतगणना की गई। शिवसेना (शिंदे) की उम्मीदवार पूजा आमगांवकर और भाजपा की उम्मीदवार कविता त्रिपाठी के बीच कांटे की टक्कर में भाजपा प्रत्याशी मात्र 8 वोटों से विजयी रहीं। प्रभाग क्रमांक 3 में भाजपा के प्रत्याशी अधिवक्ता तरुण शर्मा (5360) ने सिर्फ 15 वोटों से शिवसेना (शिंदे) के उम्मीदवार पूर्व नगरसेवक राजेश वेतोसकर (5345) को शिकस्त दी। स्व. गिल्बर्ट मेंडोसा के पौत्र तारेन मेंडोसा पहली बार कांग्रेस उम्मीदवार के रूप में प्रभाग क्रमांक 19 से चुनाव लड़ रहे थे। करीबी मुकाबले में उन्होंने भाजपा के उम्मीदवार सुरेश म्हात्रे (5645) को 447 वोटों से हराया।

### दिग्गज हारे

2007 से लगातार नगरसेविका रहीं भाजपा की मीरा यादव को भाजपा के ही बागी उम्मीदवार अनिल भोसले के हाथों करारी हार मिली। प्रभाग क्रमांक 8 से पहली बार चुनाव लड़ रहीं भाजपा की उम्मीदवार किमया रकवी ने पूर्व महापौर कैटलीन परेरा को पराजित किया। सबसे चौंकाने वाली हार शिवसेना (शिंदे) के जिलाध्यक्ष राजू भोईर और उनकी पत्नी भावना भोईर की रही। पहली बार चुनाव लड़ रहे नवीन सिंह के हाथों दोनों को करारी हार मिली। इस चुनाव में राजू भोईर सहित उनके दोनों भाई कमलेश भोईर और दिलीप भोईर को भी पराजय का सामना करना पड़ा। शिवसेना के उम्मीदवार एवं पूर्व उपमहापौर प्रवीण पाटिल भी चुनाव हार गए।

### विधायक नरेंद्र मेहता ने मतदाताओं का जताया आभार

विधायक नरेंद्र मेहता ने कहा कि सभी मतदाताओं का वे दिल से आभार व्यक्त करते हैं। जनता ने दिखा दिया है कि शहर में भाजपा का जनाधार मजबूत है। यह जीत विकास और विश्वास की जीत है। जनता ने विकास के वादों को पूरा करने के लिए वोट दिया है और यह जीत जनता की जीत है। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के नेतृत्व पर जनता ने जो भरोसा दिखाया है, उसे हम टूटने नहीं देंगे। शहर के सर्वांगीण विकास के लिए हम सभी संकल्पित हैं।

### राजनीति में नई पीढ़ी का उदय

इस बार के नगर निगम चुनावों में राजनीति की एक नई और ऊर्जावान पीढ़ी का उदय हुआ है, जहाँ भाजपा, कांग्रेस और शिवसेना तीनों ही प्रमुख दलों के कई नए चेहरों ने जनता का विश्वास जीतकर पहली बार सदन में अपनी जगह बनाई है। भाजपा की ओर से मानसी शर्मा, श्रद्धा कदम, जया रथीन, योगिता शर्मा, तरुण शर्मा, मेबल नोयल कोरिया, सुनीता जैन, परेश शाह, भरत कोठारी, भव्या पिपलिया, आभा पाटील, किमया रकवी, कोमल नावंधर, आकांक्षा विरकर, कविता त्रिपाठी, दीपक सावंत, महेश म्हात्रे, विशाल पाटील, सचिन डोंगरे, नवीन सिंह, प्रतिभा जाट, मनीष पराशर, विवेक उपाध्याय और संजय थरथरे जैसे युवा और कर्मठ उम्मीदवारों ने बड़ी जीत दर्ज की है; वहीं कांग्रेस से सुनील चौधरी, रिजवाना खान, सना देशमुख, जय ठाकुर, तारेन मेंडोंसा, आयरिन पॉल, आफरीन मुजफ्फर हुसैन सैय्यद, रुबीना शेख, अशरफ मिस्त्री, रफीक पठान और शॉन कोलासो जैसे नए चेहरों को मतदाताओं का भरपूर समर्थन मिला, जबकि शिवसेना से फ्रीडा बर्नाड डिमेलो भी पहली बार निर्वाचित होकर राजनीति में अपनी मजबूत एंट्री दर्ज कराने में सफल रहीं, जो इस बात का संकेत है कि जनता अब अनुभवी चेहरों के साथ-साथ नए विजन और उत्साह को भी प्राथमिकता दे रही है।

### 22 पूर्व पार्षदों को मिली करारी हार

इस चुनाव में जहाँ एक ओर 22 पूर्व पार्षदों को करारी हार का सामना करना पड़ा, वहीं दूसरी ओर उत्तर भारतीय उम्मीदवारों ने अपनी जीत का परचम लहराकर शहर की बदलती राजनीतिक तस्वीर को स्पष्ट कर दिया है। पूर्व महापौर कैटलिन परेरा सहित शिवसेना के दिग्गज नेता राजू भोईर, भावना भोईर, भाजपा की मीरा देवी यादव और राकांपा (अजीत गुट) के नरेश पाटील जैसे स्थापित चेहरों को जनता ने इस बार नकार दिया, जिससे यह साफ हो गया कि कई बड़े नाम मतदाताओं का भरोसा बरकरार रखने में विफल रहे। इसके विपरीत, भाजपा के बैनर तले मानसी शर्मा, अशोक तिवारी, पंकज पांडे, मदन सिंह, कविता त्रिपाठी और विवेक उपाध्याय जैसे कई उत्तर भारतीय उम्मीदवारों ने प्रभावशाली जीत दर्ज की है, जो नगर निकाय की राजनीति में एक नए और समावेशी सामाजिक-राजनीतिक समीकरण के उदय का संकेत देती है।

## वसई-विरार महानगरपालिका

# बीजेपी की सुनामी में 'सीटी' बजी

### हितेंद्र ठाकुर की पार्टी ने किया क्लीन स्वीप

डीबीडी संवाददाता । पालघर

जहां पूरे महाराष्ट्र की 29 महानगरपालिकाओं में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की लहर दिखाई दे रही है, वहीं मुंबई के करीब पालघर जिले के वसई-विरार में एक अलग ही सियासी कहानी लिखी गई है। यहां न तो भाजपा की रणनीति काम आई और न ही बड़े दलों का प्रभाव, यहां केवल 'सीटी' बजी। स्थानीय दिग्गज नेता हितेंद्र ठाकुर की पार्टी बहुजन विकास आघाडी (BVA) ने प्रचंड बहुमत हासिल करते हुए एक बार फिर अपना अभेद्य किला फतह कर लिया है। कुल 115 सीटों में से बविआ ने 71 सीटों पर कब्जा जमाते हुए स्पष्ट बहुमत हासिल किया है।

### भाजपा का उभरता कद : 43 सीटों पर जीत

इस चुनाव में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने भी अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया है और एक प्रमुख विपक्षी दल के रूप में उभरी है। भाजपा ने 43 सीटों पर जीत हासिल की है, जिसे पिछले चुनावों के मुकाबले एक बड़ी उपलब्धि माना जा रहा है। हालांकि भाजपा सत्ता के जादुई आंकड़े (58) को छूने में विफल रही, लेकिन इतनी बड़ी संख्या में सीटें जीतना वसई-विरार की राजनीति में भाजपा के बढ़ते जनाधार का संकेत है।

### वार्डवार प्रदर्शन : बविआ बनाम भाजपा

सीटों के वितरण पर नजर डालें तो बहुजन विकास आघाडी ने प्रभाग संख्या 1, 3, 4, 7, 8, 9, 12, 13, 14, 19, 20, 24, 25, 26, 27, 28 और 29 जैसे बड़े हिस्सों में अपना परचम लहराया है। दूसरी ओर, भाजपा ने प्रभाग 2, 5, 10, 11, 15, 16, 17, 18, 22 और 23 में जीत दर्ज कर बविआ को कड़ी टक्कर दी। प्रभाग संख्या 6 और 21 में दोनों दलों के बीच सीटों का बंटवारा देखने को मिला, जहाँ अलग-अलग प्रभागों में दोनों ने सफलता हासिल की।

### अन्य राजनीतिक दलों का शर्मनाक प्रदर्शन

चुनाव के सबसे चौंकाने वाले नतीजे अन्य प्रमुख राजनीतिक दलों के रहे। मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना को महज 1 सीट से संतोष करना पड़ा। वहीं, महाराष्ट्र की राजनीति के अन्य बड़े खिलाड़ियों—शिवसेना (यूबीटी), कांग्रेस, राष्ट्रवादी कांग्रेस (अजित पवार एवं शरद पवार गुट) और वंचित बहुजन आघाडी—का प्रदर्शन शून्य रहा। इन दलों का खाता न खुल पाना यह दर्शाता है कि स्थानीय जनता ने राज्यस्तरीय बड़े गठबंधनों के बजाय स्थानीय नेतृत्व और भाजपा पर ही भरोसा जताया है।

## उल्हासनगर मनपा

# भाजपा और शिंदे सेना सबसे बड़ी पार्टी

डीबीडी संवाददाता । उल्हासनगर

उल्हासनगर महानगरपालिका के चुनाव लगभग साढ़े आठ वर्षों के लंबे इंतजार के बाद संपन्न हुए, जिसमें मतदाताओं ने किसी भी एक पक्ष को पूर्ण बहुमत न देकर सत्ता की चाबी को अधर में लटका दिया है। गुरुवार को हुए मतदान और शुक्रवार को आई मतगणना में भाजपा और शिंदे गुट की शिवसेना के बीच जबरदस्त मुकाबला देखने को मिला। जहाँ भाजपा ने अकेले दम पर चुनाव लड़ा, वहीं शिंदे गुट की शिवसेना ने स्थानीय 'टीम ओमी कालानी' (TOK) और 'साईं पार्टी' के साथ गठबंधन कर चुनावी मैदान में ताल ठोंकी थी।

### बड़े चेहरों की हार और राजनीतिक उलटफेर

नतीजों ने कई दिग्गजों को हाशिए पर धकेल दिया है। साईं पार्टी की अध्यक्ष और पूर्व महापौर आशा इदनानी के साथ जीवन इदनानी को भी हार का सामना करना पड़ा। वहीं, चुनाव से ठीक पहले उद्धव गुट छोड़कर भाजपा में शामिल हुए धनंजय बोडारे को जनता ने नकार दिया, और उनके पूरे प्रभाग में शिंदे गुट की शिवसेना विजयी रही। पूर्व उपमहापौर भगवान भालेराव और पूर्व महापौर अपेक्षा पाटिल की हार ने यह स्पष्ट कर दिया है कि मतदाताओं ने इस बार नए समीकरणों और चेहरों को प्राथमिकता दी है।

### भाजपा और शिवसेना गठबंधन के बीच कांटे की टक्कर

78 सदस्यीय उल्हासनगर महानगरपालिका में बहुमत के लिए 40 सीटों की आवश्यकता थी, लेकिन नतीजों ने दोनों प्रमुख प्रतिद्वंद्वियों को बराबरी पर लाकर खड़ा कर दिया है। भाजपा 37 सीटें जीतकर सबसे बड़े दल के रूप में उभरी है, वहीं शिवसेना (TOK और साईं गठबंधन) ने भी ठीक 37 सीटें हासिल कर कड़ी टक्कर दी है। अन्य सीटों में वंचित बहुजन आघाड़ी ने 2 सीटें जीतीं, कांग्रेस को 1 सीट मिली और एक सीट पर निर्दलीय उम्मीदवार सविता तोरणे रगड़े ने जीत दर्ज की। अब सत्ता बनाने के लिए इन छोटे दलों और निर्दलीय की भूमिका निर्णायक हो गई है।

### साईं पार्टी का पतन और अन्य दलों की स्थिति

इस चुनाव का सबसे चौंकाने वाला पहलू 'साईं पार्टी' का खराब प्रदर्शन रहा, जो पिछले दो दशकों से शहर की सत्ता में प्रभावी भूमिका निभा रही थी। 2017 में 11 सीटें जीतने वाली यह पार्टी इस बार महज 1 सीट (दीप्ति दुधानी) पर सिमट गई। वहीं, वंचित बहुजन आघाड़ी ने 2 सीटें जीतकर मनपा में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। कांग्रेस की स्थिति जस की तस रही, जहाँ अंजलि सालवे ने एक बार फिर अपनी सीट बचाकर पार्टी का खाता खोला, जबकि राष्ट्रवादी कांग्रेस का इस चुनाव में पूरी तरह सूपड़ा साफ हो गया।

### दिग्गज विजेताओं का दबदबा और उत्तर भारतीय प्रतिनिधित्व

चुनाव परिणामों में कई प्रमुख चेहरों ने अपनी साख बरकरार रखी है। विजेताओं में पूर्व विधायक पप्पू कालानी की पुत्री सीमा कालानी, भाजपा विधायक कुमार आयलानी की पत्नी मीना आयलानी और भाजपा अध्यक्ष राजेश वधारिया जैसे नाम शामिल हैं। इसके अलावा, शिवसेना के राजेंद्र सिंह भुल्लर और जमनू पुरुस्वानी ने भी जीत दर्ज की। विशेष रूप से, उत्तर भारतीय समाज से संजय सिंह उर्फ चाचा और सुचित्रा सुधीर सिंह ने जीत हासिल कर अपनी सामुदायिक पैठ को साबित किया है।

# पनवेल महानगरपालिका में भाजपा महायुति का दबदबा

डीबीडी संवाददाता । नवी मुंबई

पनवेल महानगरपालिका के सार्वत्रिक चुनाव में भाजपा, शिवसेना, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी और रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया (आरपीआई) की महायुति ने प्रचंड जीत दर्ज करते हुए एक बार फिर नगर निगम पर एकछत्र सत्ता स्थापित की है। इस चुनाव में शेकाप-महाविकास आघाड़ी को करारी हार का सामना करना पड़ा, जिससे पनवेल की राजनीति में महायुति की मजबूत पकड़ और स्पष्ट हो गई। चुनाव प्रक्रिया के दौरान मतदान से पहले ही भाजपा महायुति की 6 सीटें और 1 निर्दलीय सीट निर्विरोध घोषित हो चुकी थीं। इसके बाद 71 सीटों के लिए हुए मतदान के नतीजों में महायुति ने 53 सीटों पर जीत दर्ज की। कुल मिलाकर 59 सीटें हासिल कर महायुति ने विपक्ष को पूरी तरह पछाड़ दिया। इस निर्णायक जीत में विधायक प्रशांत ठाकुर की रणनीतिक और संगठनात्मक भूमिका अहम मानी जा रही है। यह चुनाव पूर्व सांसद व लोकनेता रामशेठ ठाकुर के मार्गदर्शन में लड़ा गया। विधायक प्रशांत ठाकुर, चुनाव प्रमुख विधायक महेश बालदी, जिला अध्यक्ष अविनाश कोळी, पूर्व नगराध्यक्ष जे. एम. म्हात्रे और पूर्व सदन नेता परेश ठाकुर के नेतृत्व में महायुति ने संगठित, योजनाबद्ध और विकास-केंद्रित प्रचार किया।

### भाजपा की महायुति ने 53 सीटें जीतीं, महाविकास अघाड़ी ने 18 सीटें जीतीं



### निर्विरोध निर्वाचन से मिली शुरुआती बढ़त

चुनावी प्रक्रिया के प्रारंभ में ही महायुति ने अपनी रणनीतिक श्रेष्ठता साबित कर दी थी। मतदान से पहले ही 6 सीटों पर उम्मीदवारों का निर्विरोध चुना जाना विपक्ष के लिए एक बड़ा मनोवैज्ञानिक झटका था। प्रभाग 18 से नितीन जयराम पाटील और ममता प्रीतम म्हात्रे, प्रभाग 19 से दर्शना भगवान भोईर और रुचिता गुरुनाथ लोंढे, तथा प्रभाग 20 से अजय तुकाराम बहिरा और प्रियांका तेजस कांडपिळे ने निर्विरोध निर्वाचित होकर सदन में महायुति की उपस्थिति पहले ही दर्ज करा दी थी। इन निर्विरोध जीतों ने चुनाव परिणामों की दिशा पहले ही तय कर दी थी।

### स्थानीय मुद्दों, नागरिक सुविधाओं और पनवेल के सर्वांगीण विकास के स्पष्ट रोडमैप ने मतदाताओं को प्रभावित किया।

### विकास और सक्षम नेतृत्व पर जनता की मुहर

इस ऐतिहासिक जीत पर प्रतिक्रिया देते हुए स्थानीय नेतृत्व ने इसे 'पनवेल की जनता की जीत' करार दिया है। विधायक प्रशांत ठाकुर ने कहा कि यह जनादेश प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकास कार्यों और मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के सुशासन के प्रति जनता के अटूट प्रेम का परिणाम है। महायुति ने संकल्प दोहराया है कि आने वाले पांच वर्षों में पनवेल को बुनियादी सुविधाओं, जल आपूर्ति और आधुनिक बुनियादी ढांचे के मामले में महाराष्ट्र का एक अग्रणी शहर बनाया जाएगा।

### शुरुआती प्रभागों में महायुति का वर्चस्व

प्रभागवार परिणामों पर नजर डालें तो प्रभाग 01 से लेकर 10 तक महायुति के उम्मीदवारों ने शानदार प्रदर्शन किया। प्रभाग 01 में विजयश्री संतोष पाटील और नितेश बालकृष्ण फडके ने जीत दर्ज की। प्रभाग 04 में परेश ब्रिजेश पटेल और मधु पाटील जैसे अनुभवी चेहरों ने अपनी सीटों पर कब्जा बरकरार रखा। वहीं, प्रभाग 07 में अमर अरुण पाटील और राजेंद्रकुमार शर्मा की जीत ने यह स्पष्ट कर दिया कि शहरी क्षेत्रों में भाजपा का आधार बेहद मजबूत है। प्रभाग 10 में रविंद्र अनंत भगत और मोनिका प्रकाश महानवर ने मतदाताओं का भरपूर समर्थन प्राप्त किया। प्रभाग 11 से 16 तक के नतीजों में भी महायुति की लहर बरकरार रही। प्रभाग 11 से प्रदीप गजानन भगत और हैप्पी सिंह ने अपनी जीत सुनिश्चित की। प्रभाग 13 में विकास नारायण घरत और रविंद्र गणपत जोशी ने कड़े मुकाबले में विपक्षी उम्मीदवारों को पछाड़ा। प्रभाग 15 में एकनाथ रामदास गायकवाड और दशरथ बालू म्हात्रे ने जीत का परचम लहराया। प्रभाग 16, जो कि राजनीतिक रूप से काफी सक्रिय माना जाता है, वहां से समीर बालशेठ ठाकूर और संतोष गुंडप्पा शेट्टी जैसे कद्दावर नेताओं ने अपनी श्रेष्ठता साबित करते हुए मतदाताओं का विश्वास जीता। प्रभाग 17 से 20 के परिणामों ने महायुति की जीत के अंतर को और बड़ा कर दिया। प्रभाग 17 में प्रकाश चंदर बिनेदार और मनोज भुजबळ विजयी रहे। प्रभाग 18 में प्रीति जॉनसन जॉर्ज ने अपनी सीट निकाली, जबकि प्रभाग 19 में सुमित उल्हास झुंझाररावं और चंद्रकांत (राजू) सोनी ने मतदाताओं का दिल जीता।

## भिवंडी निजामपुर महानगरपालिका

# कांग्रेस बनी सबसे बड़ी पार्टी

डीबीडी संवाददाता । भिवंडी

भिवंडी निजामपुर शहर महानगरपालिका के चुनाव परिणामों ने एक बार फिर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पर जनता के भरोसे को मुहर लगा दी है। कुल 90 सीटों में से 30 सीटें जीतकर कांग्रेस सबसे बड़े दल के रूप में उभरी है। हालांकि, बहुमत के जादुई आंकड़े से दूर होने के बावजूद, कांग्रेस ने शहर की राजनीति में अपनी पकड़ मजबूत साबित की है और सत्ता की रेस में सबसे आगे खड़ी है।

### भाजपा 22 सीटों के साथ दूसरे स्थान पर रही

### भाजपा की मजबूत उपस्थिति और विपक्ष की स्थिति

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) इस चुनाव में 22 सीटों के साथ दूसरे स्थान पर रही है। भाजपा ने कई वार्डों में कड़ी टक्कर दी, लेकिन वह स्पष्ट बहुमत प्राप्त करने में विफल रही। वहीं, शिवसेना और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरदचंद्र पवार गुट) दोनों ने 12-12 सीटों पर जीत दर्ज की है। इन परिणामों ने स्पष्ट कर दिया है कि किसी भी एक पार्टी का वर्चस्व नहीं है और शहर की राजनीति अब गठबंधन की दिशा में मुड़ गई है।

### रईस शेख: सत्ता समीकरण के 'किंगमेकर'

इस चुनाव में समाजवादी पार्टी के विधायक रईस शेख एक निर्णायक शक्ति के रूप में उभरे हैं। उनके द्वारा समर्थित उम्मीदवारों की जीत ने यह साबित कर दिया है कि भिवंडी की जनता के बीच उनका गहरा प्रभाव है। रईस शेख ने न केवल अपनी पार्टी बल्कि कांग्रेस और राकांपा (शरद पवार गुट) के जिन उम्मीदवारों का समर्थन किया, वे भारी मतों से विजयी हुए। अब महापौर पद और सत्ता गठन में उनका रुख सबसे महत्वपूर्ण फैक्टर बन गया है।

### स्थानीय आघाड़ियों का चौंकाने वाला प्रदर्शन

मुख्यधारा की पार्टियों के अलावा, स्थानीय गुटों ने भी अपनी ताकत दिखाई है। कोणार्क विकास आघाड़ी ने सभी 4 सीटों पर जीत हासिल कर सबको चौंका दिया, जबकि भिवंडी विकास आघाड़ी (एकता मंच) को 3 सीटों पर सफलता मिली। एक सीट निर्दलीय के खाते में गई है। इन छोटे समूहों और निर्दलीयों की भूमिका अब सत्ता की चाबी हासिल करने के लिए बहुत महत्वपूर्ण हो गई है।

# दादर, वर्ली और लालबाग में बरकरार रहा 'ठाकरे' का दबदबा

डीबीडी संवाददाता । मुंबई

बीएमसी चुनाव 2026 के नतीजों में मुंबई के पारंपरिक मराठी गढ़ माने जाने वाले दादर, वरली और लालबाग में ठाकरे बंधुओं के 'शिलेदारों' ने अपना वर्चस्व कायम रखा है। इन क्षेत्रों के कुल 17 प्रभागों में से 14 पर ठाकरे गठबंधन के उम्मीदवारों ने जीत का परचम लहराया। इनमें से 12 सीटें शिवसेना (यूबीटी) के खाते में गईं, जबकि 2 सीटों पर महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (मनसे) के उम्मीदवार विजयी हुए। मुंबईकरों ने एक बार फिर अनुभवी चेहरों पर भरोसा जताते हुए तीन पूर्व महापौरों और एक पूर्व उपमहापौर को दोबारा सेवा का अवसर दिया है।

## शिवाजी पार्क की संयुक्त सभा का दिखा असर

शिवसेना प्रमुख उद्धव ठाकरे और मनसे अध्यक्ष राज ठाकरे की शिवाजी पार्क में हुई ऐतिहासिक संयुक्त जनसभा का सीधा प्रभाव इन मराठी बहुल क्षेत्रों में देखने को मिला। ठाकरे समूह की ओर से दिग्गज नेता श्रद्धा जाधव, किशोरी पेडणेकर और विशाखा राऊत (तीनों पूर्व महापौर) ने शानदार जीत दर्ज की। साथ ही पूर्व उपमहापौर हेमांगी वरलीकर ने भी वरली में अपना किला सुरक्षित रखा। अन्य विजयी उम्मीदवारों में किरण तावडे, सचिन पड़वाल, अबोली खाड़ये, पद्मजा चेंबूरकर और निशिकांत शिंदे जैसे नाम शामिल हैं, जबकि मनसे की ओर से सुप्रिया दलवी और यशवंत किलेदार ने जीत हासिल की।

## बागियों की करारी हार: मराठी वोटरों ने नकारा

इन निर्वाचन क्षेत्रों में शिवसेना (यूबीटी) के आधिकारिक उम्मीदवारों के खिलाफ कई बागियों ने चुनौती पेश की थी, लेकिन वे पूरी तरह विफल रहे। श्रद्धा जाधव के खिलाफ विजय इंदुलकर और हेमांगी वरलीकर के खिलाफ सूर्यकांत कोली जैसे बागी प्रभावहीन साबित हुए। वहीं लालबाग में किरण तावडे के खिलाफ शिंदे गुट से चुनाव लड़ने वाले पूर्व नगरसेवक अनिल कोकिल को भी हार का सामना करना पड़ा। परिणामों से स्पष्ट है कि मराठी भाषी मतदाताओं ने एकजुट होकर ठाकरे के उम्मीदवारों के पक्ष में भारी मतदान किया और दलबदलुओं को सिरे से खारिज कर दिया।

## सदा सरवणकर को दोहरा झटका: बेटा और बेटी दोनों चुनाव हारे

शिंदे गुट में शामिल हुए कद्दावर नेता सदा सरवणकर के लिए यह चुनाव एक व्यक्तिगत और राजनीतिक झटके के रूप में सामने आया है। विधानसभा चुनाव में हार के बाद, अब नगर निगम चुनाव में भी उनके परिवार को पराजय झेलनी पड़ी। उनके बेटे समाधान सरवणकर को प्रभादेवी से निशिकांत शिंदे ने 603 मतों से हराया, वहीं उनकी बेटी प्रिया सरवणकर को दादर में पूर्व महापौर विशाखा राऊत के हाथों 197 मतों के मामूली अंतर से हार का सामना करना पड़ा।

## मराठी गढ़ में ठाकरे का वर्चस्व: BMC 2026 नतीजे

## कांटे की टक्कर और विवाद

प्रभाग संख्या 190 में भाजपा की शीतल गंभीर और शिवसेना (यूबीटी) की वैशाली पाटनकर के बीच अत्यंत रोमांचक मुकाबला देखने को मिला। इस संघर्षपूर्ण लड़ाई में वैशाली पाटनकर को महज 121 मतों के अंतर से हार का सामना करना पड़ा। परिणाम के बाद पाटनकर और प्रिया सरवणकर दोनों ने चुनाव अधिकारी से फेरमतगणना की मांग की थी, जिसे प्रशासन ने खारिज कर दिया।

# चंद्रपुर में कांग्रेस सबसे बड़ी पार्टी

**मुंबई।** महाराष्ट्र की 29 महानगर पालिकाओं के चुनाव नतीजों में चंद्रपुर नगर निगम से कांग्रेस ने भाजपा को बड़ा झटका दिया है। कुल 66 सीटों वाली इस महानगर पालिका में कांग्रेस 27 सीटों के साथ सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है। भाजपा को 23 सीटें मिली हैं, जबकि शिवसेना (उबाठा) ने छह सीटों पर जीत दर्ज की। इसके अलावा जन विकास सेना को तीन, वंचित बहुजन आघाड़ी को दो और निर्दलीय उम्मीदवारों को दो सीटें मिली हैं। शिवसेना (शिंदे), एआईएमआईएम और बसपा के खाते में एक-एक सीट गई है।

## 2017 के मुकाबले बदले सियासी समीकरण

चंद्रपुर में 2017 के नगर निगम चुनावों में भाजपा ने 66 में से 36 सीटें जीतकर स्पष्ट बहुमत हासिल किया था, लेकिन इस बार पार्टी को सत्ता से दूर होना पड़ा है। चुनाव नतीजों को स्थानीय मतदाताओं के बदले रुख के तौर पर देखा जा रहा है, जहां कांग्रेस ने मजबूत वापसी की है। परिणामों के बाद कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने पार्टी कार्यालय के बाहर पटाखे फोड़कर और ढोल-नगाड़ों के साथ जीत का जश्न मनाया।

## कांग्रेस का सत्ता गठन का दावा

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता विजय वडेट्टीवार ने कहा कि पार्टी नगर निगम की सत्ता में आएगी और 40 से अधिक पार्षदों के समर्थन से महापौर नियुक्त करेगी। उन्होंने बताया कि कांग्रेस के पार्षदों के अलावा जन विकास सेना के तीन पार्षद और टिकट न मिलने के बावजूद चुनाव जीतने वाले दो निर्दलीय पार्षद भी कांग्रेस का समर्थन कर रहे हैं। वडेट्टीवार ने आरोप लगाया कि मतदाताओं ने भाजपा के नेतृत्व वाले नगर प्रशासन के "भ्रष्ट और जनविरोधी" कामकाज को खारिज किया है।

# वार्ड नंबर 1 से रेखा यादव हुईं विजयी

## मराठी-उत्तर भारतीय विवाद की निकाली हवा

**मुंबई।** मुंबई महानगर पालिका चुनाव 2026 के शुरुआती परिणामों में दहिसर (वार्ड नंबर 1) से उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना की उम्मीदवार रेखा यादव ने एक अभूतपूर्व जीत दर्ज की है। वह इस चुनाव में जीत हासिल करने वाली उत्तर भारतीय समुदाय की पहली महिला उम्मीदवार बन गई हैं, जो मुंबई की राजनीति में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। करीब 52.94% मतदान के बीच मिली यह सफलता न केवल उनके व्यक्तिगत राजनीतिक कद को बढ़ाती है, बल्कि नगर निगम में उत्तर भारतीय समुदाय के बढ़ते प्रभाव और प्रतिनिधित्व को भी स्पष्ट रूप से रेखांकित करती है।

## वैचारिक संघर्ष और दहिसर का जनादेश

दहिसर का यह मुकाबला महज दो प्रत्याशियों की लड़ाई नहीं, बल्कि दो विपरीत राजनीतिक विचारधाराओं का टकराव था। रेखा यादव ने कांग्रेस की दिग्गज नेता शीतल म्हात्रे को पराजित कर यह साबित कर दिया कि मतदाता अब 'मराठी बनाम उत्तर भारतीय' जैसे पहचान के विवादों के बजाय स्थानीय विकास और काम करने वाले चेहरे को प्राथमिकता दे रहे हैं। चुनाव प्रचार के दौरान चले तीखे भाषाई और क्षेत्रीय विवादों के बावजूद, दहिसर की जनता ने विकासवाद पर मुहर लगाकर यह साफ कर दिया है कि उनके लिए शहर की प्रगति सबसे ऊपर है।

# मालाबार हिल में भाजपा का 'क्लीन स्वीप'

**मुंबई।** दक्षिण मुंबई के वीआईपी क्षेत्र मालाबार हिल में कैबिनेट मंत्री मंगल प्रभात लोढ़ा ने अपनी राजनीतिक पकड़ को और मजबूत करते हुए भाजपा को शानदार जीत दिलाई है। लोढ़ा के कुशल नेतृत्व में भाजपा ने इस विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले सभी पांचों वार्डों में क्लीन स्वीप किया है। इस ऐतिहासिक सफलता को लोढ़ा ने जनता द्वारा उनके सेवा कार्यों पर लगाई गई मुहर और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के नेतृत्व वाली 'डबल इंजन' सरकार के प्रति विश्वास का परिणाम बताया है। उन्होंने विपक्षी दलों पर निशाना साधते हुए कहा कि मतदाताओं ने उनके 'झूठे नैरेटिव' को नकार कर केवल विकास को प्राथमिकता दी है।चुनावी आंकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि भाजपा उम्मीदवारों ने अपने प्रतिद्वंद्वियों को बड़े अंतर से शिकस्त दी है। वार्ड संख्या 214 और 217 में भाजपा के अजय पाटिल और गौरांग जावेरी ने मनसे उम्मीदवारों को क्रमशः 8,371 और 8,857 वोटों के विशाल अंतर से हराया। वहीं, उबाथा (ठाकरे समूह) को भी इस क्षेत्र में कड़ी हार का सामना करना पड़ा; वार्ड 215 में संतोष ढाले, वार्ड 218 में स्नेहल तेंदुलकर और वार्ड 219 में सनी सनप ने उनके उम्मीदवारों को 2,800 से लेकर 7,500 से अधिक वोटों के अंतर से पराजित किया।

# अरुण गवली को लगा डबल झटका

## दोनों बेटियां चुनाव हारीं

डीबीडी संवाददाता । मुंबई

बीएमसी चुनाव में कई लोगों को झटका लगा है। ऐसा ही एक नाम है, अरुण गवली का। गैंगस्टर से राजनेता बने अरुण गवली की दोनों बेटियां, गीता और योगिता गवली बीएमसी चुनाव में मैदान में उतरी थीं। लेकिन दोनों में एक को भी सफलता नहीं मिली। गीता और योगिता अपने पिता की बनाई पार्टी, अखिल भारतीय सेना के बैनर तले चुनाव लड़ रही थीं।

## बनाई खुद की पार्टी

1980 में अरुण गवली को शिवसेना के बालासाहेब ठाकरे का वरदहस्त मिल गया। लेकिन मध्य 1990 में शिवसेना से दूरी बढ़ने के बाद उसने खुद की राजनीतिक पार्टी बनाई। इसके बाद चिंचपोकली से 2004 से 2009 तक विधायक रहा।

## कुख्यात डॉन रहा है अरुण गवली

गौरतलब है कि अरुण गवली 1970 के समय में मुंबई अंडरवर्ल्ड का कुख्यात डॉन था। वह और उसके भाई किशोर, 'बायकुला कंपनी' का हिस्सा थे। इस आपराधिक गैंग ने सेंट्रल मुंबई स्थित बायकुला, परेल और सात रास्ता में अपराध को अंजाम दिया। अरुण गवली ने 1988 में गैंग की कमान संभाल ली और अंडरवर्ल्ड डॉन दाउद इब्राहिम गैंग से टक्कर लेने लगा। यह टक्कर 80 के दशक के आखिर और 90 के दशक में खूब चली।

## कौन कहां से हारा

गीता गवली को बायकुला के वार्ड 212 में समाजवादी पार्टी के अमरीन शहजान अब्रहानी ने हराया। वहीं, योगिता गवली को वार्ड नंबर 207 में भाजपा के रोहिदास लोखंडे के हाथों शिकस्त का सामना करना पड़ा। इन दोनों हार से मुंबई में गवली परिवार की सियासी प्रतिष्ठा को काफी धक्का लगा है। बता दें कि चुनाव से पहले दोनों बहनें काफी आशान्वित थीं। एनडीटीवी के मुताबिक उन्होंने कहा था कि लोग हमें डॉन की बेटी नहीं, बल्कि डैडी की बेटी की रूप में देखते हैं।

# एमआईएम का 'पतंग' बुलंद

**100 से अधिक सीटों पर ऐतिहासिक जीत**

डीबीडी संवाददाता । मुंबई

महाराष्ट्र के नगर निगम चुनावों में असदुद्दीन ओवैसी के नेतृत्व वाली अखिल भारतीय मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन (AIM-IM) ने एक बड़ी राजनीतिक लहर पैदा करते हुए सबको चौंका दिया है। राज्य भर के विभिन्न नगर निगमों में एमआईएम ने 100 से अधिक सीटों पर जीत दर्ज कर अपनी ताकत का अहसास कराया है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि अल्पसंख्यक बहुल क्षेत्रों में समाजवादी पार्टी के कमजोर होते आधार और महा विकास अघाड़ी (MVA) के भीतर अंतर्विरोधों का सीधा लाभ एमआईएम को मिला है। इस चुनावी सफलता ने राज्य की पारंपरिक राजनीति के समीकरणों को पूरी तरह बदल दिया है।

## संभाजीनगर से मुंबई तक एमआईएम का विस्तार

चुनाव परिणामों के आंकड़ों पर गौर करें तो एमआईएम का सबसे प्रभावी प्रदर्शन छत्रपति संभाजीनगर में रहा, जहाँ पार्टी के सर्वाधिक 33 पार्षद चुनकर आए हैं। इसके अलावा मालेगांव में 21, नांदेड़ में 13, धुले में 10 और अमरावती में 11 सीटों पर पार्टी ने कब्जा जमाया है। मुंबई में भी पार्टी ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हुए 7 सीटें जीती हैं, जबकि सोलापुर में 8, ठाणे (मुंब्रा) में 5 और नागपुर व परभणी में एक-एक उम्मीदवार विजयी हुए हैं। यह परिणाम स्पष्ट करते हैं कि एमआईएम अब केवल कुछ शहरों तक सीमित नहीं रही, बल्कि पूरे महाराष्ट्र के शहरी क्षेत्रों में एक मजबूत विकल्प बनकर उभरी है।

## समाजवादी पार्टी का पतन और एमआईएम का उदय

मुंबई के मुस्लिम बहुल वार्डों में वर्षों से चले आ रहे समाजवादी पार्टी के वर्चस्व को इस बार करारा झटका लगा है। पार्टी के दिग्गज नेताओं, अबू आसिम आज़मी और रईस शेख के बीच के आंतरिक कलह ने पार्टी को भारी नुकसान पहुँचाया, जिसका सीधा फायदा एमआईएम को मिला। पूर्व में जिन वार्डों से सपा के छह-सात पार्षद निर्वाचित होते थे, वहां अब एमआईएम का परचम लहरा रहा है। राजनीतिक गलियारों में चर्चा है कि सपा की आपसी गुटबाजी ने मतदाताओं को एमआईएम की ओर रुख करने के लिए मजबूर किया, जिससे कांग्रेस को भी कुछ स्थानों पर नुकसान झेलना पड़ा है।

**महा विकास अघाड़ी के समीकरणों में मुस्लिम वोटों का बिखराव**

पिछले लोकसभा और विधानसभा चुनावों में उद्धव ठाकरे की शिवसेना और कांग्रेस गठबंधन को मुस्लिम समुदाय का बड़ा समर्थन मिला था, लेकिन नगर निगम चुनावों में यह एकजुटता नजर नहीं आई। विशेष रूप से मुंबई में शिवसेना (ठाकरे) और कांग्रेस के बीच गठबंधन न होने और राज ठाकरे व उद्धव ठाकरे के बीच बढ़ती नजदीकियों के कारण मुस्लिम मतदाताओं ने एमआईएम को प्राथमिकता दी। महा विकास अघाड़ी के लिए यह चिंता का विषय है कि स्थानीय स्तर पर उनका पारंपरिक वोट बैंक अब स्वतंत्र पहचान वाली एमआईएम पार्टी की ओर स्थानांतरित हो रहा है।

# उत्तर महाराष्ट्र में महायुति की प्रचंड जीत

## नासिक संभाग में भाजपा ने लहराया जीत का परचम

**नासिक।** आगामी कुंभ मेले के दृष्टिगत सामरिक रूप से महत्वपूर्ण नासिक महानगरपालिका चुनावों में भारतीय जनता पार्टी ने ऐतिहासिक प्रदर्शन करते हुए 72 सीटों के साथ अकेले दम पर स्पष्ट बहुमत हासिल कर लिया है। कड़े मुकाबले में भाजपा ने न केवल अपने विरोधियों को पछाड़ा, बल्कि 'सत्ता की चाबी' अपने पास सुरक्षित रखी। यहाँ शिवसेना (शिंदे गुट) 26 सीटें जीतकर मुख्य विपक्षी दल के रूप में उभरी है, जबकि उद्धव ठाकरे समूह को 15 सीटें मिलीं। चौंकाने वाली बात यह रही कि शरद पवार नीत राकांपा का यहाँ खाता तक नहीं खुल सका और कांग्रेस को महज 3 सीटों से संतोष करना पड़ा।

## जलगांव और धुले: भाजपा के अभेद्य दुर्ग में विपक्ष धराशायी

जलगांव और धुले महानगरपालिकाओं में भी भाजपा ने अपनी जीत की परंपरा को और अधिक मजबूती प्रदान की है। जलगांव में भाजपा ने 75 में से 46 सीटें जीतकर एक नया रिकॉर्ड बनाया, जहाँ सहयोगी शिंदे गुट ने भी 22 सीटों पर अपना प्रभाव दिखाया। वहीं, धुले की 74 सीटों वाली महानगरपालिका में भाजपा ने 50 सीटों के साथ एकतरफा जीत दर्ज की।

## अहिल्यानगर में महायुति का 'डबल इंजन' सफल

अहिल्यानगर (अहमदनगर) महानगरपालिका के परिणामों ने महायुति के भीतर बेहतर समन्वय की कहानी बयां की है। यहाँ भाजपा (25 सीटें) और अजीत पवार नीत राकांपा (27 सीटें) ने मिलकर सत्ता पर कब्जा जमाया है। सहयोगी शिवसेना (शिंदे गुट) की 10 सीटों ने इस गठबंधन को और भी शक्तिशाली बना दिया है।

## मालेगांव: 'इस्लाम' पार्टी और AIMIM का उदय

उत्तर महाराष्ट्र के रुझानों के विपरीत, मुस्लिम बहुल मालेगांव महानगरपालिका में स्थानीय समीकरणों का बोलबाला रहा। यहाँ 'इंडियन सेकुलर लार्जेस्ट असेंबली ऑफ महाराष्ट्र' (इस्लाम) पार्टी 35 सीटों के साथ सबसे बड़े दल के रूप में उभरी है। AIMIM ने भी 21 सीटों के साथ अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज कराई और दूसरे स्थान पर रही।

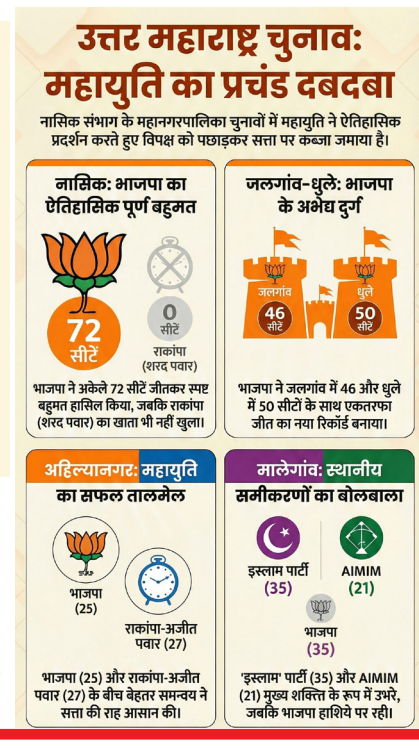


**Public Notice**

Notice is hereby given to the public at large that **Mr. Navnath Babanrao Indalkar**, borrower of Loan Account No. **06900008431**, availed from **Piramal Capital & Housing Finance Limited** (formerly known as Dewan Housing Finance Corporation Limited), has **expired on 05/08/2025**.

The said loan was availed against mortgage of the property bearing **Flat No. 1410, A Wing, 38 Park Majestic, Wadachi Wadi Road, Undri, Pune, Maharashtra – 411060**

The deceased has left behind the following **only Class I legal heirs**:
**1.Mrs. Pallavi Navnath Indalkar** – Widow / Wife
**2.Mr. Karan Navnath Indalkar** – Son
**3.Mr. Yuvraj Navnath Indalkar** – Son

The above-named legal heirs have settled / are in the process of settling the loan dues to the satisfaction of the Lender and have requested release of the **original title documents** of the said mortgaged property

Any person(s) having any claim, right, title, interest, objection, or demand of whatsoever nature in respect of the said property or the estate of the deceased is hereby required to make the same known in writing, along with documentary proof, to the undersigned within 15 (fifteen) days from the date of publication of this notice.

If no claim or objection is received within the stipulated period, it shall be presumed that **no such claim exists**, and the Lender shall be at liberty to release the original documents of the said property in favour of the above-named legal heirs, without any further reference.

**Ghanshyam R. Yadav**
(Advocate High Court)
3rd Floor, Andheri Court Bar Association, Andheri East, Mumbai 400069.
email : ghanshyam0301@gmail.com
Place:- Mumbai Date:- 17/01/2026

**मध्य रेल**
सोलापुर मंडल
**सिगनलिंग कार्य**

**शुद्धिपत्रक संख्या 01/25-26 से निविदा सं. एसयूआर-एनसी-सीआर-एसएनटी-सी-एस-02-2026, दिनांक 11.01.2026. कार्य का नाम:** मध्य रेल के सोलापुर मंडल के उस्मानाबाद से तुलजापुर के बीच 03 स्टेशनों पर इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग इंटरलॉकिंग की व्यवस्था के संबंध में इनडोअर एवं आउटडोर उपकरणों को सप्लाई, इन्स्टॉलेशन, टेस्टिंग एवं कमिशनिंग करना सोलापुर मंडल के सोलापुर-उस्मानाबाद नई बड़ी लाइन के संबंध में उस्मानाकार में आर आर आई में परिवर्तन का कार्य तथा उस्मानाबाद से तुलजापुर के बीच 04 स्टेशनों पर आउटडोअर सिगनलिंग का कार्य करना में संशोधन/परिवर्तन करना। उपर्युक्त शुद्धिपत्र निविदा सूचना का विवरण उपरोक्त कार्य के संबंध में **www.ireps.gov.in** वेबसाइट पर प्रकाशित किया गया है। निविदाकर्ताओ को सूचित किया जाता है की उपरलिखित बदलाव का ध्यान दे। अन्य शर्तें और नियम में कोई बदलाव नहीं है।

सहायक मंडल सिग्नल एवं दूरसंचार इंजीनिअर (निर्माण), मध्य रेल, सोलापुर
AK/Sur-10

टिकट के लिए UTS APP डाउनलोड करे

**मध्य रेल**
सोलापुर मंडल
**सिगनलिंग कार्य**

भारत के राष्ट्रपति की ओर से और उनके लिए, सहायक मंडल सिगनल एवं दूरसंचार इंजिनियर (निर्माण), सोलापुर, मध्य रेल द्वारा ओन लाइन खुली निविदाए पात्र निविदाकर्ता की ओर से निम्न लिखित कार्य के लिए आमंत्रित की जाती है। **निविदा सूचना संख्या- एसयूआर-एनसी-सी आर-एसएनटी-सी-टी-03-2026. दिनांक 14.01.2026. कार्य का नाम** : "मध्य रेलवे पर सौलापुर मंडल के सोलापुर-तुलजापुर-उस्मानाबाद सेक्शन में नई बी. जी. लाइन के कार्य के संबंध में कंट्रोल और इमरजेंसी कम्युनिकेशन सिस्टम, गेट फोन, ट्रैचिंग, बिछाने, जॉइंटिंग और 0+0+6 क्वाड केबल और ७/४ जेली फील्ड केवल का टर्मिनेशन और ऑप्टिक फाइबर कम्युनिकेशन की व्यवस्था जिसमें मटेरियल की सप्लाई, ट्रेंचिंग, एच डी पी ई (HDPE) डक्ट में ब्लोइंग तकनिकी से OFC बिछाना, एच डी पी ई (HDPE) डक्ट बिछाना OFC केबल की स्प्लिसिंग टर्मिनेशन आदि शामिल है।" **कार्य की अनुमानित लागत:** ₹ 17,01,43,259.07 (सत्रह करोड़ रुपये एक लाख तैंतालीस हजार दो सौ उनसठ और सात रुपये मात्र)। **निविदा फार्म/बुकलेट की कीमत:** ₹ 0.00/- **बयाना राशि:** ₹ 10,00,700/- (रु. दस लाख सात सौ मात्र) **कार्य पुरा करने की अवधि:** एलओए जारी करने की तारीख से 12 महीने (बारह महीने)। जिसमें मानसून और फसल की अवधि शामिल है। **निविदा जमा करने की प्रारंभ तिथि: दिनांक: 09.02.2026. निविदा जमा करने की अंतिम तिथि और समय:दिनांक: 23.02.2026 के 15:00 तक। निविदा बंद करने की तिथि और समय: दिनांक: 23.02.2026 के 15:00 बजे ।** वेबसाईट विवरण जहां से निविदा सुचना के बारे में पूर्ण जानकारी आप प्राप्त कर सकते है: **www.ireps.gov.in**

सहायक मंडल सिग्नल व दूर संचार इंजीनियर (निर्माण) म.रे. सोलापुर
Akar/Sur-9

अपने जानवरों को रेल लाइन से दूर रखे

**मध्य रेल**
सोलापुर मंडल
**इंजिनिअरिंग कार्य**

**ई निविदा सूचना क्र. 02-2026-SrDENCo..** मध्य रेल कार्यालय मंडल रेल प्रबंधक (कार्य) सोलापुर भारत के राष्ट्रपति के लिये और उनकी और से दिनांक की बजे तक निम्नलिखित कार्यों के लिये ई निविदा आमंत्रित करते है। **कार्य का नाम** : 1) Provision of Stabling and supporting work like Portal, Shotcreting, Rock Bolting etc. at critical locations inside Tunnel No.2 In KWV-LUR section in Solapur Division. 2) Rebuilding of 11 Bridges (Slab: 06, RCC Pipe: 03, Arch Br.: 02) and Extension of 06 Bridges (Arches: 05, Box: 01) In Mohol-Wadi Section. **अनुमानित लागत:** ₹ 22,66,62,999.56/-. **बयाना रक्कम:** ₹ 12,83,300.00/-. **समापन की अवधी:** 18(Eighteen) Months. **अनुरक्षण की अवधी:** 48(Forty Eight) Months. **ई निविदा फार्म की किमत** : Nil. **वेबसाइट ई निविदा फार्म जमा करने की अंतिम तरिख और समय: 06/02/2026 up to 15.00 hrs. वेबसाइट ई निविदा खोलने की तरिख और समय: 06/02/2026 after 15.30 hrs. वेबसाईट विवरण: www.ireps.gov.in Note:** संभावित निविदाकर्ताओं को सलाह दी जाती है कि वे निविदा बंद होने की तिथि से पहले इस वेबसाइट पर बार-बार जाएं ताकि इस निविदा वेबसाइट के लिए जारी किए गए किसी भी परिवर्तन/शुद्धिपत्र को नोट कर सकें: **www.ireps.gov.in**

मंडल यांत्रिक अभियंता म.रे. सोलापुर
Akar/Sur-8

अपने जानवरों को रेल लाइन से दूर रखे

संपादकीय

## महानगरों का नया जनादेश और बदलती शहरी सियासत

आज घोषित हुए देश की महत्वपूर्ण महानगर पालिकाओं के चुनावी परिणाम केवल स्थानीय निकायों के भाग्य का फैसला नहीं हैं, बल्कि ये भारतीय राजनीति की बदलती हुई दिशा और शहरी मतदाता के परिपक्व होते मिजाज का स्पष्ट दर्पण हैं। विशेष रूप से महाराष्ट्र की 29 महानगर पालिकाओं के नतीजों ने सत्ता के गलियारों में जो हलचल पैदा की है, वह आने वाले कई वर्षों तक राज्य की राजनीति को प्रभावित करेगी। देश की सबसे धनी और प्रभावशाली नगर निकाय, बृहन्मुंबई महानगर पालिका (BMC) के परिणामों ने दशकों पुराने उस राजनीतिक ढांचे को चुनौती दी है, जिसे अब तक अजेय माना जाता था। इन परिणामों ने स्पष्ट कर दिया है कि आधुनिक मतदाता अब भावुकता के बजाय उपयोगिता और विकास के ठोस आधार पर अपना फैसला सुना रहा है। मुंबई महानगर पालिका के चुनाव परिणाम ऐतिहासिक कहे जा सकते हैं। 227 सीटों वाली इस विशाल निकाय में सत्ता का केंद्र अब स्पष्ट रूप से खिसकता नजर आ रहा है। प्राप्त आंकड़ों के अनुसार, भारतीय जनता पार्टी और एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना (महायुति) ने बहुमत के जादुई आंकड़े 114 को पार करते हुए 128 सीटों पर प्रभावशाली जीत दर्ज की है। इसमें अकेले भाजपा का 92 सीटों तक पहुंचना यह दर्शाता है कि मुंबई का मतदाता अब 'क्षेत्रीय अस्मिता' के पारंपरिक नैरेटिव से ऊपर उठकर 'विकास और बेहतर इंफ्रास्ट्रक्चर' के विजन को चुन रहा है। कोस्टल रोड, मेट्रो विस्तार और सड़कों के कंक्रीटीकरण जैसे बड़े प्रोजेक्ट्स ने मध्यम वर्ग के बीच सत्ता पक्ष की विश्वसनीयता को बढ़ाया है। दूसरी ओर, उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली शिवसेना (UBT) के लिए ये नतीजे गहरे आत्ममंथन की घंटी हैं। शिवसेना का वह अभेद्य दुर्ग, जो पिछले तीन दशकों से मुंबई की राजनीति का पर्याय बना हुआ था, अब ढहता दिख रहा है। पार्टी का 62 सीटों पर सिमट जाना यह संकेत देता है कि विभाजन के बाद कैडर में जो बिखराव हुआ, उसे नेतृत्व केवल सहानुभूति की लहर से भरने में सफल नहीं हो सका। वहीं कांग्रेस की स्थिति और भी चिंताजनक है, जो केवल कुछ चुनिंदा वार्डों तक सीमित होकर रह गई है। सांख्यिकीय दृष्टि से देखें तो पुणे महानगर पालिका में भी महायुति ने 162 में से 98 सीटें जीतकर अपना वर्चस्व स्थापित किया है, जबकि महाविकास अघाड़ी को वहां मात्र 44 सीटों से संतोष करना पड़ा। ठाणे और नाशिक जैसे शहरों में भी क्रमशः 105 और 75 सीटें जीतकर महायुति ने क्लीन स्वीप जैसी स्थिति पैदा कर दी है। इन चुनावों ने शहरी राजनीति के नए मायने स्थापित किए हैं। मतदाताओं ने भ्रष्टाचार मुक्त प्रशासन और पारदर्शी शासन को प्राथमिकता दी है। बीएमसी के पिछले बजटों में अनियमितताओं के जो आरोप लगे, सत्ता पक्ष ने उन्हें कुशलता से चुनावी मुद्दा बनाया। साथ ही, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व और मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे की जमीनी सक्रियता ने विपक्ष के संयुक्त गठबंधन के दावों को निष्प्रभावी कर दिया। विपक्षी गठबंधन 'महाविकास अघाड़ी' के लिए यह समय अपनी रणनीति को पूरी तरह से बदलने का है। नकारात्मक अभियान और केवल सत्ता पक्ष की आलोचना करना मतदाताओं को बूथ तक खींचने के लिए पर्याप्त साबित नहीं हुआ। निष्कर्षतः, महानगरों के ये नतीजे आगामी विधानसभा चुनावों के लिए एक शक्तिशाली 'प्रस्तावना' की तरह हैं। शहरों ने संदेश दे दिया है कि वे केवल नारों पर नहीं, बल्कि धरातल पर दिखने वाले काम पर भरोसा करते हैं। महायुति के लिए यह जीत जितनी बड़ी है, जिम्मेदारी भी उतनी ही विशाल है, क्योंकि बढ़ते शहरीकरण के साथ नागरिक सुविधाओं की उम्मीदें भी बढ़ी हैं। विपक्ष के लिए, यह अपनी जड़ों की ओर लौटने और जनता के बीच नए सिरे से विश्वास पैदा करने का अंतिम अवसर है। आज का जनादेश केवल हार-जीत का आंकड़ा नहीं, बल्कि बदलते भारत की नई शहरी आकांक्षाओं का दस्तावेज है।

# पुरुष नहीं रोते - जब तक बात उनके बच्चे की न हो

सुजाता मुरकर

सोशल वर्कर हैं और सीएसआर के अंतर्गत फंड रेज़िंग का लंबा अनुभव है।

"पुरुष नहीं रोते।"

यह वाक्य हमारे समाज में केवल एक कहावत नहीं, बल्कि एक संस्कार की तरह रचा-बसा है। बचपन से ही लड़कों को यह सिखाया जाता है कि आंसू कमजोरी हैं, भावनाएं नियंत्रण में रहनी चाहिए और कठिन परिस्थितियों में चुप रहकर सह लेना ही मर्दानगी की पहचान है। रोना जैसे स्त्रियों या बच्चों के हिस्से में डाल दिया गया हो। यही कारण है कि पुरुष बड़े होते-होते अपने भीतर भावनाओं की एक दीवार खड़ी कर लेते हैं—मजबूत दिखने की, न टूटने की, हर हाल में संभले रहने की।

लेकिन यह दीवार एक खास मोड़ पर दरक जाती है—जब बात एक पिता के अपने बच्चे की होती है।

अस्पतालों के गलियारों में यह सच्चाई सबसे साफ दिखाई देती है। वहां ऐसे पुरुष मिलते हैं, जो बाहर से मजबूत, संयमित और आत्मविश्वासी दिखते हैं। जो परिवार की जिम्मेदारी अपने कंधों पर उठाए रहते हैं—पालनहार, संरक्षक और निर्णयकर्ता। जो आम हालात में शायद ही कभी अपनी भावनाओं को बाहर आने देते हैं। लेकिन जब उनका बच्चा दर्द में होता है, बीमारी से जूझ रहा होता है या अस्पताल के बिस्तर पर असहाय पड़ा होता है, तब कुछ भीतर से टूट जाता है।

वे पुरुष रोते हैं।

वे बिना किसी संकोच के रोते हैं।

वे इसलिए नहीं रोते कि वे कमजोर हैं, बल्कि इसलिए कि वे पिता हैं।

इन पलों में न सामाजिक अपेक्षाएं काम करती हैं, न सीखी हुई मर्दानगी। कोई पिता बार-बार सवाल करता है—जैसे हर जवाब में एक नई उम्मीद ढूंढ रहा हो। कोई चुपचाप बैठा रहता है, आंखों से बहते आंसुओं को रोक नहीं पाता। कोई खुद को दोषी मानता है, तो कोई खुद को पूरी तरह असहाय महसूस करता है। वहां "मजबूत बने रहो" का पाठ काम नहीं करता। वहां केवल प्रेम बचता है—नंगा, सच्चा और पीड़ादायक।

समाज अक्सर यह गलत मान लेता है कि पुरुष भावनाएं इसलिए दबाते हैं क्योंकि उनके भीतर भावनाएं कम होती हैं। सच्चाई इसके उलट है। पुरुष भावनाएं इसलिए दबाते हैं क्योंकि वे खुद को जिम्मेदार मानते हैं। उन्हें लगता है कि अगर वे टूट गए, तो परिवार का सहारा टूट जाएगा। इसलिए वे अपने डर, अपने दुख और अपने आंसुओं को भीतर ही भीतर दबाते रहते हैं।

जिम्मेदारी पुरुषों पर बोझ की तरह नहीं, बल्कि कर्तव्य की तरह रख दी जाती है। उन्हें सिखाया जाता है कि वे हर हाल में समाधान खोजें, हर संकट को "ठीक" करें। लेकिन बच्चे का दर्द ऐसा संकट है, जिसे कोई तर्क, कोई ताकत और कोई अनुभव ठीक नहीं कर सकता। वहां पिता की सारी भूमिका बिखर जाती है। वह न संरक्षक बन पाता है, न समाधानकर्ता। उस असहायता के सामने आंसू ही एकमात्र भाषा बन जाते हैं।

यह अनुभव केवल अस्पतालों तक सीमित नहीं है। जब बच्चा असफल होता है, टूटता है, अपमानित होता है या जीवन से हारने लगता है—तब भी पिता भीतर से टूटता है। वह बाहर से भले ही शांत दिखे, लेकिन भीतर चल रही लड़ाई बेहद तीखी होती है। कई बार यह दबा हुआ दर्द बाद में गुस्से, चुप्पी या दूरी के रूप में सामने आता है। और कई बार आंसुओं के रूप में। व्यक्तिगत जीवन में भी यही सच्चाई सामने आती है। जब कोई अपने सबसे करीबी को खोता है—मां, पिता या कोई प्रिय—तो वह भी यही सोचता है कि मजबूत बने रहना जरूरी है। लेकिन दुख किसी नियम को नहीं मानता। उसे दबाने से वह खत्म नहीं होता, बल्कि और गहरा हो जाता है। एक समय बाद वह टूटकर बाहर आता है। तब समझ आता है कि रोना कमजोरी नहीं, बल्कि उस प्रेम की स्वाभाविक अभिव्यक्ति है, जिसे शब्दों में नहीं बांधा जा सकता।

पुरुषों के आंसू समाज को असहज करते हैं, क्योंकि वे उस नकाब को उतार देते हैं, जिसे हमने वर्षों से गढ़ रखा है। वे हमें याद दिलाते हैं कि मर्दानगी कोई पत्थर नहीं, बल्कि एक संवेदनशील इंसान की पहचान है। एक ऐसा इंसान, जो प्रेम करता है, डरता है, टूटता है और फिर खुद को संभालने की कोशिश करता है।

आज जरूरत इस सोच को बदलने की है। हमें लड़कों को यह सिखाना होगा कि भावनाएं कमजोरी नहीं होतीं। उन्हें यह भरोसा देना होगा कि रोना शर्म की बात नहीं है। और पुरुषों को यह समझाना होगा कि भावनात्मक ईमानदारी उन्हें कमजोर नहीं, बल्कि अधिक मानवीय बनाती है।

ताकत की परिभाषा अब बदलनी होगी।

ताकत वह नहीं, जो दर्द को छिपा ले।

ताकत वह है, जो दर्द को स्वीकार कर सके।

जब एक पुरुष अपने बच्चे के लिए रोता है, तो वह अपनी जिम्मेदारी से भाग नहीं रहा होता। वह उस जिम्मेदारी को पूरी सच्चाई के साथ निभा रहा होता है। वह उस प्रेम को जाहिर कर रहा होता है, जिसके लिए कोई शब्द पर्याप्त नहीं होते। और शायद यही समाज के लिए सबसे बड़ा सबक है—कि आंसू कमजोरी नहीं,

बल्कि प्रेम और इंसानियत की सबसे मजबूत अभिव्यक्ति हैं।

जीवन मंत्र

मोहन की कहानी यह संदेश देती है कि इंसान की असली ताकत उसके इरादों में होती है। सुविधाएं कम हों या रास्ते कठिन, अगर मन में लगन हो तो कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं रहता। असफलता अंत नहीं, बल्कि सीखने का अवसर होती है।

## सफलता की राह

सफलता हर व्यक्ति का सपना होती है, लेकिन इसे पाने का मार्ग कभी सीधा और सरल नहीं होता। यह रास्ता अक्सर कांटों, संघर्षों और अनगिनत चुनौतियों से भरा होता है। मंजिल तक वही पहुंच पाते हैं जो धैर्य, विश्वास और मेहनत का दामन नहीं छोड़ते। इसी सच्चाई को जीवंत करती है एक साधारण युवक मोहन की कहानी, जिसने परिस्थितियों से हार मानने के बजाय उन्हें बदलने का साहस दिखाया। मोहन एक छोटे से गांव में जन्मा साधारण परिवार का लड़का था। उसके पिता खेती करते थे और परिवार की आमदनी बस इतनी थी कि घर का गुजारा चल सके। बड़े शहरों जैसी सुविधाएं न थीं, न ही पढ़ाई के लिए आधुनिक साधन। कई बार घर की जरूरतें इतनी बढ़ जातीं कि पढ़ाई से ज्यादा रोटी की चिंता सताने लगती। फिर भी मोहन के भीतर एक सपना पल रहा था—कुछ बड़ा करने का, अपने परिवार की तस्वीर बदलने का। वह जानता था कि गरीबी स्थायी नहीं होती, अगर इंसान अपने इरादों को मजबूत कर ले।

स्कूल के दिनों में मोहन कोई चमकता सितारा नहीं था। उसकी गिनती औसत छात्रों में होती थी। गणित उसे कठिन लगता, अंग्रेजी के शब्द उलझा देते और परीक्षा के नतीजे अक्सर उम्मीद से कम रहते। सहपाठी कई बार उसका मजाक उड़ाते, कुछ शिक्षक भी उसे बहुत आगे जाने लायक नहीं मानते थे। लेकिन इन बातों ने मोहन को तोड़ने के बजाय भीतर से और मजबूत बना दिया। उसने तय किया कि दूसरों की राय नहीं, अपनी मेहनत उसका भविष्य तय करेगी। धीरे-धीरे मोहन ने अपनी कमजोरियों को पहचानना शुरू किया। उसने रोज का एक अनुशासन बनाया—सुबह जल्दी उठना, स्कूल के बाद खेत में पिता का हाथ बंटाना और रात को देर तक पढ़ाई करना। जिन विषयों से डर लगता था, उन्हीं से दोस्ती करने लगा। गांव की छोटी सी लाइब्रेरी उसके लिए ज्ञान का मंदिर बन गई। कई बार थकान और निराशा उसे घेर लेती, लेकिन वह मां के शब्द याद करता—मेहनत कभी बेकार नहीं जाती।

समय बीतता गया और मोहन के भीतर आत्मविश्वास की नई रोशनी जगने लगी। जो लड़का कभी असफलताओं से घबराता था, वह अब उन्हें सीढ़ी समझने लगा। उसने एक बड़ी प्रतियोगी परीक्षा देने का निर्णय लिया। तैयारी का दौर आसान नहीं था—कभी किताबें कम पड़तीं, कभी मार्गदर्शन नहीं मिलता, लेकिन मोहन ने हार नहीं मानी। वह जानता था कि यह सिर्फ परीक्षा नहीं, उसके सपनों की कसौटी है।

जीवन ऊर्जा

भय प्रगति का सबसे बड़ा शत्रु है। जो खुद को सुधारता है, वही समाज सुधारता है। आदतें पहले जाल होती हैं, फिर जंजीर। विवेक बिना शिक्षा अधूरी है। स्वतंत्र सोच ही सच्ची संपत्ति है। स्वतंत्रता बिना जिम्मेदारी के टिक नहीं सकती। समझदारी शब्दों में नहीं, कर्मों में दिखती है। अवसर वही पाता है जो तैयार रहता है।

बेंजामिन फ्रैंकलिन : जन्म 17 जनवरी, 1706

जन्म

## स्वतंत्रता बिना जिम्मेदारी के टिक नहीं सकती

बेंजामिन फ्रैंकलिन का जन्म 17 जनवरी 1706 को बोस्टन (अमेरिका) में हुआ था तथा 17 अप्रैल 1790 को फिलाडेल्फिया में उनका निधन हुआ। वे अमेरिका के संस्थापक पिताओं में से एक, महान वैज्ञानिक, दार्शनिक, लेखक, मुद्रक और कुशल राजनयिक थे। बिजली पर किए गए प्रयोगों ने उन्हें विश्वविख्यात बनाया। सार्वजनिक पुस्तकालय, अग्निशमन सेवा और शिक्षा संस्थानों की नींव रखने में उनका योगदान अमूल्य रहा। स्वतंत्रता घोषणा और अमेरिकी संविधान निर्माण में उनकी भूमिका ऐतिहासिक थी। उनका जीवन अनुशासन, परिश्रम और व्यावहारिक बुद्धि का प्रतीक है। समय ही धन है। आज का काम कल पर मत

छोड़ो। ज्ञान में निवेश सबसे अच्छा ब्याज देता है। अनुभव कठोर शिक्षक है, पहले परीक्षा लेता है फिर सबक सिखाता है। आलस्य जंग की तरह है, लोहे से तेज खाता है। छोटी बचत बड़ा धन बनाती है। ईमानदारी सबसे अच्छी नीति है। परिश्रम भाग्य को भी पीछे छोड़ देता है। अनुशासन स्वतंत्रता की नींव है। चरित्र वही है, जो आप अकेले में होते हैं। धन अच्छा सेवक है, बुरा मालिक। जो सीखना छोड़ देता है, वह बूढ़ा हो जाता है। अवसर मेहनती को ही पहचानता है। आत्मनियंत्रण ही सच्ची शक्ति है। गलतियां शिक्षक हैं, शत्रु नहीं। सादगी महानता की पहचान है। योजना के बिना सफलता संयोग है। समझदार कम बोलता है, ज्यादा करता है। समय बर्बाद करने वाला जीवन बर्बाद करता है। ज्ञान साझा करने से बढ़ता है। धैर्य और परिश्रम असंभव को संभव बनाते हैं। भय प्रगति का सबसे बड़ा शत्रु है। जो खुद को सुधारता है, वही समाज सुधारता है। आदतें पहले जाल होती हैं, फिर जंजीर। विवेक बिना शिक्षा अधूरी है। स्वतंत्र सोच ही सच्ची संपत्ति है। स्वतंत्रता बिना जिम्मेदारी के टिक नहीं सकती। समझदारी शब्दों में नहीं, कर्मों में दिखती है।

अपने विचार

, 'उद्धव ठाकरे को अपना स्क्रिप्ट राइटर बदलना चाहिए और कोई नया बहाना ढूंढना चाहिए। हार-जीत का फैसला जनता करती है। संदेश यह है कि जो लोग जमीन पर काम करते हैं, उन्हें मौका मिलता है। जो घर से काम करते हैं, उन्हें घर पर ही रहना पड़ता है।

-शाइना एनसी
नेता, शिवसेना (शिंदे)

हजारों लोगों के नाम, जिन्होंने विधानसभा चुनावों में भी वोट दिया था, वोटर लिस्ट से गायब हैं। यह खास तौर पर उन इलाकों में हो रहा है जहां शिवसेना (UBT), एमएनएस या कांग्रेस के वोट ज़्यादा हैं। इ कई पोलिंग बूथ पर EVM खराब थे। रजहां NCP के लिए वोट बटन दबाया गया, वहां BJP की लाइट जल गई।

-संजय राउत
नेता, शिवसेना (यूबीटी)

भगवंत मान ऑस्ट्रेलिया में लाखों रुपए जमा कर रहे हैं। वह शराब पीकर गुरुद्वारों, मंदिरों, सरकारी बैठकों और संसद में जाते हैं। जो व्यक्ति अपनी सरकार में चोरों और गुंडों को पद देता है, वही अब पवित्र श्री अकाल तख्त पर घृणित बयान दे रहा है। यह बेशर्मी की पराकाष्ठा है, यह कलियुग का सबसे अंधकारमय दौर है।

-स्वाति मालीवाल
राज्यसभा सांसद

भाजपा शासित राज्यों में प्रवासी मजदूरों को बांग्ला भाषा बोलने के कारण प्रताड़ित किया जा रहा है। भाजपा राज्य में दंगे भड़काने की साजिश रच रही है, क्योंकि उसे एहसास हो गया है कि वह 2026 का विधानसभा चुनाव नहीं जीत पाएगी। अल्पसंख्यक समुदाय का गुस्सा जायज है।

-ममता बनर्जी,
सीएम, पश्चिम बंगाल

अपने विचार

डीबीडी कार्यालय

ग्राउंड फ्लोर, ऑफिस नं. 2, के.के. चैम्बर्स, पुरुषोत्तमदास ठाकरदास रोड, फोर्ट, मुंबई- 400001

indiagroundreport@gmail.com

भेज सकते हैं।

शख्सियत

मुहम्मद अली

## मुक्केबाजी से आगे इंसानियत और साहस की मिसाल

मुहम्मद अली केवल एक महान मुक्केबाज नहीं थे, वे साहस, आत्मसम्मान और मानवीय मूल्यों के जीवंत प्रतीक थे। उनका जन्म 17 जनवरी 1942 को अमेरिका के लुइसविल, केंटकी में कैसियस मार्सेलस क्ले जूनियर के रूप में हुआ। आगे चलकर उन्होंने इस्लाम धर्म स्वीकार किया और अपना नाम मुहम्मद अली रखा। यह बदलाव केवल नाम का नहीं था, बल्कि उनकी सोच, संघर्ष और जीवन-दृष्टि का भी प्रतीक था।

मुहम्मद अली का बचपन साधारण था, लेकिन आत्मविश्वास असाधारण। एक बार उनकी साइकिल चोरी हो गई। पुलिस अधिकारी जो मार्टिन से शिकायत करते समय उन्होंने कहा कि वे चोर को मार देंगे। अधिकारी ने सलाह दी कि पहले बॉक्सिंग सीखो। यही घटना उनके जीवन की दिशा बदलने वाली साबित हुई। कड़ी मेहनत, अनुशासन और अदम्य विश्वास के बल पर उन्होंने मुक्केबाजी की दुनिया में कदम रखा। 1960 के रोम ओलंपिक में उन्होंने स्वर्ण पदक जीतकर विश्व का ध्यान अपनी ओर खींचा। इसके बाद प्रोफेशनल बॉक्सिंग में उन्होंने लगातार जीत दर्ज की और 22 वर्ष की उम्र में विश्व हैवीवेट चैंपियन बने। उनकी फुर्ती, अनोखी शैली और आत्मविश्वास ने खेल की परिभाषा ही बदल दी। वे कहते थे, "मैं तितली की तरह उड़ता हूं और मधुमक्खी की तरह डंक मारता हूं।" यह केवल एक कथन नहीं, बल्कि उनकी खेल शैली का सटीक वर्णन था। हालांकि मुहम्मद अली की महानता रिंग तक सीमित नहीं रही। 1967 में जब अमेरिका वियतनाम युद्ध में शामिल था, तब उन्होंने सेना में भर्ती होने से इनकार कर दिया। उन्होंने स्पष्ट कहा कि उनका किसी निर्दोष से कोई झगड़ा नहीं है। इस फैसले के कारण उनसे उनका खिताब छीन लिया गया, बॉक्सिंग पर प्रतिबंध लगा और उन्हें कानूनी लड़ाइयों का सामना करना पड़ा। यह उनके करियर का सबसे कठिन दौर था, लेकिन उन्होंने अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं किया।

कई वर्षों के संघर्ष के बाद उन्होंने रिंग में वापसी की और 1974 में जॉर्ज फोरमैन को हराकर एक बार फिर विश्व चैंपियन बने। यह जीत केवल खेल की नहीं, बल्कि धैर्य, विश्वास और आत्मबल की विजय थी। मुहम्मद अली ने यह सिद्ध कर दिया कि सच्ची जीत वही होती है, जो आत्मसम्मान के साथ हासिल की जाए। जीवन के उत्तरार्ध में वे पार्किंसन रोग से पीड़ित हुए। बीमारी ने उनके शरीर को कमजोर किया, लेकिन उनका हौसला कभी नहीं टूटा। वे शांति, मानवता और करुणा के संदेशवाहक बने।

सर्वसिद्ध श्री बगलामुखी तारा महाशक्ति पीठ बिजाना शाजापुर मध्यप्रदेश

## समर्पण की भक्ति और भगवान की उपस्थिति

भारतीय भक्ति परंपरा केवल पूजा-पाठ या कर्मकांडों का संग्रह नहीं है, वह मनुष्य के भीतर घटने वाली एक गहरी क्रांति है। संतों ने बार-बार कहा है कि ईश्वर तर्कों से नहीं, प्रेम से मिलते हैं; शब्दों से नहीं, समर्पण से प्रकट होते हैं। जब मनुष्य अपना "मैं" छोड़ देता है, तब परमात्मा उसके जीवन का आधार बन जाते हैं। इसी सत्य को उजागर करती दो मार्मिक कथाएं

पंडित कैलाशचंद्र शर्मा
वैदिक सनातन संस्कृति के प्रचारक व सर्व सिद्ध श्री बगलामुखी तारा महाशक्ति पीठ के संस्थापक।
मो. नं. 9425980556

सदियों से लोकमन में जीवित हैं। कहा जाता है कि एक बार भगवान श्रीकृष्ण स्वयं अपने एक भक्त के घर पधारे। वह भक्त अत्यंत सरल स्वभाव का था, न उसमें विद्वता का अभिमान था, न धन का घमंड। कृष्ण ने मुस्कुराते हुए उससे पूछा, "यह घर किसका है?" भक्त ने बिना सोचे उत्तर दिया, "प्रभु, आपका।" भगवान ने फिर पूछा, "यह गाड़ी, यह आंगन, यह अनाज किसका है?" भक्त हर बार एक ही बात दोहराता रहा—"सब आपका है प्रभु।" यहां तक कि जब परिवार के सदस्यों और स्वयं उसके शरीर के बारे में पूछा गया, तब भी उत्तर वही था—"आपका।"

भगवान यह सब सुनकर मुस्कुराते रहे। अंत में वे पूजा कक्ष में पहुंचे, जहां दीवार पर श्रीकृष्ण की एक छोटी सी तस्वीर लगी थी। उन्होंने उसी ओर संकेत कर पूछा, "और यह किसकी है?" यह सुनते ही भक्त की आंखें भर आईं। उसका कंठ अवरुद्ध हो गया। बड़ी कठिनाई से उसने कहा, "प्रभु, बस यही मेरा है बाकी सब आपका है।" उस एक वाक्य में भक्ति की पूरी गहराई समा गई। भक्त ने संसार की हर वस्तु भगवान को सौंप दी थी, पर भगवान की स्मृति, उनका प्रेम, उनका रूप—उसे वह अपने हृदय की निजी निधि मानता था। यही सच्चा समर्पण है, जिसमें मनुष्य संसार से भागता नहीं, बल्कि संसार को ही ईश्वरमय बना देता है।

ऐसी ही एक दूसरी कथा एक साधारण किसान रामदास की है। वह न शास्त्र जानता था, न बड़े मंत्र। उसके पास केवल विश्वास था—निष्कपट और अडिग। रोज भोर में वह मिट्टी की छोटी सी कृष्ण मूर्ति के सामने बैठता और कहता, "कान्हा, आज भी मेरे साथ खेत चलना।" गांव वाले उसका उपहास उड़ाते। उन्हें लगता कि यह सीधा-सादा आदमी कल्पनाओं में जीता है। पर रामदास मुस्कुरा कर बस इतना कहता, "जो मेरे साथ दुख में खड़ा रहे, वही मेरा भगवान है।" एक वर्ष ऐसा भयानक सूखा पड़ा कि पूरे इलाके की फसलें बर्बाद हो गईं। लोग दाने-दाने को तरसने लगे। लेकिन आश्चर्य की बात यह थी कि रामदास के खेत में हरियाली लहलहा रही थी। गांव के लोग चकित रह गए। मुखिया ने पूछा, "यह चमत्कार कैसे हुआ?" रामदास ने सहजता से कहा, "मैं अकेला नहीं था, कान्हा मेरे साथ हल चलाते थे।"

लोगों ने इसे उसकी भोली कल्पना समझा। पर उसी रात कई ग्रामीणों ने स्वप्न में देखा कि नीले वस्त्र पहने एक बालक रामदास के खेत में काम कर रहा है। अगली सुबह सबका हृदय बदल चुका था। वे समझ गए कि जहां सच्चा भरोसा होता है, वहां भगवान स्वयं उतर आते हैं। रामदास ने विनम्र स्वर में कहा, "मैं कोई बड़ा भक्त नहीं हूं, पर जिसने अपना भार भगवान को सौंप दिया, उसका भार भगवान स्वयं उठा लेते हैं।"

इन कथाओं में कोई बाहरी चमत्कार नहीं, भीतर का प्रकाश है। भक्ति का अर्थ प्रदर्शन नहीं, भरोसा है; अधिकार नहीं, समर्पण है। जब मनुष्य अहंकार, भय और स्वामित्व की जंजीरें तोड़ देता है, तब उसका जीवन प्रार्थना बन जाता है। ईश्वर उसी हृदय में बसते हैं जो खाली हो, सरल हो और प्रेम से भरा हो। यही भक्ति का शाश्वत संदेश है—जो स्वयं को दे देता है, वही सब कुछ पा लेता है।

यह अखबार "माध्यम कार्पोरेट सर्विसेज लि. " के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक अरुण लाल द्वारा ग्राउंड फ्लोर, ऑफिस नं. 2, के. के. चैम्बर्स, पुरुषोत्तमदास ठाकरदास रोड, फोर्ट, मुंबई- 400001 से प्रकाशित एवं सोमानी प्रिंटिंग प्रेस, गाला नं. 4, एन.के.इंडस्ट्रियल इस्टेट, इनसाइड प्रवासी इंडिस्ट्रयल इस्टेट गेट नं. 2, गोरेगांव पू., मुंबई-63 से मुद्रित. फोन नं. 022-66555719 ईमेल : indiagroundreport@gmail.com कार्यकारी संपादक : अमित बृज (पी.आर.बी. अधिनियम के अंतर्गत खबरों के चयन के लिए ज्मिेदार).

# मराठवाड़ा की पांच महानगरपालिकाओं में तीन पर बीजेपी का कब्जा

## ▸▸ लातूर में कांग्रेस ने प्राप्त किया स्पष्ट बहुमत

## ▸▸ परभणी में शिवसेना यूबीटी सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी

**मराठवाड़ा की पांच महानगरपालिकाओं के चुनाव परिणाम अपेक्षानुसार सामने आए हैं। छत्रपति संभाजीनगर, जालना और नांदेड़ महानगरपालिकाओं में भारतीय जनता पार्टी ने एकतरफा जीत दर्ज करते हुए सत्ता पर कब्जा जमाया है। वहीं लातूर में कांग्रेस ने स्पष्ट बहुमत प्राप्त किया है, जबकि परभणी में शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे) सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है, हालांकि बहुमत के लिए उसे कांग्रेस के समर्थन की आवश्यकता होगी।**

## छत्रपति संभाजीनगर महानगरपालिका में बीजेपी बना बड़ा भाई

नगर निगम चुनाव में भाजपा ने 115 में से 56 सीटें जीतकर शिवसेना को यह स्पष्ट संदेश दिया है कि संभाजीनगर में अब वही "बड़ा भाई" है। AIMIM ने 33 सीटें जीतकर नगर निगम में दूसरी सबसे बड़ी पार्टी का स्थान हासिल किया है, जबकि शिंदे गुट की शिवसेना तीसरे नंबर पर खिसक गई है और उसे केवल 14 सीटों पर संतोष करना पड़ा है। नगर निगम चुनाव में सीट शेयरिंग को लेकर शिवसेना और भाजपा के बीच गठबंधन आखिरी समय में टूट गया था। छत्रपति

संभाजीनगर को लंबे समय से शिवसेना का गढ़ माना जाता रहा है। 1988 से हुए नगर निगम चुनावों में शिवसेना का दबदबा रहा, जबकि पहले चुनाव में भाजपा अपना खाता भी नहीं खोल पाई थी। हालांकि, 38 साल बाद भाजपा ने 56 सीटें जीतकर पहला स्थान हासिल कर लिया, जबकि शिवसेना 29 सीटों से गिरकर महज 12 सीटों पर सिमट गई। इन नतीजों से साफ हो गया है कि भाजपा ने शिवसेना के पारंपरिक गढ़ में अपनी मजबूत पकड़ बना ली है।

---

नांदेड़ में अशोक पर्व

# भाजपा का 'कमल' खिला 45 सीटों पर जीत दर्ज की

## ▸▸ कांग्रेस के वर्चस्व का अंत, 73 से सीधे 13 सीटों पर सिमटी

## ▸▸ AIMIM बनी दूसरी सबसे बड़ी शक्ति

डीबीडी संवाददाता । नांदेड़

नांदेड़-वाघाला महानगरपालिका चुनाव के आधिकारिक परिणामों ने महाराष्ट्र की राजनीति में एक बड़ा भूचाल ला दिया है। शुक्रवार को घोषित नतीजों में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने ऐतिहासिक प्रदर्शन करते हुए स्पष्ट बहुमत हासिल कर लिया है। कुल 81 सीटों वाली इस महानगरपालिका में भाजपा ने 45 सीटों पर जीत दर्ज की है, जो सत्ता के जादुई आंकड़े (41) से कहीं अधिक है। इस जीत के साथ ही नांदेड़ में वर्षों से चले आ रहे कांग्रेस के वर्चस्व का अंत हो गया है और भाजपा अपने दम पर सत्ता की कमान संभालने के लिए तैयार है।

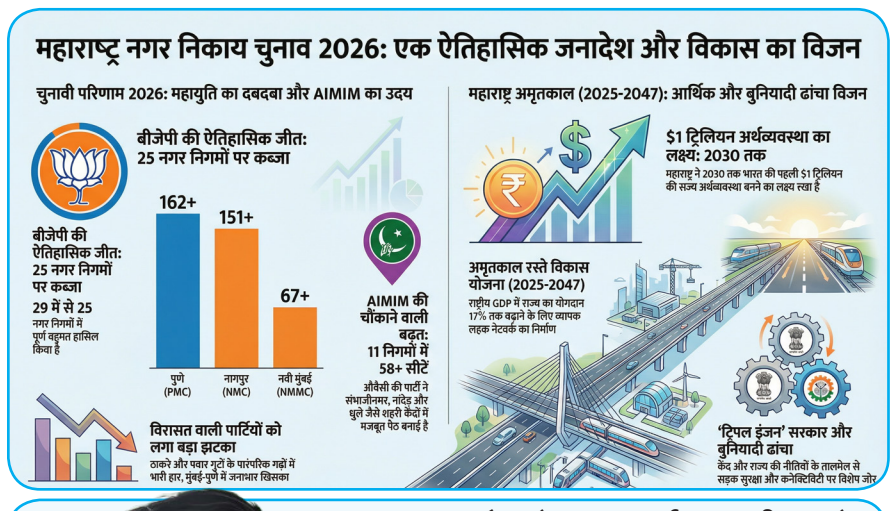


### 73 से सीधे 13 सीटों पर सिमटी

नांदेड़, जो कभी कांग्रेस का अभेद्य किला माना जाता था, वहां पार्टी को अपनी सबसे शर्मनाक हार का सामना करना पड़ा है। पिछले चुनाव में 73 सीटें जीतने वाली कांग्रेस इस बार महज 13 सीटों पर सिमट कर तीसरे स्थान पर खिसक गई है। वरिष्ठ नेताओं के बीच समन्वय की कमी और स्थानीय स्तर पर सत्ता विरोधी लहर ने पार्टी को इस कदर नुकसान पहुँचाया कि वह मुख्य विपक्ष की भूमिका से भी नीचे गिर गई है।

### अशोक चव्हाण का राजनीतिक कद और प्रतिष्ठा की जीत

यह चुनाव पूर्व मुख्यमंत्री और वरिष्ठ भाजपा नेता अशोक चव्हाण के लिए प्रतिष्ठा की लड़ाई था। भाजपा में शामिल होने के बाद यह उनके लिए अपनी जमीन साबित करने का पहला बड़ा अवसर था। परिणामों ने स्पष्ट कर दिया है कि अशोक चव्हाण का नांदेड़ की राजनीति पर प्रभाव आज भी कायम है। उनके कुशल रणनीतिक कौशल और भाजपा के संगठनात्मक ढांचे के मेल ने नांदेड़ के राजनीतिक मानचित्र को पूरी

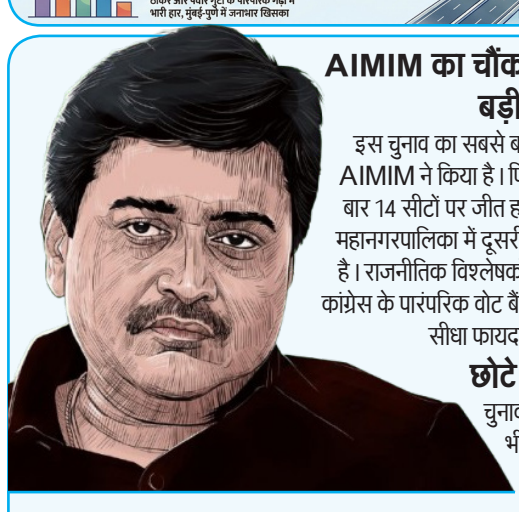

### AIMIM का चौंकाने वाला प्रदर्शन: दूसरी सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी

इस चुनाव का सबसे बड़ा उलटफेर असदुद्दीन ओवैसी के नेतृत्व वाली AIMIM ने किया है। पिछली बार शून्य पर रहने वाली AIMIM ने इस बार 14 सीटों पर जीत हासिल कर सबको हैरत में डाल दिया। पार्टी अब महानगरपालिका में दूसरी सबसे बड़ी राजनीतिक शक्ति के रूप में उभरी है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि अल्पसंख्यक बहुल क्षेत्रों में कांग्रेस के पारंपरिक वोट बैंक में AIMIM ने बड़ी सेंध लगाई है, जिसका सीधा फायदा पार्टी को सीटों के रूप में मिला है।

### छोटे दलों और निर्दलीयों की स्थिति

चुनाव परिणामों में वंचित बहुजन आघाड़ी (VBA) ने भी अपनी मौजूदगी दर्ज कराई है। पहली बार मैदान में उतरी VBA ने 5 सीटों पर जीत हासिल की। वहीं, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (NCP) को केवल 2 सीटों से संतोष करना पड़ा। इस चुनाव में 'नांदेड़ शहर विकास आघाड़ी' और 'मराठवाड़ा जनता पार्टी' जैसे नए स्थानीय गुटों का पूरी तरह सफाया हो गया है, जिससे यह स्पष्ट है कि मतदाताओं ने स्थापित और मजबूत विकल्पों को ही प्राथमिकता दी है।

### विजयी उम्मीदवारों की झलक और राजनीतिक समीकरण

भाजपा की ओर से सरस्वती राऊत, ज्योति कल्याणकर, सुहास कल्याणकर और योगेश मुंडे जैसे प्रमुख उम्मीदवारों ने जीत दर्ज की। कांग्रेस से वालुभाई खोकेवाल और सावेर चाऊस नासेर जैसे नेता अपनी सीट बचाने में सफल रहे। निर्दलीय के रूप में मीनल पाटिल ने भी जीत का परचम लहराया। पाटिल ने स्पष्ट किया है कि वे अपना समर्थन मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाले समूह को देंगी, जिससे स्थानीय स्तर पर महायुति और अधिक मजबूत होगी।

### जनता का विश्वास ही मेरी पूंजी: अशोक चव्हाण

जीत के बाद प्रतिक्रिया देते हुए सांसद अशोक चव्हाण ने कहा, ₹नांदेड़ की जनता ने मुझ पर और भारतीय जनता पार्टी की विकासवादी नीतियों पर अटूट भरोसा जताया है। विरोधियों ने भ्रामक प्रचार के जरिए हमें रोकने की कोशिश की, लेकिन मतदाताओं ने स्पष्ट बहुमत देकर उन सभी साजिशों का जवाब दे दिया है।₹ उन्होंने विश्वास दिलाया कि अब नांदेड़ के विकास में कोई बाधा नहीं आएगी।

### अल्पसंख्यक वोटों का ध्रुवीकरण और विपक्ष की विफलता

राजनीतिक जानकारों के अनुसार, कांग्रेस की हार का एक बड़ा कारण मुस्लिम वोटों का विभाजन रहा। जहाँ पहले ये वोट कांग्रेस के पक्ष में एकजुट रहते थे, इस बार वे AIMIM की ओर मुड़ गए। इसके अलावा, वंचित बहुजन आघाड़ी ने भी दलित और पिछड़े वर्गों के वोटों में हिस्सेदारी की, जिससे कांग्रेस का समीकरण पूरी तरह बिगड़ गया। विपक्ष एकजुट होकर भाजपा की रणनीति का मुकाबला करने में विफल रहा।

### ट्रिपल इंजन सरकार से विकास को मिलेगी गति: डॉ. अजित गोपछडे

भाजपा सांसद डॉ. अजित गोपछडे ने जीत का श्रेय सामूहिक प्रयासों को दिया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी, मुख्यमंत्री फडणवीस और अशोक चव्हाण के नेतृत्व में नांदेड़ अब विकास की नई ऊंचाइयों को छुएगा। उन्होंने 'ट्रिपल इंजन' (केंद्र, राज्य और महानगरपालिका) सरकार का हवाला देते हुए कहा कि अगले पांच वर्षों में शहर की बुनियादी सुविधाओं और बुनियादी ढांचे का कायाकल्प किया जाएगा।

---

परभणी महानगरपालिका

# सुनामी में भी बचा रहा उद्धव ठाकरे की शिवसेना का मजबूत गढ़

परभणी नगर निगम चुनाव 2026 के नतीजों ने यह स्पष्ट कर दिया है कि यह शहर अभी भी उद्धव ठाकरे की शिवसेना का मजबूत गढ़ है। पार्टी ने कुल 65 सीटों में से 25 सीटों पर शानदार जीत हासिल की है। पार्टी के स्थानीय नेतृत्व और कार्यकर्ताओं की वफादारी इस जीत का सबसे बड़ा आधार बनी, जिससे शिवसेना (UBT) सदन में सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है।

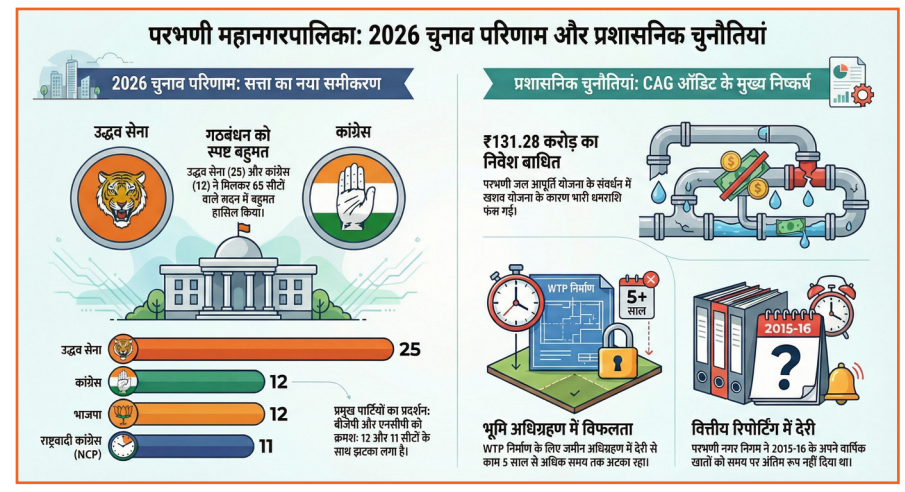


### प्रमुख विजयी चेहरे और नए समीकरण

नतीजों में कई पुराने और नए चेहरों ने अपनी जगह बनाई है। भाजपा के टिकट पर पूर्व महापौर मीनाताई वरपुडकर ने जीत हासिल की। वहीं, कांग्रेस के भगवानराव वाघमारे और शिवसेना (UBT) के उद्धव बालासाहेब ठाकरे (वार्ड 8) विजयी रहे। पूर्व विधायक सुरेश देशमुख के पुत्र गणेश देशमुख और पूर्व मंत्री रावसाहेब जामकर के पुत्र विजय जामकर जैसे बड़े राजनीतिक परिवारों के वारिसों ने भी जीत दर्ज कर अपनी राजनीतिक विरासत को आगे बढ़ाया है।

### कांग्रेस ने 12 सीटों पर जीत दर्ज की

इस चुनाव में शिवसेना (UBT) और कांग्रेस का चुनाव पूर्व गठबंधन गेम-चेंजर साबित हुआ। कांग्रेस ने 12 सीटों पर जीत दर्ज की है। शिवसेना (UBT) की 25 और कांग्रेस की 12 सीटों को मिलाकर गठबंधन का कुल आंकड़ा 37 तक पहुँच जाता है, जो बहुमत के लिए आवश्यक 33 सीटों के आंकड़े से अधिक है। इस गठबंधन ने शहर में सत्ता स्थापना का मार्ग पूरी तरह साफ कर दिया है।

### भाजपा और सत्ताधारी गठबंधन को झटका

राज्य में हावी दिख रही भारतीय जनता पार्टी को परभणी में कड़ा संघर्ष करना पड़ा। भाजपा को केवल 12 सीटों से ही संतोष करना पड़ा। पूर्व मंत्री सुरेश वरपुडकर के भाजपा में शामिल होने के बावजूद पार्टी को अपेक्षित लाभ नहीं मिला। इसके अलावा, एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना अपना खाता खोलने में भी विफल रही, जो सत्ताधारी गठबंधन के लिए एक बड़ा संकेत है।

### स्थानीय नेतृत्व और आपसी एकजुटता

शिवसेना (UBT) की इस जीत के पीछे सांसद संजय जाधव और विधायक राहुल पाटिल की रणनीतिक भूमिका रही। पिछले कुछ समय से दोनों नेताओं के बीच चल रहे मतभेदों के सुलझने से कार्यकर्ताओं में सकारात्मक संदेश गया। चुनाव प्रचार के दौरान दोनों ने एकजुट होकर काम किया, जिसका सीधा असर चुनावी नतीजों पर दिखा। साथ ही, मुस्लिम समुदाय का शिवसेना को मिला निर्णायक समर्थन भी जीत का बड़ा कारण बना।

### अन्य दलों की स्थिति और प्रभाव

अजीत पवार की राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (NCP) ने 10 सीटों पर जीत दर्ज कर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। जनसूर्य पार्टी को 4, यशवंत सेना को 1 और 1 निर्दलीय उम्मीदवार को सफलता मिली है। हालांकि इन दलों का प्रदर्शन बहुत बड़ा नहीं रहा, लेकिन आने वाले समय में नगर निगम के कामकाज और समितियों के गठन में इनकी भूमिका महत्वपूर्ण हो सकती है।

---

लातूर महानगरपालिका

# विलासराव की विरासत पर जनता की मुहर

## ▸▸ कांग्रेस–वंचित की ऐतिहासिक जीत, भाजपा को जोरदार झटका

डीबीडी संवाददाता । लातूर

लातूर महानगरपालिका चुनाव में कांग्रेस और वंचित बहुजन आघाड़ी (VBA) ने मिलकर एक ऐतिहासिक जीत दर्ज की है, जिसने शहर की राजनीति का चेहरा बदल दिया है। यह चुनाव परिणाम केवल एक राजनीतिक जीत नहीं है, बल्कि स्वर्गीय नेता विलासराव देशमुख की विरासत पर जनता की अटूट श्रद्धा की पुनः पुष्टि है। मतदाताओं ने विकास और पुरानी यादों के मिश्रण को चुनकर भारतीय जनता पार्टी के दावों को पूरी तरह नकार दिया है।

### सीटों का गणित: कांग्रेस को स्पष्ट बहुमत

70 सदस्यीय लातूर महानगरपालिका में कांग्रेस ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 43 सीटों पर कब्जा किया और स्पष्ट बहुमत हासिल किया। कांग्रेस की सहयोगी वंचित बहुजन आघाड़ी ने भी अपनी ताकत दिखाई और चुनाव लड़ी गई 5 में से 4 सीटों पर जीत दर्ज की। दूसरी ओर, भाजपा को करारा झटका लगा और वह महज 22 सीटों पर सिमट गई। अन्य दलों में राष्ट्रवादी कांग्रेस (अजित पवार गुट) को केवल 1 सीट मिली, जबकि शरद पवार गुट और शिवसेना के दोनों गुटों का खाता भी मुश्किल से खुल पाया।

### अमित देशमुख की रणनीति और मजबूत पकड़

इस चुनाव की सबसे बड़ी विशेषता विधायक अमित देशमुख का नेतृत्व रहा। उन्होंने किसी बड़े केंद्रीय या राज्यस्तरीय नेता का सहारा लिए बिना पूरी चुनावी कमान अकेले अपने कंधों पर संभाली। जमीनी स्तर पर कार्यकर्ताओं को एकजुट रखना और स्थानीय मुद्दों को प्राथमिकता देना उनकी सफलता की कुंजी रही। इन परिणामों ने एक बार फिर यह सिद्ध कर दिया है कि लातूर आज भी देशमुख परिवार और कांग्रेस का अभेद्य किला है।

### मुख्यमंत्री की सभाएं और भाजपा की विफलता

भाजपा ने सत्ता पाने के लिए अपनी पूरी मशीनरी लगा दी थी। स्वयं मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने शहर में कई बड़ी जनसभाएं कीं और पार्टी के संगठनात्मक ढांचे ने घर-घर जाकर प्रचार किया। इसके बावजूद, जनता ने भाजपा और उनके सहयोगी अजित पवार गुट की नीतियों को स्वीकार नहीं किया। मुख्यमंत्री का प्रभाव और भाजपा की सांगठनिक शक्ति भी अमित देशमुख की स्थानीय रणनीति और जनता के भावनात्मक जुड़ाव के सामने फीकी साबित हुई।

### भाजपा का विवादित बयान और जनता का आक्रोश

इस चुनाव में भाजपा के लिए सबसे बड़ा 'टर्निंग पॉइंट' उनके प्रदेश अध्यक्ष रविंद्र चव्हाण का वह बयान रहा, जिसमें उन्होंने विलासराव देशमुख की यादें मिटा देनेर की बात कही थी। लातूर की जनता के लिए विलासराव देशमुख केवल एक नेता नहीं बल्कि एक भावना हैं। कांग्रेस ने इस बयान को भावनात्मक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया और आक्रामक प्रचार किया। नतीजतन, मतदाताओं ने अपमान का बदला वोट की चोट से देकर भाजपा को पीछे धकेल दिया।

---

# जालना महानगरपालिका में बीजेपी का कब्जा

## 65 सीटों में से 41 सीटें जीतकर भाजपा ने पहली बार स्पष्ट बहुमत प्राप्त की

डीबीडी संवाददाता । जालना

स्टील और बीज उद्योगों के लिए प्रसिद्ध जालना शहर में भाजपा ने अभूतपूर्व सफलता हासिल की है। कुल 65 सीटों में से 41 सीटें जीतकर भाजपा ने पहली बार इस महानगरपालिका में स्पष्ट बहुमत प्राप्त किया है। पार्टी की इस जीत ने न केवल स्थानीय स्तर पर उसकी पकड़ मजबूत की है, बल्कि विपक्ष के किलों को भी पूरी तरह ध्वस्त कर दिया है।

### विपक्ष और क्षेत्रीय दलों का सूपड़ा साफ

उद्धव ठाकरे की शिवसेना (UBT), शरद पवार की राकांपा और प्रकाश आंबेडकर की वंचित बहुजन आघाड़ी (VBA) के लिए यह चुनाव बेहद निराशाजनक रहा। शिवसेना (UBT) और VBA एक भी सीट जीतने में नाकाम रहे। वहीं, असदुद्दीन ओवैसी की पार्टी AIMIM ने 17 सीटों पर चुनाव लड़कर 2 सीटों पर जीत हासिल की, जो अल्पसंख्यक बहुल क्षेत्रों में उनकी सीमित उपस्थिति को दर्शाता है।

### कांग्रेस के गढ़ का पतन

जालना महानगरपालिका बनने से पहले यहाँ की नगर परिषद पर लंबे समय तक कांग्रेस का वर्चस्व रहा था। लेकिन इस बार कांग्रेस को करारा झटका लगा और वह महज 9 सीटों पर सिमट गई। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि कद्दावर नेता कैलाश गोरंत्याल के कांग्रेस छोड़कर भाजपा में शामिल होने और स्पष्ट स्थानीय नेतृत्व के अभाव के कारण पार्टी को इस दुर्गति का सामना करना पड़ा।

### प्रतिष्ठा की लड़ाई और खोटकर-गोरंत्याल फैक्टर

यह चुनाव शिवसेना विधायक अर्जुन खोटकर और भाजपा के कैलाश गोरंत्याल के बीच व्यक्तिगत प्रतिष्ठा की लड़ाई बन गया था। नतीजों में दोनों ही परिवारों का दबदबा दिखा; जहाँ कैलाश गोरंत्याल की पत्नी संगीता और पुत्र अक्षय विजयी हुए, वहीं अर्जुन खोटकर की पुत्री दर्शना खोटकर ने भी जीत दर्ज की। हालाँकि, सांगठनिक तौर पर भाजपा, शिंदे नीत शिवसेना (12 सीटें) से काफी आगे निकल गई।

### भाजपा की सोशल इंजीनियरिंग और मुस्लिम उम्मीदवार

भाजपा ने इस चुनाव में अल्पसंख्यक मतों को साधने के लिए एक नई रणनीति अपनाई। पार्टी ने चार मुस्लिम उम्मीदवारों को टिकट दिया, जिससे अल्पसंख्यक वोटों का ध्रुवीकरण रुक गया और वोट बंट गए। इस प्रयोग में भाजपा के मजहर सैयद विजयी रहे, जो भाजपा की बदलती समावेशी चुनावी रणनीति का एक महत्वपूर्ण संकेत है।

### चर्चित चेहरे और निर्दलीय की जीत

इन नतीजों में सबसे चौंकाने वाला नाम श्रीकांत पंगारकर का रहा, जो गौरी लंकेश हत्याकांड में आरोपी हैं। पंगारकर ने वार्ड संख्या 13 से निर्दलीय चुनाव लड़ते हुए भाजपा के आधिकारिक उम्मीदवार रावसाहेब धोबले को हराकर सबको हैरान कर दिया। इसके अलावा, दानवे परिवार का प्रभाव भी बरकरार रहा और पूर्व केंद्रीय मंत्री रावसाहेब दानवे के चचेरे भाई भास्कर दानवे और उनकी पत्नी सुशीला दानवे ने जीत हासिल की।

न्यूज़ ब्रीफ

### माघ मेला : डीएम के रिश्तेदार की झुलसकर मौत

प्रयागराज। माघ मेला क्षेत्र के सेक्टर-5 में गुरुवार रात एक शिविर में अचानक लगी आग ने एक युवक की जान ले ली। हादसे में गंभीर रूप से झुलसे मानस मिश्रा (35) की उपचार के दौरान मौत हो गई। मृतक मुजफ्फरनगर के जिलाधिकारी उमेश मिश्रा के रिश्तेदार बताए जा रहे हैं। पुलिस के अनुसार देर रात शिविर में आग लगने की सूचना मिलते ही दमकल की गाड़ियां मौके पर पहुंचीं और आग पर काबू पा लिया गया। आग की चपेट में आने से प्रयागराज के सराय इनायत थाना क्षेत्र स्थित लीलापुर गांव निवासी मानस मिश्रा गंभीर रूप से झुलस गए थे। उन्हें तत्काल स्वरूपरानी नेहरू चिकित्सालय में भर्ती कराया गया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। घटना की जानकारी मिलते ही परिजन अस्पताल पहुंचे। पुलिस ने आवश्यक कानूनी कार्रवाई पूरी करते हुए शुक्रवार को पोस्टमार्टम कराया और शव परिजनों को सौंप दिया। आग लगने के कारणों की जांच की जा रही है।

### रिश्वत लेते पशुपालन विभाग का लिपिक गिरफ्तार

बागपत। बागपत जिले में एंटी करप्शन टीम ने पशुपालन विभाग के एक लिपिक को अनुदान पास कराने के नाम पर रिश्वत लेते हुए गिरफ्तार किया है। आरोपी लिपिक को पांच हजार रुपये लेते समय रंगेहाथ पकड़ा गया। जानकारी के अनुसार बरनावा गांव निवासी सतीश वाल्मीकि ने बकरी पालन योजना के तहत अनुदान प्राप्त किया था। इसके बाद विभागीय लिपिक द्वारा अतिरिक्त भुगतान की मांग की जा रही थी। पीड़ित की शिकायत पर एंटी करप्शन टीम ने जाल बिछाकर लिपिक अश्वनी कुमार को रिश्वत लेते दबोच लिया। आरोपी को कोतवाली बागपत लाया गया, जहां उसके खिलाफ मुकदमा दर्ज कर आगे की विधिक कार्रवाई की जा रही है।

### एक्सप्रेसवे पर बस हादसा, महाराष्ट्र के सात श्रद्धालु घायल

फिरोजाबाद। आगरा–लखनऊ एक्सप्रेसवे पर शुक्रवार को फिरोजाबाद के पास टायर फटने से एक मिनी बस अनियंत्रित होकर डिवाइडर से टकरा गई। हादसे में महाराष्ट्र के सात श्रद्धालु घायल हो गए, जिनमें चार की हालत गंभीर बताई जा रही है। सूचना पर पुलिस और यूपीडा की टीम ने मौके पर पहुंचकर राहत कार्य किया। गंभीर घायलों को सैफई मिनी पीजीआई रेफर किया गया, जबकि अन्य का स्थानीय अस्पताल में उपचार चल रहा है। सभी श्रद्धालु अयोध्या दर्शन के बाद मथुरा जा रहे थे। पुलिस ने क्षतिग्रस्त वाहन हटवाकर यातायात सुचारु कराया और घटना की जांच शुरू कर दी है।

### यमदूत बने ट्रक ने चार राहगीरों को रौंदा

उरई। झांसी–कानपुर राष्ट्रीय राजमार्ग-27 पर जालौन जिले के जखोली गांव के पास शुक्रवार को एक तेज रफ्तार ट्रक ने सड़क किनारे पैदल जा रहे चार लोगों को कुचल दिया। हादसे में दो लोगों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि दो अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। दुर्घटना के बाद आक्रोशित ग्रामीणों ने हाईवे जाम कर दिया, जिससे करीब 10 किलोमीटर तक यातायात प्रभावित रहा। सूचना पर पहुंचे पुलिस अधीक्षक डॉ. दुर्गेश कुमार ने पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचकर लोगों को समझाया और जाम खुलवाया।

# बांग्लादेश को विनाश की ओर ले जा रही कट्टरता: नकवी

**पूर्व केंद्रीय मंत्री ने कहा- अवसरवाद और अविश्वास की प्रतीक बनी कांग्रेस पार्टी**

एजेंसी । प्रयागराज

पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं वरिष्ठ भाजपा नेता मुख्तार अब्बास नकवी ने बांग्लादेश की मौजूदा स्थिति पर गहरी चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि वहां कट्टरपंथी तत्वों की हिंसक मानसिकता देश के सामाजिक ताने-बाने और भविष्य दोनों के लिए घातक सिद्ध हो रही है। उन्होंने कहा कि अराजकता और उग्रवाद की यह प्रवृत्ति बांग्लादेश को बर्बादी की दिशा में धकेल रही है। सर्किट हाउस में शुक्रवार को आयोजित पत्रकार वार्ता में नकवी ने विपक्षी दलों पर भी तीखा हमला बोला। उन्होंने कहा कि कांग्रेस, समाजवादी पार्टी सहित कुछ राजनीतिक दल लगातार चुनावी पराजयों के बावजूद आत्ममंथन करने के बजाय भ्रम और हताशा की राजनीति में उलझे हुए हैं। जनता का भरोसा खो चुके ये दल अब चुनावी रणभूमि में गंभीरता के बजाय अव्यवस्था और अवसरवाद का प्रदर्शन कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी ने लंबे समय से चली आ रही राजनीतिक असहिष्णुता और भेदभाव की परंपराओं को पीछे छोड़ते हुए सुशासन, स्थिरता और समावेशी विकास की राजनीति को मजबूती दी है। इसी कारण भारत आज वैश्विक मंच पर एक सशक्त, स्थिर और सुशासित लोकतंत्र के रूप में पहचाना जा रहा है।

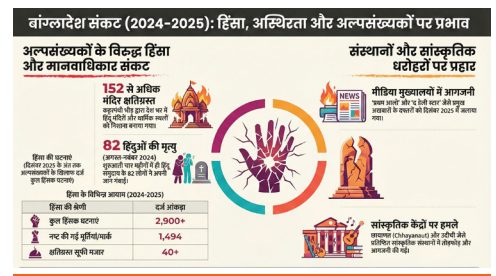




### लगातार सिमट रहा कांग्रेस का जनाधार

कांग्रेस पर निशाना साधते हुए उन्होंने कहा कि उसका जनाधार लगातार सिमटता जा रहा है, लेकिन उसकी राजनीति अब भी अविश्वास और अवसरवाद पर आधारित है। अन्य दलों को कांग्रेस के साथ राजनीतिक गठजोड़ करते समय सतर्क रहने की आवश्यकता है। बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों पर हो रहे अत्याचारों को लेकर नकवी ने कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त की। उन्होंने कहा कि वहां अल्पसंख्यक समुदाय के खिलाफ जारी हिंसा और अराजकता मानवीय मूल्यों के लिए गंभीर चुनौती है। ऐसे उग्र और अमानवीय तत्वों के खिलाफ सख्त कार्रवाई न केवल बांग्लादेश बल्कि पूरे क्षेत्र की शांति और मानवता के हित में आवश्यक है।

### जनता ने परिवारवाद को किया अस्वीकार

नकवी ने आरोप लगाया कि विपक्षी दल जनसमर्थन के अभाव में निराशा और कुंठा की राजनीति को हवा दे रहे हैं। लोकतांत्रिक संस्थाओं को कमजोर करने और परिवारवाद को बढ़ावा देने की कोशिशें जनता के बीच लगातार अस्वीकार की जा रही हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा की चुनावी सफलताओं ने सामंती और वंशवादी राजनीति की गणनाओं को पूरी तरह बदल दिया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व की सराहना करते हुए नकवी ने कहा कि परिश्रम, तपस्या और जनविश्वास से अर्जित उपलब्धियों को किसी राजनीतिक शोर–शराबे या आरोप–प्रत्यारोप से नकारा नहीं जा सकता। जनता बार–बार सुशासन और विकास के पक्ष में अपना निर्णय स्पष्ट कर रही है।

## हर की पैड़ी में लगे पोस्टर 'गैर हिंदुओं का प्रवेश प्रतिबंधित'

एजेंसी । हरिद्वार

धर्मनगरी हरिद्वार के प्रमुख तीर्थ स्थल हर की पैड़ी क्षेत्र में शुक्रवार को ऐसे पोस्टर लगाए गए, जिनमें गैर-हिंदुओं के प्रवेश पर प्रतिबंध का उल्लेख किया गया है। ये पोस्टर श्री गंगा सभा की ओर से लगाए गए हैं, जिनमें क्षेत्र को 1916 के हरिद्वार म्युनिसिपल बायलॉज के अंतर्गत बताया गया है। श्री गंगा सभा का कहना है कि हर की पैड़ी सनातन परंपरा और धार्मिक आस्था का प्रमुख केंद्र है, जहां प्रतिदिन हजारों श्रद्धालु गंगा स्नान और पूजा-अर्चना के लिए आते हैं। संस्था के अध्यक्ष नितिन गौतम ने बताया कि धार्मिक मर्यादा और पवित्रता बनाए रखने के लिए पुराने बायलॉज में किए गए प्रावधानों का पालन आवश्यक है। वहीं, प्रशासन की ओर से पूरे मामले पर नजर रखे जाने की बात कही जा रही है।

### नियमों के उल्लंघन की मिल रही थीं शिकायतें

उन्होंने दावा किया कि लंबे समय से इन नियमों के उल्लंघन की शिकायतें मिल रही थीं, लेकिन प्रशासनिक स्तर पर कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई। उन्होंने यह भी कहा कि 1916 में पंडित मदन मोहन मालवीय की पहल पर बनाए गए म्युनिसिपल बायलॉज का उद्देश्य तीर्थ क्षेत्र की धार्मिक पहचान और परंपराओं की रक्षा करना था। इसी संदर्भ में पोस्टरों के माध्यम से लोगों को नियमों की जानकारी दी जा रही है। उल्लेखनीय है कि हाल ही में हर की पैड़ी क्षेत्र में दो युवक विदेशी पोशाक में घूमते पाए गए थे, जिसका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ था। इस घटना के बाद पुलिस ने दोनों युवकों को हिरासत में लेकर कार्रवाई की थी। इस घटनाक्रम के बाद तीर्थ पुरोहितों और साधु–संतों की ओर से नियमों को सख्ती से लागू करने की मांग तेज हो गई थी। श्री गंगा सभा से जुड़े पदाधिकारियों का कहना है कि हर की पैड़ी जैसे संवेदनशील धार्मिक स्थलों पर मर्यादा और परंपरा का संरक्षण आवश्यक है।

## खनन माफियाओं का जांच टीम पर हमला, ट्रक चढ़ाया

**उप निरीक्षक घायल, बहेड़ी क्षेत्र में निरीक्षण के लिए लगाई गई थी बैरीकेडिंग**

बरेली। बहेड़ी क्षेत्र में अवैध खनन और ओवरलोड वाहनों की जांच के दौरान खनन माफिया ने खुलेआम कानून व्यवस्था को चुनौती दी। बिना वैध दस्तावेजों के दौड़ रहे ट्रकों के चालकों ने जांच टीम को रोकने के बजाय उन्हें कुचलने का प्रयास किया, जिससे मौके पर अफरा-तफरी मच गई। इस घटना में एक उपनिरीक्षक को मामूली चोटें आईं, जबकि चेकिंग के लिए लगाई गई बैरिकेडिंग पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई। जिलाधिकारी अविनाश सिंह के निर्देश पर खनन अधिकारी मनीष कुमार अपनी टीम के साथ क्षेत्र में निरीक्षण कर रहे थे। इसी दौरान बड़ी संख्या में ट्रक वहां पहुंचे और चालकों ने संगठित रूप से सरकारी टीम पर दबाव बनाने की कोशिश की। खनन अधिकारी की शिकायत पर थाना बहेड़ी में गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज किया गया।

### 40 वाहन जब्त, 24 आरोपी गिरफ्तार

घटना के बाद प्रशासन और पुलिस ने संयुक्त अभियान चलाते हुए सघन चेकिंग शुरू की। वन विभाग तिराहा और नवीन मंडी क्षेत्र से 37 ओवरलोड ट्रक सहित कुल 40 वाहनों को जब्त कर मोटर वाहन अधिनियम के तहत सीज किया गया। साथ ही पुलिस ने कार्रवाई करते हुए 24 आरोपितों को गिरफ्तार किया। क्षेत्राधिकारी बहेड़ी अरुण कुमार सिंह ने बताया कि गिरफ्तार किए गए कई आरोपितों के खिलाफ पहले से आपराधिक मामले दर्ज हैं। शेष फरार आरोपितों की तलाश की जा रही है। उन्होंने कहा कि अवैध खनन और ओवरलोडिंग के खिलाफ कार्रवाई आगे भी और सख्त की जाएगी।

## शाम को मायके से आई, सुबह कुएं में मिला मां-बेटी का शव

**सड़क दुर्घटना में हो गई है पति की मौत, मायके पक्ष ने लगाए गंभीर आरोप**

प्रयागराज। कौंधियारा थाना क्षेत्र के बढ़गोहना गांव में शुक्रवार सुबह उस समय सनसनी फैल गई, जब गांव के बाहर स्थित एक कुएं से महिला और उसकी छह माह की बेटी के शव बरामद किए गए। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और ग्रामीणों की मदद से दोनों शवों को बाहर निकलवाकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। पुलिस के अनुसार मृतका की पहचान सोनम पटेल (35) पत्नी शिवबाबू और उसकी छह माह की पुत्री दृष्टि के रूप में हुई है। दोनों के शव घर से करीब 50 मीटर दूर कुएं में पाए गए। प्रारंभिक जांच में मामला डूबने से मौत का प्रतीत हो रहा है, हालांकि पुलिस ने स्पष्ट किया है कि वास्तविक कारण पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही सामने आएगा।

### पति की मौत के बाद मिले मुआवजे के लिए डाला जा रहा था दबाव

इस बीच मृतका के मायके पक्ष ने घटना को संदिग्ध बताते हुए हत्या की आशंका जताई है। सोनम के भाई रामगनेश ने बताया कि उसकी बहन की पहली शादी ज्ञान सिंह से हुई थी, जिनकी सड़क दुर्घटना में मौत हो गई थी। दुर्घटना के बाद मिले मुआवजे को लेकर ससुराल पक्ष द्वारा लगातार दबाव और प्रताड़ना की बात सामने आई है। उन्होंने आरोप लगाया कि आर्थिक लाभ के लिए सोनम को मानसिक रूप से परेशान किया जा रहा था। परिजनों का कहना है कि सोनम गुरुवार शाम मायके से ससुराल पहुंची थी और अगली सुबह उसके लापता होने की सूचना मिली। कुछ ही समय बाद कुएं से शव मिलने की जानकारी मिली, जिससे परिजन स्तब्ध हैं। पुलिस का कहना है कि सभी पहलुओं को ध्यान में रखकर जांच की जा रही है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट के आधार पर आगे की कार्रवाई तय की जाएगी। मामले में किसी भी संभावना से इनकार नहीं किया जा रहा है।

## अगली पीढ़ियां 'जावेद' और 'नावेद' बन जाएंगी: धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री

बांदा। बागेश्वर धाम के पीठाधीश्वर पंडित धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री ने बांदा में आयोजित होने वाली हनुमंत कथा से पहले हिंदू समाज से जनसंख्या संतुलन और सांस्कृतिक मूल्यों को मजबूत करने का आह्वान किया। पत्रकारों से बातचीत में उन्होंने कहा कि समाज को अपनी भावी पीढ़ियों के भविष्य के प्रति सजग रहना होगा, अन्यथा जल, जंगल और जमीन जैसे संसाधनों की रक्षा कठिन हो सकती है। धीरेंद्र शास्त्री शुक्रवार को पांच दिवसीय हनुमंत कथा के शुभारंभ से पहले मीडिया से संवाद कर रहे थे। उन्होंने भारतीय परंपराओं, वेदों और यज्ञ संस्कृति से जुड़ने की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि प्राचीन काल में गुरुकुल व्यवस्था के माध्यम से बच्चों को संस्कार और ज्ञान दिया जाता था, जिसे फिर से सशक्त करने की जरूरत है। उनका कहना था कि सांस्कृतिक जड़ों से दूरी भविष्य में पहचान के संकट का कारण बन सकती है। धीरेंद्र शास्त्री ने शिक्षा और संस्कारों पर जोर देते हुए कहा, ररयदि सनातनी वेदों का अध्ययन नहीं करेंगे और उन्हें नहीं मानेंगे, तो उनकी अगली पीढ़ियां 'जावेद' और 'नावेद' बन जाएंगी। कहां की कोई अगर पूछे धीरेंद्र शास्त्री क्या कर रहे हैं तो मैं बागेश्वर धाम मैं कैंसर का अस्पताल बनवा रहा हूं और गुरुकुल की स्थापना कर रहा हूं जिसमें बच्चे वेद पढ़ेंगे और हिंदुत्व की अलख जगाएंगे। यहां बच्चों को 'वेद विद्या' दी जाएगी। उन्होंने देश की प्रगति को राष्ट्रवाद से जोड़ते हुए कहा कि सामाजिक समरसता और रोजगार जैसे मुद्दों पर सभी को मिलकर काम करना चाहिए।

## व्यापार जगत

# शेयर बाजार: बढ़त के बावजूद 46 हजार करोड़ डूबे

### शुरुआती कारोबार में सेंसेक्स ने लगाई 752 अंक की छलांग, निफ्टी में भी रही तेजी

एजेंसी । नई दिल्ली

सप्ताह के अंतिम कारोबारी दिन घरेलू शेयर बाजार बढ़त के साथ बंद हुआ, लेकिन स्मॉलकैप शेयरों में बिकवाली के चलते निवेशकों की संपत्ति में करीब 46 हजार करोड़ रुपये की कटौती हुई। शुक्रवार को बाजार खुलते ही खरीदारों ने जोरदार लिवाली की, जिससे सेंसेक्स और निफ्टी में तेजी देखने को मिली। सेंसेक्स ने शुरुआती कारोबार में 752 अंक की छलांग लगाई, जबकि निफ्टी 207 अंक उछलकर उच्च स्तर पर पहुंच गया। हालांकि, दोपहर के आसपास मुनाफा वसूली शुरू होने से दोनों सूचकांकों में कुछ कमजोरी आई। अंत में सेंसेक्स 83,570.35 अंक पर 187.64 अंक की बढ़त और निफ्टी 25,694.35 अंक पर 28.75 अंक की मजबूती के साथ बंद हुआ। आज दिनभर में आईटी, पीएसयू बैंक और रियल्टी सेक्टर के शेयरों में लगातार खरीदारी रही। ऑयल एंड गैस और टेक इंडेक्स ने भी मजबूती दिखाई। वहीं, मेटल, फार्मास्युटिकल्स, ऑटोमोबाइल, कैपिटल गुड्स, कंज्यूमर ड्यूरेबल और एफएमसीजी इंडेक्स कमजोर रहे।

### टॉप गेनर्स और लूजर्स

आज के प्रमुख लाभार्थियों में इंफोसिस (5.63%), टेक महिंद्रा (5.16%), विप्रो (2.79%), एचसीएल टेक्नोलॉजी (1.77%) और टाटा कंज्यूमर प्रोडक्ट्स (1.51%) शामिल हैं। टॉप नुकसान में एटरनल (3.86%), जियो फाइनेंशियल (2.86%), सिप्ला (2.58%), हिंडाल्को इंडस्ट्रीज (2.17%) और एशियन पेंट्स (2.03%) रहे। बीएसई मिडकैप इंडेक्स 0.15 प्रतिशत बढ़ा, जबकि स्मॉलकैप इंडेक्स 0.45 प्रतिशत गिरावट के साथ बंद हुआ।

### निवेशकों की संपत्ति में गिरावट

स्मॉलकैप में बिकवाली के चलते बीएसई में सूचीबद्ध कंपनियों का कुल मार्केट कैपिटलाइजेशन 468.18 लाख करोड़ रुपये से घटकर 467.72 लाख करोड़ रुपये रह गया। इससे निवेशकों को लगभग 46 हजार करोड़ रुपये का नुकसान हुआ। बीएसई में 4,394 शेयरों में कारोबार हुआ, जिनमें 1,875 हरे निशान में और 2,360 लाल निशान में बंद हुए। एनएसई में 2,908 शेयरों में ट्रेडिंग हुई, जिनमें 1,233 हरे और 1,675 लाल निशान में रहे।

# निर्यात: मिड-साइज SUV 'एक्रॉस' की पहली खेप रवाना

**मारुति सुजुकी ने भारतीय कार विक्टोरिस की 450 कारों की खेप भेजी**

**लैटिन अमेरिका, एशिया, अफ्रीका के कई बाजारों में की जाएगी बिक्री**

नई दिल्ली। देश की अग्रणी वाहन निर्माता कंपनी मारुति सुजुकी इंडिया ने अपनी नई मिड-साइज एसयूवी 'विक्टोरिस' को अंतरराष्ट्रीय बाजारों में भेजना शुरू कर दिया है। कंपनी के अनुसार, इस मॉडल की पहली खेप के तहत 450 से अधिक वाहन गुजरात के मुंद्रा और पिपावाव बंदरगाहों से निर्यात किए गए हैं। मारुति सुजुकी ने बताया कि विदेशी बाजारों में यह एसयूवी 'एक्रॉस' नाम से बेची जाएगी और इसे लगभग 100 देशों व क्षेत्रों में उतारने की योजना है। इनमें लैटिन अमेरिका, पश्चिम एशिया और अफ्रीका के प्रमुख बाजार शामिल हैं।

### सी प्लेटफार्म पर बनाई गई है कार

यह वाहन सुजुकी के C प्लेटफॉर्म पर आधारित है, जिस पर ग्रैंड विटारा और टोयोटा अर्बन क्रूजर हाइराइडर जैसे मॉडल तैयार किए गए हैं। सुरक्षा मानकों के लिहाज से भी इस एसयूवी ने मजबूती दिखाई है और इसे ग्लोबल एनसीएपी तथा भारत एनसीएपी दोनों में 5–स्टार सेफ्टी रेटिंग प्राप्त हुई है। मॉडल को जापान मोबिलिटी शो–2025 में भी प्रदर्शित किया गया था, जिससे इसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली। कंपनी के मुख्य कार्यपालक अधिकारी एवं प्रबंध निदेशक हिसाशी ताकेउची ने कहा कि मारुति सुजुकी की निर्यात रणनीति 'मेक इन इंडिया, मेक फॉर द वर्ल्ड' की सोच पर आधारित है। उन्होंने बताया कि वर्ष 2025 में करीब 3.9 लाख यात्री वाहनों के निर्यात के साथ कंपनी लगातार पांचवीं बार देश की सबसे बड़ी यात्री वाहन निर्यातक बनी है।

# न्यूमी ने जयपुर में खोला पहला प्रीमियम स्टोर

### जयपुर की शाही विरासत से प्रेरित है कंपनी का पहला स्टोर

जयपुर। महिलाओं के लिए तेजी से बढ़ता ओमनीचैनल फैशन-टेक ब्रांड न्यूमी ने शुक्रवार को जयपुर में अपना पहला स्टोर लॉन्च किया। गुलाबी नगरी के वैशाली सर्कल, ब्लॉक सी में स्थित यह 3,000 वर्गफीट का स्टोर दो मंज़िला रीटेल फॉर्मेट के साथ आधुनिक और प्रीमियम अनुभव प्रदान करता है। स्टोर का इंटीरियर जयपुर की शाही विरासत से प्रेरित है, जिसमें रानियों की झलक और न्यूमी के आधुनिक, ट्रेंडी डिज़ाइन का संयोजन देखने को मिलता है। इंस्टाग्राम कॉर्नर में ग्राहक स्टाइलिश पलों को कैद कर सकते हैं, जो ब्रांड के आधुनिक फैशन अनुभव को और जीवंत बनाता है।

### राजस्थान में विस्तार की योजना

न्यूमी के सह–संस्थापक और सीईओ सुमित जसोरिया ने बताया कि अगले महीनों में ब्रांड जोधपुर और उदयपुर में भी स्टोर खोलकर राजस्थान में विस्तार करेगा। 2022 से न्यूमी ने 17 लाख से अधिक ग्राहकों को सेवा दी है और हर सप्ताह 1,000 से अधिक नए डिज़ाइन पेश करता है। ब्रांड का इन्वेंटरी–लाईट मॉडल और तेज़ आपूर्ति श्रृंखला सुनिश्चित करती है कि ग्राहकों को हमेशा नवीनतम और आकर्षक डिज़ाइन उपलब्ध हों।

# डाक मार्ग से होने वाले निर्यात पर प्रोत्साहन योजनाएं लागू

नई दिल्ली। भारत सरकार ने डाक के जरिए होने वाले निर्यात को बढ़ावा देने के लिए नई पहल की है। केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड (सीबीआईसी) ने 15 जनवरी, 2026 से डाक माध्यम से भेजे जाने वाले माल पर आरओडीटीईपी, आरओएससीटीएल और ड्यूटी ड्रॉबैक जैसी निर्यात प्रोत्साहन योजनाओं को लागू करने का फैसला किया है। वित्त मंत्रालय के अनुसार इस कदम से छोटे और मध्यम निर्यातकों, विशेषकर दूरदराज के क्षेत्रों और छोटे शहरों के व्यवसायियों को वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धा बढ़ाने का अवसर मिलेगा। अब डाक मार्ग से किए गए निर्यात पर भी कच्चे माल पर चुकाए गए सीमा शुल्क और कर का पूरा या आंशिक रिफंड दिया जाएगा।

### 28 विदेशी डाकघर करेंगे काम

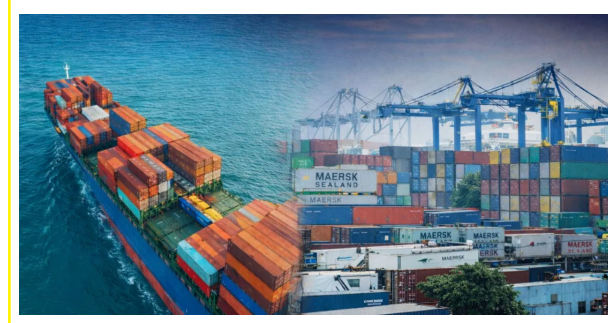




सीबीआईसी ने इस प्रावधान को डाक निर्यात (इलेक्ट्रॉनिक घोषणा एवं प्रसंस्करण) विनियम, 2022 में संशोधन के माध्यम से क्रियान्वित किया है। इससे निर्यातक इलेक्ट्रॉनिक रूप में लाभों का दावा कर सकेंगे। भारत में 28 विदेशी डाकघर (एफपीओ) इस प्रणाली के तहत काम करेंगे। सीबीआईसी ने कहा कि यह पहल डाक और कूरियर माध्यमों से सीमा पार व्यापार को मजबूत करने और ई–कॉमर्स निर्यात को प्रोत्साहित करने की दिशा में एक बड़ा कदम है। इससे डाक निर्यात की प्रक्रिया सरल, तेज और समावेशी बनेगी।

# फिर मिला 900 किलो विस्फोटक

## अवैध विस्फोटक कारोबार का भंडाफोड़, बीसरु में बिना लाइसेंस चल रहा था पटाखा निर्माण

**नूंह।** हरियाणा के नूंह जिले में पुलिस ने अवैध विस्फोटक कारोबार के खिलाफ बड़ी कार्रवाई करते हुए करीब 900 किलो प्रतिबंधित विस्फोटक सामग्री बरामद की है। यह कार्रवाई थाना बिछौर क्षेत्र के गांव बीसरु स्थित बीपीएल कॉलोनी में की गई, जहां बिना किसी वैध अनुमति के पटाखे बनाने और उन्हें बाजार में खपाने का काम चल रहा था। पुलिस की इस कार्रवाई के बाद इलाके में हड़कंप की स्थिति बन गई है।पुलिस प्रवक्ता के अनुसार, थाना बिछौर की टीम पुन्हाना–फरदडी रोड पर बस अड्डा बीसरु के पास नियमित गश्त और अपराध जांच में तैनात थी। इसी दौरान गुप्त सूचना मिली कि बीसरु निवासी ईसा, इस्राईल और जुल्ली पुत्र दीनू अपने खेतों में बारूद से पटाखे तैयार कर रहे हैं। सूचना में यह भी बताया गया कि आरोपितों ने पीएचसी बीसरु के सामने बीपीएल कॉलोनी में बने एक टीन शैड में भारी मात्रा में विस्फोटक सामग्री छिपा रखी है।

### पुलिस को देख भागे आरोपित, मौके से भारी बरामदगी

सूचना के आधार पर जब पुलिस टीम मौके पर पहुंची तो तीनों संदिग्ध आरोपित खेतों की ओर भाग निकले और पुलिस को चकमा देकर फरार हो गए। हालांकि पुलिस ने टीन शैड की घेराबंदी कर तलाशी ली, जिसमें 18 प्लास्टिक कट्टे बरामद किए गए। इन कट्टों में हल्के पीले रंग की विस्फोटक सामग्री भरी हुई थी। जांच में प्रत्येक कट्टे का वजन लगभग 50 किलो पाया गया।

### विस्फोटक सामग्री अत्यंत खतरनाक श्रेणी की

पुलिस ने मौके से कुल 900 किलो प्रतिबंधित विस्फोटक सामग्री अपने कब्जे में ली। प्रारंभिक जांच में यह सामग्री अत्यंत खतरनाक बताई जा रही है, जिसका उपयोग अवैध रूप से पटाखा निर्माण में किया जा रहा था। पुलिस अधिकारियों के अनुसार, इस प्रकार की गतिविधियां न केवल कानून का उल्लंघन हैं, बल्कि आमजन की सुरक्षा के लिए भी गंभीर खतरा पैदा करती हैं।

इस मामले में थाना बिछौर में आरोपितों के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता की धारा 288 और विस्फोटक अधिनियम की धारा 9(बी) के तहत मुकदमा दर्ज किया गया है। पुलिस ने फरार आरोपितों की गिरफ्तारी के लिए विशेष टीमें गठित कर दबिश तेज कर दी है। अधिकारियों का कहना है कि जल्द ही आरोपितों को गिरफ्तार कर इस अवैध नेटवर्क से जुड़े अन्य लोगों की भी पहचान की जाएगी।

### पहले भी सामने आ चुके हैं बरामदगी के मामले

वर्ष 2022 में नूंह जिले के पुन्हाना और तावडू क्षेत्र में अवैध पटाखा निर्माण इकाइयों पर छापेमारी के दौरान सैकड़ों किलो बारूद और कच्चा विस्फोटक पदार्थ बरामद किया गया था। वर्ष 2023 में सांप्रदायिक तनाव के बाद जिले में चलाए गए विशेष अभियान के दौरान कई स्थानों से देसी बम, विस्फोटक पाउडर और संदिग्ध सामग्री पकड़ी गई थी।

### नूंह में बड़ी कार्रवाई: 900 किलो अवैध विस्फोटक बरामद

**कुल विस्फोटक सामग्री**
18 कट्टों में

1 कट्टा = 50 किलो (लगभग)

**बरामदगी का विवरण**
बीपीएल कॉलोनी में बिना लाइसेंस और सुरक्षा मानकों के बारूद से पटाखे बनाए जा रहे थे।

**आरोपियों पर सख्त कानूनी कार्रवाई**
विस्फोटक अधिनियम के तहत मुकदमा दर्ज कर फरार आरोपियों की तलाश जारी है।

**लगातार जारी है अवैध विस्फोटक पर नकेल**
2022 से 2024 के बीच जिले में कई बार भारी मात्रा में अवैध विस्फोटक पकड़ा जा चुका है।

# फिर जहरीली हुई राजधानी की हवा, ग्रैप-3 प्रभावी

### 2026 में दूसरी बार लगाना पड़ा प्रतिबंध

एजेंसी । नई दिल्ली

राजधानी दिल्ली और आसपास के एनसीआर क्षेत्रों में वायु गुणवत्ता एक बार फिर गंभीर स्थिति की ओर बढ़ती नजर आ रही है। शुक्रवार को दिल्ली का औसत वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 354 दर्ज किया गया, जिसे देखते हुए वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) ने पूरे एनसीआर में ग्रैप (ग्रेडेड रिस्पॉन्स एक्शन प्लान) के चरण-3 की पाबंदियां तत्काल प्रभाव से लागू कर दी हैं।

### कम हवा और मौसम प्रदूषण की बड़ी वजह

सीएक्यूएम के अनुसार 15 जनवरी को शाम चार बजे दिल्ली का एक्यूआई 343 था, जो 24 घंटे में बढ़कर 354 तक पहुंच गया। मौसम विभाग का कहना है कि हवा की गति बेहद कम बनी हुई है और वायुमंडलीय परिस्थितियां ऐसी हैं कि प्रदूषक तत्वों का फैलाव नहीं हो पा रहा। इसी कारण आने वाले दिनों में एक्यूआई के 400 के पार जाने की आशंका जताई गई है, जो 'गंभीर' श्रेणी में आता है।

### ग्रैप-3 के तहत क्या-क्या रहेगा प्रतिबंधित

ग्रैप-3 लागू होने के साथ ही बीएस-III पेट्रोल और बीएस-IV डीजल वाहनों के संचालन पर रोक लगा दी गई है। इसके अलावा निर्माण और विध्वंस कार्य पूरी तरह बंद रहेंगे। स्टोन क्रशर इकाइयों को बंद करने के निर्देश दिए गए हैं और डीजल जनरेटर के उपयोग पर भी प्रतिबंध रहेगा। हालात और बिगड़ने पर प्राथमिक विद्यालयों को बंद करने तथा सरकारी और निजी दफ्तरों में वर्क फ्रॉम होम की सलाह भी दी जा सकती है।

आयोग ने स्पष्ट किया है कि ग्रैप-3 के साथ-साथ पहले से लागू ग्रैप के चरण-1 और चरण-2 के सभी नियम भी यथावत जारी रहेंगे। एनसीआर के सभी संबंधित विभागों और प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड को निगरानी बढ़ाने और नियमों का कड़ाई से पालन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए हैं, ताकि वायु गुणवत्ता को और बिगड़ने से रोका जा सके।

## न्यूज़ ब्रीफ

### सीएसपीओसी प्रतिनिधिमंडल आज आएगा जयपुर

**नई दिल्ली/जयपुर।** राष्ट्रमंडल देशों की संसदों के अध्यक्षों एवं पीठासीन अधिकारियों के 28वें सम्मेलन (सीएसपीओसी) के पश्चात अंतरराष्ट्रीय प्रतिनिधिमंडल शनिवार को जयपुर पहुंचेगा। राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी के नेतृत्व में अतिथियों का हवाई अड्डे पर पारंपरिक स्वागत किया जाएगा। देवनानी ने बताया कि प्रतिनिधियों को राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत, ऐतिहासिक स्थलों और लोक कला से परिचित कराया जाएगा, साथ ही लोकतांत्रिक परंपराओं और विकास यात्रा पर संवाद होगा। उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजनों से राज्य की वैश्विक पहचान सुदृढ़ होती है। शनिवार सायं कांस्टीट्यूशन क्लब में अतिथियों के सम्मान में सांस्कृतिक कार्यक्रम और रात्रिभोज का आयोजन होगा, जिसमें राज्यपाल, लोकसभा अध्यक्ष, मुख्यमंत्री सहित अनेक गणमान्य अतिथि शामिल होंगे।

### ईडी अधिकारियों पर FIR की जांच पर हाईकोर्ट की रोक

**रांची।** झारखंड उच्च न्यायालय ने प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के अधिकारियों के खिलाफ दर्ज प्राथमिकी पर पुलिस द्वारा की जा रही कार्रवाई पर फिलहाल रोक लगा दी है। पेयजल घोटाले के आरोपित संतोष कुमार की ओर से दर्ज एफआईआर को लेकर दायर ईडी की याचिका पर सुनवाई करते हुए अदालत ने राज्य सरकार को ईडी अधिकारियों और कार्यालय की सुरक्षा सुनिश्चित करने का भी निर्देश दिया है। मामले की अगली सुनवाई 9 फरवरी को होगी। न्यायमूर्ति एस.के. द्विवेदी की पीठ ने स्पष्ट किया कि इस बीच ईडी अधिकारियों के विरुद्ध कोई दंडात्मक या जांच संबंधी कदम नहीं उठाए जाएंगे। अदालत ने राज्य सरकार और शिकायतकर्ता संतोष कुमार से जवाब दाखिल करने को कहा है।

### चाबहार परियोजना : खोजे जा रहे विकल्प, US से बातचीत जारी

**नई दिल्ली।** ईरान स्थित रणनीतिक चाबहार बंदरगाह को लेकर उठ रही अनिश्चितताओं के बीच भारत ने स्पष्ट किया है कि इस मुद्दे पर अमेरिका के साथ लगातार बातचीत की जा रही है और समाधान के लिए व्यावहारिक रास्ते खोजे जा रहे हैं। विदेश मंत्रालय ने कहा कि भारत इस परियोजना से जुड़े अपने हितों को सुरक्षित रखने के लिए सभी कूटनीतिक प्रयास कर रहा है। साप्ताहिक प्रेस वार्ता में विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने बताया कि अमेरिका के ट्रेजरी विभाग ने 28 अक्टूबर 2025 को प्रतिबंधों में सशर्त ढील से संबंधित एक मार्गदर्शक पत्र जारी किया था, जो 26 अप्रैल 2026 तक प्रभावी है।

## रेलवे टेंडर घोटाला: दिल्ली हाईकोर्ट ने CBI से मांगा जवाब

**नई दिल्ली।** रेलवे टेंडर घोटाला प्रकरण में दिल्ली उच्च न्यायालय ने केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) को नोटिस जारी कर जवाब तलब किया है। न्यायमूर्ति स्वर्णकांता शर्मा की पीठ ने यह नोटिस बिहार की पूर्व मुख्यमंत्री राबड़ी देवी की उस याचिका पर जारी किया है, जिसमें उन्होंने ट्रायल कोर्ट द्वारा उनके खिलाफ आरोप तय किए जाने के आदेश को चुनौती दी है। अदालत ने मामले में सीबीआई से विस्तृत पक्ष रखने को कहा है। उल्लेखनीय है कि इससे पहले उच्च न्यायालय इसी मामले में लालू प्रसाद यादव और तेजस्वी यादव की याचिकाओं पर भी सीबीआई को नोटिस जारी कर चुका है। राऊज एवेन्यू कोर्ट ने 13 अक्टूबर को लालू प्रसाद यादव, राबड़ी देवी और तेजस्वी यादव के खिलाफ भारतीय दंड संहिता की धारा 420, 120बी तथा भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम की धारा 13(2) के तहत आरोप तय किए थे। तीनों आरोपितों ने इसी आदेश को हाईकोर्ट में चुनौती दी है। ट्रायल कोर्ट में बहस के दौरान बचाव पक्ष ने अभियोजन की अनुमति और सबूतों की वैधता पर सवाल उठाए थे, जबकि सीबीआई ने आरोपों को पर्याप्त साक्ष्यों पर आधारित बताया था।

5G उपभोक्ताओं का दूसरा बड़ा देश बना भारत, यूजर्स की सूची में सिर्फ चीन आगे

# भारत में 5G के 40 करोड़ यूजर्स

**नई दिल्ली।** भारत ने डिजिटल कनेक्टिविटी के क्षेत्र में एक और बड़ी उपलब्धि दर्ज की है। देश में 5जी सेवाओं का उपयोग करने वालों की संख्या 40 करोड़ से अधिक हो गई है, जिससे भारत दुनिया में दूसरा सबसे बड़ा 5जी उपभोक्ता बाजार बन गया है। इस सूची में भारत से आगे केवल चीन है।

केंद्रीय संचार मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर जानकारी साझा करते हुए कहा कि भारत आज उन देशों में शामिल है, जहां 5जी तकनीक को सबसे तेज गति से अपनाया गया है। उन्होंने बताया कि व्यापक नेटवर्क विस्तार और तेज इंटरनेट सेवाओं के कारण 5जी अब शहरी इलाकों के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों तक भी पहुंच रहा है।

### डिजिटल प्रगति का महत्वपूर्ण पड़ाव

सिंधिया ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व की सराहना करते हुए कहा कि भारत की 5जी यात्रा ने पैमाने, रफ्तार और डिजिटल परिवर्तन के मामले में वैश्विक स्तर पर नए मानक स्थापित किए हैं। उन्होंने इसे देश की डिजिटल प्रगति का एक महत्वपूर्ण पड़ाव बताया, जो भारत को भविष्य की तकनीकी अर्थव्यवस्था की ओर तेजी से अग्रसर कर रहा है।

## कठुआ में आतंकियों के तीन ठिकाने ध्वस्त

**कठुआ।** जम्मू-कश्मीर के कठुआ जिले के बिलावर क्षेत्र में पुलिस और सुरक्षाबलों ने संयुक्त अभियान के दौरान आतंकियों के तीन ठिकानों का पता लगाकर उन्हें ध्वस्त कर दिया है। विश्वसनीय खुफिया सूचना के आधार पर सात जनवरी से कामाड़ नाला, कलाबन और धनु परोल के जंगलों में सघन तलाशी अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के दौरान आतंकियों की ओर से फायरिंग की गई, जिसके बाद सुरक्षाबलों और आतंकियों के बीच मुठभेड़ हुई। तलाशी में एक ठिकाने से एम-4 राइफल के खाली कारतूस, खाद्य सामग्री, कंबल और तिरपाल सहित अन्य सामान बरामद किया गया। इसके बाद 16 जनवरी को कलिखड़ और कलाबन क्षेत्र में दो और ठिकानों की पहचान कर उपयोग में लाई जा रही सामग्री जब्त की गई। एसएसपी कठुआ मोहिता शर्मा ने बताया कि क्षेत्र में सर्च ऑपरेशन अभी जारी है और जिले की सुरक्षा व्यवस्था को लेकर सभी एजेंसियां पूरी तरह सतर्क हैं।

## लाल किला विस्फोट : 13 फरवरी तक न्यायिक हिरासत में रहेंगे छह आरोपी

**नई दिल्ली।** राजधानी के पटियाला हाउस कोर्ट ने लाल किला विस्फोट प्रकरण में बड़ी कार्रवाई करते हुए छह आरोपितों को 13 फरवरी तक न्यायिक हिरासत में भेजने का आदेश दिया है। यह आदेश प्रिंसिपल डिस्ट्रिक्ट एंड सेशंस जज अंजु बजाज चांदना ने एनआईए हिरासत की अवधि समाप्त होने के बाद सुनाया।

न्यायिक हिरासत में भेजे गए आरोपितों में डॉ. शाहीन सईद, मुफ्ती इरफान अहमद, जहीर बिलाल वानी उर्फ दानिश, डॉ. आदिल अहमद, यासिर अहमद डार और डॉ. मुजम्मिल शकील शामिल हैं। इससे पहले 14 जनवरी को अदालत ने डार को छोड़कर अन्य सभी आरोपितों को 16 जनवरी तक राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) की हिरासत में भेजा था। शुक्रवार को सभी आरोपितों को एनआईए हिरासत समाप्त होने पर अदालत में पेश किया गया। एनआईए के अनुसार, जहीर बिलाल वानी उर्फ दानिश को श्रीनगर से गिरफ्तार किया गया था। जांच एजेंसी का दावा है कि दानिश ने ड्रोन में तकनीकी बदलाव किए और कार बम विस्फोट से पहले रॉकेट तैयार करने की कोशिश की थी। एनआईए के मुताबिक, दानिश ने उमर-उन-नबी के साथ मिलकर साजिश को अंजाम देने में अहम भूमिका निभाई।

बीज कानून में होंगे बड़े संशोधन, किसानों को मिलेगा सख्त सुरक्षा कवच

# अन्नदाताओं को नहीं दे पाएंगे घटिया बीज

### केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह ने कहा-पुराने कानून में दंड का प्रावधान कमजोर

**नई दिल्ली।** केंद्र सरकार किसानों को नकली और घटिया बीजों से बचाने के लिए बीज कानून में व्यापक बदलाव की तैयारी कर रही है। कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने शुक्रवार को बताया कि प्रस्तावित बीज अधिनियम 2026 के तहत तीन महत्वपूर्ण संशोधन किए जाएंगे, जिनका उद्देश्य किसानों को सुरक्षित, विश्वसनीय और अधिक उत्पादक बीज उपलब्ध कराना है। कृषि मंत्री ने कहा कि वर्ष 1966 में बने मौजूदा बीज अधिनियम में दंडात्मक प्रावधान कमजोर हैं, जिससे नकली या खराब गुणवत्ता वाले बीज बेचने वालों पर प्रभावी कार्रवाई संभव नहीं हो पाती। नए कानून में ऐसे डीलरों और विक्रेताओं पर सख्त जुर्माने और कठोर दंड का प्रावधान किया जाएगा, ताकि किसानों के हितों की प्रभावी रक्षा हो सके।

### देशी बीज उत्पादकों को मिलेगा प्रोत्साहन

उन्होंने बताया कि नए अधिनियम के तहत सार्वजनिक संस्थानों जैसे आईसीएआर और कृषि विश्वविद्यालयों के साथ-साथ गुणवत्तापूर्ण देसी बीज उत्पादकों को प्रोत्साहन दिया जाएगा। वहीं, विदेश से आयातित बीजों के लिए कड़े परीक्षण और मूल्यांकन नियम लागू किए जाएंगे, ताकि बिना जांच कोई बीज बाजार में न आ सके।

कृषि मंत्री ने यह भी स्पष्ट किया कि कृषि राज्य सूची का विषय है और राज्यों के अधिकार पूर्ववत रहेंगे। केंद्र सरकार राज्यों के सहयोग से कानून को लागू करेगी। उन्होंने कहा कि सरकार का लक्ष्य है किसानों को उच्च गुणवत्ता वाले बीज उपलब्ध कराना, भरोसेमंद उत्पादकों को बढ़ावा देना और अनियमितताओं पर

## धमकियों से नहीं डरुंगी, बलिदान के लिए तैयार : ममता

**कोलकाता।** पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने केंद्र सरकार और केंद्रीय एजेंसियों पर तीखा हमला करते हुए कहा है कि उन्हें जेल भेजने की बातें की जा रही हैं, लेकिन वह किसी दबाव या धमकी से पीछे हटने वाली नहीं हैं। उन्होंने साफ शब्दों में कहा कि यदि जरूरत पड़ी तो वह आम लोगों के हित में अपनी जान तक देने को तैयार हैं। शुक्रवार को उत्तर बंगाल के दो दिवसीय दौरे पर रवाना होने से पहले कोलकाता एयरपोर्ट पर पत्रकारों से बातचीत में मुख्यमंत्री ने कहा कि केंद्रीय एजेंसियों के काम में बाधा डालने का आरोप लगाकर उन्हें डराने की कोशिश की जा रही है। ममता ने कहा कि इस तरह की धमकियां उन्हें कमजोर नहीं कर सकतीं और वह जनहित के मुद्दों पर अपनी आवाज उठाती रहेंगी। राज्य के विभिन्न हिस्सों में व्याप्त तनाव को लेकर मुख्यमंत्री ने गंभीर आरोप लगाए। मुर्शिदाबाद के बेलडांगा इलाके में प्रवासी मजदूर की मौत के विरोध में सड़क और रेल अवरोध तथा पूर्व बर्दवान के समुद्रगढ़ स्टेशन पर मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के खिलाफ प्रदर्शन का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि इन घटनाओं के पीछे सुनियोजित साजिश है।

# आज भारत को मिलेगी स्लीपर वंदे भारत

### दो दिवसीय पूर्वी भारत के दौरे पर प्रधानमंत्री

### देश की पहली स्लीपर ट्रेन को दिखाएंगे हरी झंडी

**नई दिल्ली।** प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 17 और 18 जनवरी को पश्चिम बंगाल एवं असम के दौरे पर रहेंगे। इस दौरान वे रेल, सड़क और जलमार्ग से जुड़ी 10 हजार करोड़ रुपये से अधिक की विकास परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास करेंगे। इस यात्रा का प्रमुख आकर्षण देश की पहली वंदे भारत स्लीपर ट्रेन का शुभारंभ होगा, जो हावड़ा और गुवाहाटी के बीच संचालित की जाएगी।

प्रधानमंत्री कार्यालय के अनुसार, शनिवार को प्रधानमंत्री पश्चिम बंगाल में लगभग 3,250 करोड़ रुपये की रेल और सड़क अवसंरचना परियोजनाओं की आधारशिला रखेंगे। इसी दिन मालदा टाउन स्टेशन से हावड़ा–गुवाहाटी (कामाख्या) वंदे भारत स्लीपर ट्रेन को वर्चुअल माध्यम से रवाना किया जाएगा। यह पूरी तरह वातानुकूलित ट्रेन लंबी दूरी की यात्राओं को अधिक सुविधाजनक बनाएगी और यात्रा समय में करीब ढाई घंटे की कमी लाएगी।

रविवार को प्रधानमंत्री हुगली जिले के सिंगूर में 830 करोड़ रुपये से अधिक की विकास परियोजनाओं का उद्घाटन करेंगे। इसके साथ ही बालागढ़ में एक आधुनिक इलेक्ट्रिक कैटामरान पोर्ट की आधारशिला रखी जाएगी, जिससे अंतर्देशीय जल परिवहन को बढ़ावा मिलेगा और कोलकाता की सड़कों पर यातायात का दबाव कम होगा।

### सात अमृत भारत एक्सप्रेस भी होंगी रवाना

अपने दौरे के दौरान प्रधानमंत्री पश्चिम बंगाल से सात अमृत भारत एक्सप्रेस ट्रेनों को हरी झंडी दिखाएंगे। ये ट्रेनें न्यू जलपाईगुड़ी, अलीपुरद्वार और मालदा जैसे शहरों को बेंगलुरु, मुंबई और चेन्नई जैसे प्रमुख महानगरों से जोड़ेंगी। इनमें से कुछ ट्रेनों का शुभारंभ स्थल से और कुछ का वर्चुअल माध्यम से किया जाएगा। प्रधानमंत्री असम में सांस्कृतिक और वन्यजीव संरक्षण से जुड़े कार्यक्रमों में भी भाग लेंगे। शनिवार को वे गुवाहाटी के सरुसजाई स्टेडियम में बोडो समुदाय के भव्य सांस्कृतिक आयोजन "बागुरुम्बा द्वौ 2026" में शामिल होंगे, जहां 10 हजार से अधिक कलाकार पारंपरिक बागुरुम्बा नृत्य प्रस्तुत करेंगे। रविवार को प्रधानमंत्री नागांव जिले के कालियाबोर में 6,950 करोड़ रुपये की लागत वाले काजीरंगा एलिवेटेड कॉरिडोर का भूमि पूजन करेंगे। यह 86 किलोमीटर लंबा कॉरिडोर काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान के वन्यजीवों को सड़क दुर्घटनाओं से बचाने और उनके सुरक्षित आवागमन में सहायक होगा।

DBD 8

दो बजे दोपहर

पत्रकारिता पावर नहीं रिस्पांसिबिलिटी है

मुंबई

शनिवार, 17 जनवरी 2026


**बीजेपी ने 29 नगर निगमों में से 25 पर अपना परचम लहराया**

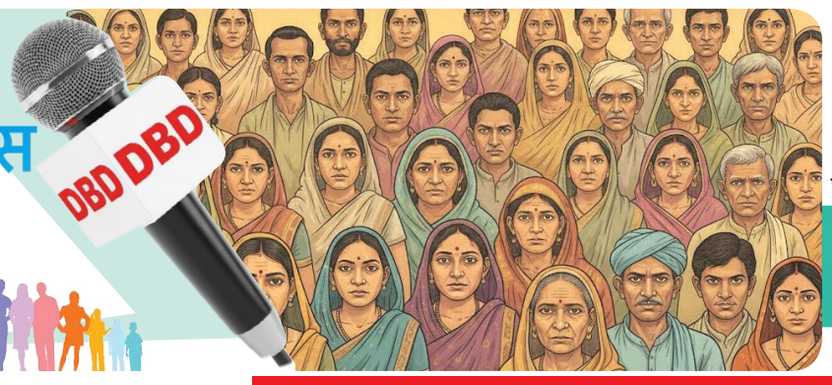

# अंधेरा छँटा, सूरज निकला, कमल खिला

डीबीडी संवाददाता | मुंबई

**अंधेरा छंटेगा, सूरज निकलेगा, कमल खिलेगा... 46 साल पहले जिस अरब सागर के किनारे मुंबई में भारतीय जनता पार्टी के पहले अधिवेशन में पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने जो भविष्यवाणी की थी, वह महाराष्ट्र की राजनीति में अब पूरी होती दिख रही है। देश में लगातार तीसरी बार मोदी सरकार, 20 राज्यों में एनडीए की सरकार और अब महाराष्ट्र में बीजेपी की ऐतिहासिक जीत ने इसे और मजबूत कर दिया है। यह परिणाम साफ संकेत देते हैं कि देश की राजनीति में बीजेपी का जनाधार और मजबूत हुआ है। केरल में तिरुवनंतपुरम नगर निगम चुनाव में कमल खिलने के बाद अब महाराष्ट्र में भी बीजेपी ने नया इतिहास रच दिया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का कहना है कि पंचायत से लेकर पार्लियामेंट तक जनता का भरोसा भारतीय जनता पार्टी के साथ है। इसी भरोसे की नई और बड़ी किस्त महाराष्ट्र से सामने आई है।**

## ठाकरे और पवार परिवार के गढ़ ढहे

गांव से लेकर शहरों तक के स्थानीय चुनाव में बीजेपी अब महाराष्ट्र के भीतर वो धुरी बन चुकी है। दरअसल, महाराष्ट्र के लोकल में भी बीजेपी ही वोकल है ये साफ हो गया है क्योंकि बीजेपी ने एक साथ बड़े-बड़े राजनीतिक घरानों के गढ़ को ढहा दिया है। सहकारी से सरकारी तक फॉर्मूले पर चलने वाला पवार परिवार एक होकर भी अपने किलों को बचाने में नाकाम रहा है। मराठी मानुष और हिंदू स्वाभिमान के मंत्र से चलने वाला ठाकरे परिवार भी एक होकर अपने गढ़ को बीजेपी के आगे बचा नहीं पाया। ठाकरे परिवार, जिसकी पहचान मुंबई और बीएमसी से जुड़ी रही है, पहली बार इस किले को बचाने में नाकाम रहा। उद्धव ठाकरे और राज ठाकरे का दो दशक बाद एक साथ आना भी बीजेपी के सामने असरदार साबित नहीं हुआ। इसी तरह, शरद पवार और अजित पवार के एकजुट होने के बावजूद पुणे और पिंपरी-चिंचवड़ जैसे गढ़ों में बीजेपी गठबंधन को रोकना संभव नहीं हो सका। वहीं कांग्रेस अलग-अलग सहयोगियों के साथ चुनाव लड़ने के बावजूद पिछला प्रदर्शन नहीं दोहरा सकी। जिन नगर निगमों में पहले पार्टी ने जीत दर्ज की थी, वहां भी कांग्रेस सिमटती नजर आई।

## मुंबई से नागपुर तक भगवा लहर

बीजेपी गठबंधन राज्य की 29 नगर निगमों में से 25 पर अपना परचम लहराता दिख रहा है। सबसे बड़ी जीत देश की सबसे अमीर नगर पालिका, बृहन्मुंबई महानगरपालिका (BMC) में मिली है। दशकों तक ठाकरे परिवार का अभेद्य किला मानी जाने वाली बीएमसी में बीजेपी पहली बार सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है और अब मुंबई में बीजेपी का मेयर बनना तय है। नागपुर से पुणे, नासिक से सोलापुर तक बीजेपी गठबंधन ने जीत का परचम लहराया है। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने इसे रिकॉर्ड तोड़ जनादेश करार दिया। उनका कहना है कि यह जीत प्रधानमंत्री मोदी पर जनता के भरोसे की जीत है, जिसने महाराष्ट्र ही नहीं, पूरे देश में विकास की एक नई भाषा गढ़ी है।




## बीएमसी वॉर्ड वार चुनाव परिणाम और विजेता

| | |
|---|---|
| १ | रेखा यादव (शिंदे शिवसेना) |
| २ | तेजस्वी घोसाळकर (भाजप) |
| ३ | प्रकाश दरेकर (भाजप) |
| ४ | मंगेश पांगारे (शिंदे शिवसेना) |
| ५ | संजय घाडी (शिंदे शिवसेना) |
| ६ | दीक्षा कारकर (शिंदे शिवसेना) |
| ७ | गणेश खणकर (भाजप) |
| ८ | योगिता पाटील (भाजप) |
| ९ | शिवानंद शेट्टी (भाजप) |
| १० | जितेंद्र अंबालाल पटेल (भाजप) |
| ११ | अदिती फुरुसंगे (शिंदे शिवसेना) |
| १२ | सारिका झोरे (शिवसेना ठाकरे) |
| १३ | राणी द्विवेदी (भाजप) |
| १४ | सीमा शिंदे (भाजप) |
| १५ | जिज्ञासा शाह (भाजप) |
| १६ | श्वेता कोरगावकर (भाजप) |
| १७ | डॉ. शिल्पा सांगोरे (भाजप) |
| १८ | संध्या दोशी (शिंदे शिवसेना) |
| १९ | दक्षता कवठणकर (भाजप) |
| २० | दीपक तावडे (भाजप) |
| २१ | लिना पटेल देहेरकर (भाजप) |
| २२ | हिमांशु पारेख (भाजप) |
| २३ | शिवकुमार झा (भाजप) |
| २४ | स्वाती संजय जयस्वाल (भाजप) |
| २५ | निशा परुळेकर-बंगेरा (भाजप) |
| २६ | धर्मेंद्र काळे (शिवसेना ठाकरे) |
| २७ | निलम गुरव (भाजप) |
| २८ | अंजता यादव (कॉंग्रेस) |
| २९ | सचिन पाटील (शिवसेना ठाकरे) |
| ३० | धवल वोरा (भाजप) |
| ३१ | मनीषा यादव (भाजप) |
| ३२ | गीता भंडारी (शिवसेना ठाकरे) |
| ३३ | कमरजहाँ सिद्धिकी (कॉंग्रेस) |
| ३४ | हैदर अली शेख (कॉंग्रेस) |
| ३५ | योगेश वर्मा (भाजप) |
| ३६ | सिद्धार्थ शर्मा (भाजप) |
| ३७ | योगीता कदम (शिवसेना ठाकरे) |
| ३८ | सुरेखा परब (मनसे) |
| ३९ | पुष्पा कळंबे (शिवसेना ठाकरे) |
| ४० | तुळशीराम शिंदे (शिवसेना ठाकरे) |
| ४१ | ॲड. सुहास वाडकर (शिवसेना ठाकरे) |
| ४२ | धनश्री भडरकर (शिंदे शिवसेना) |
| ४३ | अजित रावराणे (रा. शरद पवार) |
| ४४ | संगीता शर्मा (भाजप) |
| ४५ | संजय कांबळे (भाजप) |
| ४६ | योगिता कोळी (भाजप) |
| ४७ | तेजिंदर तिवाना (भाजप) |
| ४८ | रफिक शेख (कॉंग्रेस) |
| ४९ | संगिता कोळी (कॉंग्रेस) |
| ५० | विक्रम राजपूत (भाजप) |
| ५१ | वर्षा टेंबवलकर (शिंदे शिवसेना) |
| ५२ | प्रिती साटम (भाजप) |
| ५३ | जितेंद्र वळवी (शिवसेना ठाकरे) |
| ५४ | अंकित प्रभू (शिवसेना ठाकरे) |
| ५५ | हर्ष पटेल (भाजप) |
| ५६ | लक्ष्मी भाटिया (शिवसेना ठाकरे) |
| ५७ | श्रीकला पिल्ले (भाजप) |
| ५८ | संदीप पटेल (भाजप) |
| ५९ | यशोधर फणसे (शिवसेना ठाकरे) |
| ६० | सायली कुलकर्णी (भाजप) |
| ६१ | दिव्या सिंह (कॉंग्रेस) |
| ६२ | जिशान मुलतानी (शिवसेना ठाकरे) |
| ६३ | रूपेश सावरकर (भाजप) |
| ६४ | सबा खान (शिवसेना ठाकरे) |
| ६५ | विठ्ठल बंदेरी (भाजप) |
| ६६ | मेहर हैदर (कॉंग्रेस) |
| ६७ | दीपक कोतेकर (भाजप) |
| ६८ | रोहन राठोड (भाजप) |
| ६९ | सुधा सिंग (भाजप) |
| ७० | अनिष मकवाणी (भाजप) |
| ७१ | सुनील मेहता (भाजप) |
| ७२ | ममता यादव (भाजप) |
| ७३ | लोना रावत (शिवसेना ठाकरे) |
| ७४ | विद्या आर्या कांगणे (मनसे) |
| ७५ | प्रमोद सावंत (शिवसेना ठाकरे) |
| ७६ | प्रकाश मुसळे (भाजप) |
| ७७ | शिवानी परब (शिवसेना ठाकरे) |
| ७८ | नाजिया सोफी (शिंदे शिवसेना) |
| ७९ | मानसी जुवाटकर (शिवसेना ठाकरे) |
| ८० | दिशा यादव (भाजप) |
| ८१ | केशरबेहन पटेल (भाजप) |
| ८२ | अमीन जगदीश्वरी जगदीश (भाजप) |
| ८३ | सोनाली साबे (शिवसेना ठाकरे) |
| ८४ | अंजली सामंत (भाजप) |
| ८५ | मिलिंद शिंदे (भाजप) |
| ८६ | रितेश कमलेश राय (शिंदे शिवसेना) |
| ८७ | पूजा महाडेश्वर (शिवसेना ठाकरे) |
| ८८ | श्रवरी परब (शिवसेना ठाकरे) |
| ८९ | गीतेश राऊत (शिवसेना ठाकरे) |
| ९० | तुलीप मिरांडा (कॉंग्रेस) |
| ९१ | सगुण नाईक (शिवसेना शिंदे) |
| ९२ | इब्राहम कुरेश (कॉंग्रेस) |
| ९३ | रोहिणी कांबळे (शिवसेना ठाकरे) |
| ९४ | प्रज्ञा भुतकर (शिवसेना ठाकरे) |
| ९५ | हरी शास्त्री (शिवसेना ठाकरे) |
| ९६ | आयेशा खान (रा. अजित पवार) |
| ९७ | हेतल गाला (भाजप) |
| ९८ | अलका केरकर (भाजप) |
| ९९ | चिंतामणी निवाटे (शिवसेना ठाकरे) |
| १०० | स्वप्ना म्हात्रे (भाजप) |
| १०१ | कॅरन डिमेलो (कॉंग्रेस) |
| १०२ | रेहबर खान (कॉंग्रेस) |
| १०३ | हेतल गाला मोरवेकर (भाजप) |
| १०४ | प्रकाश गंगाधरे (भाजप) |
| १०५ | अनिता वैती (भाजप) |
| १०६ | प्रभाकर शिंदे (भाजप) |
| १०७ | नील सोमय्या (भाजप) |
| १०८ | दीपिका घाग (भाजप) |
| १०९ | सुरेश शिंदे (शिवसेना ठाकरे) |
| ११० | आशा कोपरकर (कॉंग्रेस) |
| १११ | दिपक सावंत (शिवसेना ठाकरे) |
| ११२ | साक्षी दळवी (भाजप) |
| ११३ | दिपमाला बढे (शिवसेना ठाकरे) |
| ११४ | राजुल पाटील (शिवसेना ठाकरे) |
| ११५ | ज्योती राजभोज (मनसे) |
| ११६ | जागृती पाटील (भाजप) |
| ११७ | श्वेता पावसकर (शिवसेना ठाकरे) |
| ११८ | सुनीता जाधव (शिवसेना ठाकरे) |
| ११९ | राजेश सोनावळे (शिंदे शिवसेना) |
| १२० | विश्वास शिंदे (शिवसेना ठाकरे) |
| १२१ | **निकाल बाकी** |
| १२२ | **निकाल बाकी** |
| १२३ | सुनील मोरे (शिवसेना ठाकरे) |
| १२४ | शकीना शेख (शिवसेना ठाकरे) |
| १२५ | सुरेश आवळे (शिंदे शिवसेना) |
| १२६ | अर्चना भालेराव (भाजप) |
| १२७ | स्वरूपा पाटील (शिवसेना ठाकरे) |
| १२८ | सई शिर्के (मनसे) |
| १२९ | अश्विनी मते (भाजप) |
| १३० | धर्मेश गिरी (भाजप) |
| १३१ | राखी जाधव (भाजप) |
| १३२ | रितू तावडे (भाजप) |
| १३३ | निर्मिती कानडे (शिंदे शिवसेना) |
| १३४ | मेहजाबीन खान (एमआयएम) |
| १३५ | नवनाथ बन (भाजप) |
| १३६ | जमीर कुरेशी (एमआयएम) |
| १३७ | पटेल समीर रमजान (एमआयएम) |
| १३८ | रोशन शेख (एमआयएम) |
| १३९ | शबाना शेख (एमआयएम) |
| १४० | विजय उबाळे (एमआयएम) |
| १४१ | विठ्ठल लोकरे (शिवसेना ठाकरे) |
| १४२ | अपेक्षा खांडेकर (शिंदे शिवसेना) |
| १४३ | शबाना काझी (एमआयएम) |
| १४४ | दिनेश पांचाळ (भाजप) |
| १४५ | खैरूनिस्सा अकबर हुसेन (एमआयएम) |
| १४६ | समृद्धी काते (शिंदे शिवसेना) |
| १४७ | प्रज्ञा सदाफुले (शिंदे शिवसेना) |
| १४८ | अंजली नाईक (शिंदे शिवसेना) |
| १४९ | सुषम सावंत (भाजप) |
| १५० | वैशाली शेंडकर (कॉंग्रेस) |
| १५१ | कशिश फुलवरिया (भाजप) |
| १५२ | आशा मराठे (भाजप) |
| १५३ | मीनाक्षी पाटणकर (शिवसेना ठाकरे) |
| १५४ | महादेव शिवगण (भाजप) |
| १५५ | स्नेहल शिवकर (शिवसेना ठाकरे) |
| १५६ | अश्विनी माटेकर (शिंदे शिवसेना) |
| १५७ | आशा तायडे (भाजप) |
| १५८ | चित्रा सांगळे (शिवसेना ठाकरे) |
| १५९ | प्रकाश मोरे (भाजप) |
| १६० | किरण लांडगे (शिवसेना ठाकरे) |
| १६१ | विजयेंद्र शिंदे (शिंदे शिवसेना) |
| १६२ | अमिर खान (कॉंग्रेस) |
| १६३ | शैला लांडे (शिंदे शिवसेना) |
| १६४ | हरीष भांदिर्गे (भाजप) |
| १६५ | अशरफ आझमी (कॉंग्रेस) |
| १६६ | मीनल तुर्डे (शिंदे शिवसेना) |
| १६७ | समन आझमी (कॉंग्रेस) |
| १६८ | सइदा खान (कॉंग्रेस) |
| १६९ | प्रविणा मोरजकर (शिवसेना ठाकरे) |
| १७० | बुशरा मलिक (कॉंग्रेस) |
| १७१ | राणी येरुनकर (शिवसेना ठाकरे) |
| १७२ | राजेश्री शिरवडकर (भाजप) |
| १७३ | शिल्पा केळुसकर (भाजप) |
| १७४ | साक्षी कनोजिया (भाजप) |
| १७५ | मानसी सातमकर (शिंदे शिवसेना) |
| १७६ | रेखा यादव (भाजप) |
| १७७ | कल्पेशा कोठारी (भाजप) |
| १७८ | अमेय अरुण घोले (शिंदे शिवसेना) |
| १७९ | दिपाली खेडेकर (शिवसेना ठाकरे) |
| १८० | तृष्णा विश्वासराव (शिंदे शिवसेना) |
| १८१ | अनिल कदम (शिवसेना ठाकरे) |
| १८२ | मिलिंद वैद्य (शिवसेना ठाकरे) |
| १८३ | आशा काळे (कॉंग्रेस) |
| १८४ | सजिदाबी खान (कॉंग्रेस) |
| १८५ | टी एम जगदीश (शिवसेना ठाकरे) |
| १८६ | अर्चना शिंदे (शिवसेना ठाकरे) |
| १८७ | जोसेफ कोळी (शिवसेना ठाकरे) |
| १८८ | भास्कर शेट्टी (शिंदे शिवसेना) |
| १८९ | हर्षला मोरे (शिवसेना ठाकरे) |
| १९० | शीतल गंभीर (भाजप) |
| १९१ | विशाखा राऊत (शिवसेना ठाकरे) |
| १९२ | यशवंत किल्लेदार (मनसे) |
| १९३ | हेमांगी वरळीकर (शिवसेना ठाकरे) |
| १९४ | निशिकांत शिंदे (शिवसेना ठाकरे) |
| १९५ | विजय भणगे (शिवसेना ठाकरे) |
| १९६ | पद्मजा चेंबुरकर (शिवसेना ठाकरे) |
| १९७ | वनिता नरवणकर (शिंदे शिवसेना) |
| १९८ | आबोली खाड्ये (शिवसेना ठाकरे) |
| १९९ | किशोरी पेडणेकर (शिवसेना ठाकरे) |
| २०० | उर्मिला पांचाळ (शिवसेना ठाकरे) |
| २०१ | इरम सिद्दीकी (सपा) |
| २०२ | श्रद्धा जाधव (शिवसेना ठाकरे) |
| २०३ | भारती पेडणेकर (शिवसेना ठाकरे) |
| २०४ | किरण तावडे (शिवसेना ठाकरे) |
| २०५ | सुप्रिया दळवी (मनसे) |
| २०६ | सचिन पडवळ (शिवसेना ठाकरे) |
| २०७ | रोहिदास लोखंडे (भाजप) |
| २०८ | रमाकांत रहाटे (शिवसेना ठाकरे) |
| २०९ | यामिनी जाधव (शिवसेना शिंदे) |
| २१० | सोनम जामसूतकार (शिवसेना ठाकरे) |
| २११ | **निकाल बाकी** |
| २१२ | अब्रहाणी अमरीन शेहजाद (सपा) |
| २१३ | नसीमा जुनेजा (कॉंग्रेस) |
| २१४ | अजय पाटील (भाजप) |
| २१५ | संतोष ढाले (भाजप) |
| २१६ | राजश्री भाटणकर (कॉंग्रेस) |
| २१७ | गौरंग झवेरी (भाजप) |
| २१८ | **निकाल बाकी** |
| २१९ | **निकाल बाकी** |
| २२० | **निकाल बाकी** |
| २२१ | आकाश पुरोहित (भाजप) |
| २२२ | रिटा मकवाना (भाजप) |
| २२३ | ज्ञानराज निकम (कॉंग्रेस) |
| २२४ | पारक अमीन (कॉंग्रेस) |
| २२५ | हर्षिता नार्वेकर (भाजप) |
| २२६ | मकरंद नार्वेकर (भाजप) |
| २२७ | गौरवी नार्वेकर (भाजप) |



## एमएनएस का सफाया

इस चुनाव में राज ठाकरे की महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (एमएनएस) पार्टी 22 शहरों में शून्य पर सिमट गई है। मुंबई में एमएनएस के लिए दो अंकों तक पहुंचना भी मुश्किल है। मुंबई ही नहीं, बल्कि मुंबई के बाहर के अन्य शहरों में भी एमएनएस को करारी हार का सामना करना पड़ा है। 22 शहरों में एमएनएस का खाता तक न खोल पाना राज ठाकरे के लिए एक बड़ा झटका माना जा रहा है। एमएनएस ने सभी 29 शहरों की सभी सीटों पर उम्मीदवार नहीं उतारे थे और कुछ चुनिंदा सीटों पर ही ध्यान केंद्रित किया था। मुंबई में, एमएनएस ने उद्धव ठाकरे की शिवसेना (यूबीटी) के साथ गठबंधन में चुनाव लड़ा था। एमएनएस ने लगभग 20 से 30 सीटों पर पूरी ताकत से चुनाव लड़ा था, लेकिन फिलहाल उन्हें केवल 8 सीटें ही मिलती नजर आ रही हैं।

## उलटा पड़ा 'रसमलाई' ताना



बृहन्मुंबई महानगरपालिका (बीएमसी) चुनाव के नतीजों ने भाजपा नेता के. अन्नामलाई के खिलाफ किए गए राजनीतिक कटाक्षों को बेअसर साबित कर दिया है। अन्नामलाई ने जिन उम्मीदवारों के लिए मलाड पश्चिम और अन्य क्षेत्रों में सक्रिय रूप से प्रचार और जनसभाएं की थीं, उन्होंने अपने-अपने वार्ड में शानदार जीत दर्ज की है। परिणामों के अनुसार, वार्ड संख्या 47 से तेजिंदर सिंह तिवाना, वार्ड 35 से योगेश वर्मा और वार्ड 19 से दक्षता कवठणकर विजयी रहे। इन उम्मीदवारों की सफलता ने यह स्पष्ट कर दिया कि अन्नामलाई के प्रचार और स्थानीय मतदाताओं के साथ उनके संवाद का सकारात्मक प्रभाव पड़ा, जिससे विरोधियों की रणनीतियां और आलोचनाएं चुनावी मैदान में विफल रहीं। चुनाव प्रचार के दौरान एमएनएस (MNS) प्रमुख राज ठाकरे ने अन्नामलाई के उस बयान पर तीखा प्रहार किया था, जिसमें उन्होंने मुंबई को केवल महाराष्ट्र का नहीं बल्कि एक ₹अंतरराष्ट्रीय शहर₹ बताया था। ठाकरे ने अन्नामलाई का मजाक उड़ाते हुए उन्हें 'रसमलाई' कहकर संबोधित किया था, जिससे राजनीतिक गलियारों में काफी विवाद हुआ था। हालांकि, चुनाव परिणामों ने इस उपहास को एमएनएस के लिए ही उलटा साबित कर दिया। सोशल मीडिया पर निशाना बनाए जाने और तीखी बयानबाजी के बावजूद, संबंधित वार्डों के मतदाताओं ने भाजपा के पक्ष में जनादेश दिया।

## ठाकरे बंधुओं के लिए घातक साबित हुआ कांग्रेस-वीबीए गठबंधन

मुंबई नगर निगम चुनाव में कांग्रेस और प्रकाश अंबेडकर की 'वंचित बहुजन अघाड़ी' के गठबंधन ने चुनावी समीकरणों को पूरी तरह बदल दिया। इस नए गठबंधन, जिसे 'मुंबई विकास अघाड़ी' का नाम दिया गया, ने मुख्य रूप से मुस्लिम और दलित बहुल क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। हालांकि, इस गठबंधन की मजबूती उबाथा (ठाकरे समूह) और मनसे (MNS) के लिए नुकसानदेह साबित हुई। जिस कांग्रेस के समर्थन के लिए ठाकरे समूह ने भाजपा से नाता तोड़ा था, उसी के अलग चुनाव लड़ने और वोट काटने के कारण उबाथा समूह को कई महत्वपूर्ण सीटें गंवानी पड़ीं। वोटों के इस बिखराव ने प्रत्यक्ष रूप से भाजपा और शिंदे समूह की राह आसान कर दी। विभिन्न वार्डों के आंकड़े स्पष्ट करते हैं कि कांग्रेस उम्मीदवारों को मिले वोट जीत-हार का निर्णायक अंतर साबित हुए। उदाहरण के लिए, वार्ड संख्या 52, 126 और 174 में भाजपा की जीत का मुख्य कारण कांग्रेस उम्मीदवारों द्वारा उबाथा समूह के वोट बैंक में सेंध लगाना रहा। वहीं, वार्ड संख्या 20, 23 और 166 में मनसे को हार का सामना करना पड़ा क्योंकि कांग्रेस प्रत्याशियों ने उन वोटों को विभाजित कर दिया जो भाजपा विरोधी खेमे में जा सकते थे। इन वार्डों में भाजपा और शिंदे गुट के उम्मीदवारों ने बहुत कम अंतर से जीत हासिल की, क्योंकि विपक्षी वोट कांग्रेस, मनसे और उबाथा के बीच बंट गए, जिससे कुल 7 सीटों पर उबाथा और मनसे के समीकरण बिगड़ गए।

## महायुति की जीत की 5 बड़ी वजहें

### पीएम मोदी पर जनता का भरोसा

■ पिछले एक दशक से भी ज्यादा समय से भाजपा पीएम मोदी के नेतृत्व में विभिन्न चुनावों में जीत दर्ज करती आई है। लोकसभा में लगातार तीन बार से सत्ता में आ रही भाजपा पिछले साल हुए महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में भी बंपर सीटों से जीती। एक दशक में विपक्ष को भाजपा ने बुरी तरह से उन राज्यों में भी पराजित किया है, जहां कुछ दशक पहले कोई सोच नहीं सकता था। मुंबई में मिली इस जीत के पीछे भी पीएम मोदी का बहुत बड़ा योगदान है। जीत के बाद देवेंद्र फडणवीस ने भी इसका जिक्र किया और कहा कि पीएम मोदी के नेतृत्व में विकास के विजन के साथ भाजपा ने चुनाव लड़ा और जीत मिली। फिलहाल, विपक्ष के पास पीएम मोदी का तोड़ ढूंढ पाना बहुत मुश्किल दिखाई दे रहा है।

### शिवसेना में टूट

■ साल 2019 में शिवसेना और भाजपा की राह तब अलग हो गई, जब विधानसभा चुनाव के बाद शिवसेना ने ढाई साल के लिए सीएम पद की मांग कर दी। इसके बाद, शिवसेना, एनसीपी और कांग्रेस ने साथ मिलकर सरकार बनाई और उद्धव ठाकरे मुख्यमंत्री बने। हालांकि, 2022 में शिवसेना टूट गई और एकनाथ शिंदे कई विधायकों और सांसदों को अपने साथ ले गए। भाजपा ने शिंदे को सीएम बना दिया। बाद में शिंदे की पार्टी को शिवसेना नाम से जाना गया और उद्धव ठाकरे को शिवसेना यूबीटी। इसके बाद से उद्धव ठाकरे की ताकत लगातार कमजोर होती चली गई। इस बीएमसी चुनाव में भी एकनाथ शिंदे की शिवसेना ने 28 वार्ड्स में जीत हासिल की और उद्धव ठाकरे की शिवसेना यूबीटी के वोट काटे, जिसका सीधा लाभ भाजपा के नेतृत्व वाले महायुति को मिला।

### उद्धव के खिलाफ एंटी इनकमबेंसी का भाजपा को फायदा

■ देश के सबसे अमीर नगर निगम बीएमसी पर पिछले लगभग तीन दशकों से ठाकरे परिवार का कब्जा रहा है। पहली बार भाजपा को जीत मिली है। शिवसेना (अविभाजित) को पिछले बार तक भाजपा से ज्यादा वार्ड पर जीत मिली, जिससे उसका लंबे समय तक मेयर रहा। लंबे समय तक राज करने की वजह से शिवसेना यूबीटी के खिलाफ एक एंटी इनकमबेंसी भी बनी और जिसका फायदा सीधे तौर पर भाजपा को मिला। साथ ही, एकनाथ शिंदे की शिवसेना का साथ होने के कारण भाजपा का पलड़ा भारी रहा।

### मनसे के साथ आने पर उत्तर भारतीय शिवसेना यूबीटी से नाराज?

■ साल 2006 में अलग पार्टी बनाने वाले राज ठाकरे ने बीएमसी चुनाव के लिए उद्धव के साथ गठबंधन किया था। मुंबई में रहने वाले मराठी वोटर्स का मनसे को काफी सपोर्ट मिलता रहा है और इस चुनाव में भी शिवसेना और मनसे के गठबंधन को मराठी मतदाताओं के जमकर वोट पड़े। लेकिन एग्जिट पोल की मानें तो उत्तर भारतीयों का समर्थन भाजपा को ज्यादा मिला। दरअसल, राज ठाकरे की मनसे उत्तर भारतीयों के खिलाफ लंबे समय से हिंसा करती आई है और यही वजह है कि इसका फायदा भाजपा गठबंधन को सीधे तौर पर मिला। मनसे और शिवसेना के गठबंधन ने कुछ खास कमाल नहीं दिखाया और महायुति के सामने हार गया।

### भाजपा ने लगा दी पूरी ताकत, खुद फडणवीस ने संभाली कमान

■ बीएमसी चुनाव में जीत हासिल करने के लिए भाजपा ने पूरी ताकत लगा दी। खुद मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने इसकी कमान संभाली और जमकर प्रचार किया। भाजपा के तमाम महाराष्ट्र के मंत्रियों ने भी चुनाव प्रचार में हिस्सा लिया और जनता का समर्थन हासिल किया। उद्धव और राज ठाकरे ने भी चुनावी रैलियां कीं और भीड़ भी इकट्ठी हुई, लेकिन वोटों में यह तब्दील नहीं हो सकी। शिवसेना यूबीटी और मनसे के मुकाबले भाजपा और शिवसेना का चुनाव प्रचार ज्यादा मजबूत रहा और यही नतीजों में भी दिखाई दिया।